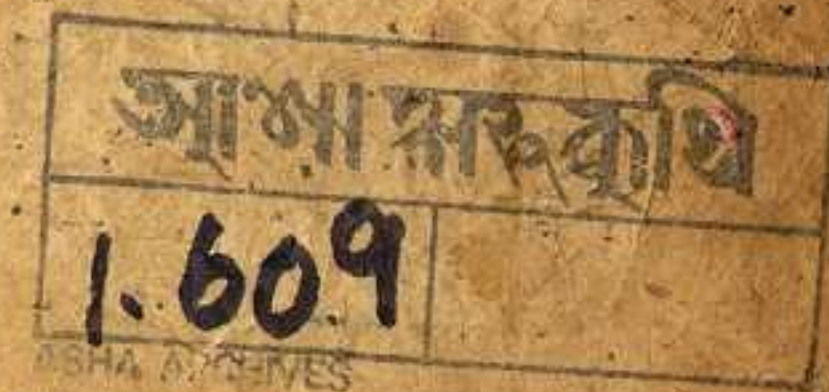


1.609
ARCHIVES





१ मधुनाषधसिद्धिनास

आम्हा सरकारी

1.609

ASHA ARCHIVES

गारुडमन्त्रोपायः यथास्यान्वितुर्वत्। अत्र का लोहिष्ठं जीतः १। कीयतमियतपिवा॥ कवितं कनमकं वादिता न राजयन्त्रघ्न॥ एष कथयिष्यामि वलवान्
 नलसुता॥ उर्वीरुस्यन्तकोलेय कनीताया कथं वत। ननरस्याहिर्नडक माश्रयवास्तुवा यवा॥ यातस्यात्वा इहा वा यथार्थं वषीवमागता। कलनाविधिहर्षे १
 प्रियतामस्यन्तः १। पविपका नदहा च स्त्रहात्सी। लाधनातिवादिवास्तु प्रयवा यव वाया मंगिलालजली॥ काधयवात हा अतिवर्जयतु नल कनी॥ लाधनुदि
 मकास्तु १। उमरु अमनाच क॥ पात्रास्तु पड वीतता न्यनिषकादि सवतात॥ आसफना जगुर्ल कनमा इर्मली षिण १॥ म। ध्वं च उर्ध्वं हा ही उ प्रना लभत उरु नी म
 दोहनलघो यहु प्रचल म म ल म्वा य कना र्ष विजाती यात् कन म यत थोष धी॥ धषय कति वे कस्या द के र्षी पकल कर्ण॥ वातिक १ सुफना उर्ध्व दगना उर्ध्व ये र्क १॥ ए
 श्वी को द्वा दगा हुत कनपा कति यच्छति १॥ य का अति दगा दोषा दहति १ त म हा ह्ययं॥ विषम वा कन र्क र्था दल वा यद म ववा। सुफना जगुर्ल कनी वि स्म न्य न द य मोष धी
 दगना जगुर्ल कनी वि स्म न्य न द य मोष धी॥ दगना जगुर्ल कनी वि स्म न्य न द य मोष धी॥ दगना जगुर्ल कनी वि स्म न्य न द य मोष धी॥ दगना जगुर्ल कनी वि स्म न्य न द य मोष धी॥
 ॥ य १ कषाय कषाय च सुवर्धस्म न्न कन। दोषा वजा कषाय न स्त्रीरुत्वा त न्न कन॥ स्त्रीरुत्वा त न्न कन॥ स्त्रीरुत्वा त न्न कन॥ स्त्रीरुत्वा त न्न कन॥ स्त्रीरुत्वा त न्न कन॥

३

पायय द्वा ष ह न ली मा हा दाम क नै उ य १। य सु र्फ क ष सु फ लु क ना। प्रलय नाम धत॥ पीतामस्तु धित १। की ला १ जी र्धु क १। पि पा सित १॥ तपि वदोष पाय १। सी ला धन
 म १ य नी। तपि वदोष धी ज तु १। सी ला धन म १ य नी॥ ना। गला धन सा। ध्वं य विद्या दोष व र्जित। तस्य मी क हि ष क र्क र्था द्वा ष य चाव नै म १। वल दोष म दो का १। ल क ता उ
 वल म ल अ प्राम व र्धन स्या पि। ला धन ही त दा प य न॥ धिव लानि १ सता मा धन द ग क य धि का॥ य ली द्वा द ल व र्ध स्या त् प क स न्विती॥ उरु म स्य य ली मा ज डि रि
 थो के थ म ध म। ज द त स्य प ला धन स्त्र हा का थो ष धे र्ध व॥ का थ द य प ल वा नि। वि न र्गु ल मि श्र त। व उ र्ग मि वा ल र्गु ल य र्ध य ल व उ र्ध य॥ दी कान ल म हा का र्थ पा
 य य र्ध ज ली ज ली॥ अ न्य त्व र्ध ये नि य प्र सु त लु वि कि त्वा का १॥ का थ या ग म ति उ क स्त्र र हा गा व स थिती। यानी य र्था प द लो त व र्ध व य १ य ल व र्ध य॥ पाय य द्वा उ र्ध म म
 पाव तै स क म दि न॥ स म नै ता ध वा द्वा नि नाम क म्म पा व न॥ ता ग र्ध व का र्ध व ध्या न्या र्क व र्ध नी द र्ध य। आ द या त्या च र्क र्क क वि ती य क ना प ह॥ सर्व क न ष॥
 वी र्था पि क र्क व ति र्ध ज म न्न ही न ह न्या ह दाम य म स न्न य मा। उ र्ध वा त द ल व र्ध व ति ता म द वा ध पी ला। ला नि य र्था स म्प या ति व ल क य थ॥ अ न्न ला मा ति ल १ स
 र्वा क र्क र्क स म त स्म ता। ल व ल पि डि थो ज न। उ र्ध्व जी। ध्वं य वा क ति १। क मी दा हा स द नै उ म म्म र्गि नी र्ज। अ न ति र्ध ल हा ति थ सा व म्म धी ष धा क ति १। उ र्ध ध

पुटिकाताधरसर्वसः। प्रवसुभाबलहृदयः। पातव्यधुवद्वै॥ साजायातास्यवहता। नोषमनिवलस्ययः। ब्राधियं वंकोष्ठवा वीरुमाधियाजयत॥ सीसुदा
 धषाहर्तस्यसमधयपावती॥ डिहलाभात्मलीवास्ता। नाऊवकाठनृषके॥ सतमसुहनेरुपु। वातपिहाहर्वकनी॥ निम्नामतावकृतिम्ब॥ पंथमलीसंमन्विह॥
 कतः कषायाहृत्वाउ। वातपिहाहर्वकनी॥ ॥ किनाततिकुमसता। जकामामलकीनटी॥ निःकाश्यापिहातिलज्जत्काथं सुउठपिदत॥ निदिग्विकावलाभासा। जय
 मातामतायते॥ मसुनविदने॥ का। था। वातपिहकनंजयत॥ उरुवीपपट्टमूर्क। किनातविधहेषज। वातपिहकनययं। पंथरुडमिदीउह॥ **पंथरुड॥** ॥ किनात
 नागनंरुसु। उरुवीधरकसाधिका। पा। ०। दी। चाम। जाले। सुसेहपेहाधिकंदिवा॥ **वाउरुडकपा० मयमकी॥** ॥ कणकाश्यामताहणी। नागनययवासकी। रुतिमव
 दनंमूर्क। पणलंकरुवाहिणी॥ कषायपाययदत। तिहलेषकनायह॥ दाहहृत्वाविष्कुर्दि। कासहृत्वाधेगुलनृत्॥ उरुवीतिमधात्याकं। पमकं वनतातिव। उषःसर्व
 कनाहकि। उरुवादिमुदीयत॥ **प्रमदीयताउरुवादि॥** ॥ हृत्वासानावककुर्दि। पिपासादाहतागनी॥ **उरुवादि॥** पणलवन्तनंमूर्क। पा०। तिका। मतागल॥ पिहले
 अकनकुर्दि। दाहकधुविषयह॥ सपययवासाया। नसुकोडहितायता॥ करुपिहकनंरुकि। साम्पिहसकामती॥ गकंनमकमाजाया॥ कदकामसुवायता।
 पणला॥ मयययवासासकसुनसपला॥ मयमसा॥ साकनमं॥ करुपिहाधिक॥

धतिमसता १३ पणल यमसा १३ पाती यननाव ३४। गषाध्याताला ८ प्रकपययमवकानताला १ काथा २ अर्थणाधनार्थययय १॥ २

पीलाकनंजयऊतुकरुपिहसमहव॥ किनप्रपावनेरुदि। सुतं धान्यपणलया॥ पणलपिधमदधु। डिहलामधुर्कवला। साधितायकषाय॥ स्या। तिहले
 अकनाहर्त॥ दीपनंकरुविष्कुर्दि। पिहवातानलामनी॥ कनप्रपावनेरुदि। सुतं धान्यपणलया॥ ॥ कर्णनरुसुपठस्ति। कजिकसिकाहिवालंकोषध॥ स
 मयतिवातकरु। मयमसकगुलंगहृत्वादीन॥ **वाउरुडकपा० मयमकी॥** ॥ आतसांश्राद्वंकरुत्वा। नीत्वायावकमानयं। रुत्वावातकरुसुमूर्क। खदाहनमपाहति॥ माउल
 मरुलकंननाहृत्वा॥ सिन्धुजन्ममनिवाचितामूर्क। हतिवातकरुनागमास्यजं। गषमाउठतामनावकी॥ पिपलीपिपलीमूर्क। वयविषकतागनी॥ दीपनीय
 सतावर्ग॥ करुतिलगदायहा॥ **पंथकालक॥** ॥ आनवर्धयन्तिकमसुतिक। हनीतकीहि॥ कथितासकषाय॥ सामसुल्लेकरुवातमूर्क। कनहितादीप
 नपावतय॥ पिपलीदि॥ सुतं गार्थमूलहिस्यनिदीयती॥ वातलेषाविकानध्वं। स्त्रीहकनवितागनी॥ मरुययहृत्वा॥ स्या॥ उरुवीविषजंजली॥ करुवातानविष्कुर्दि
 दाहल्लेषकनायह॥ कडामतातागनयकनाकये॥ कतः कषाय॥ करुमानाहर्त॥ सस्यासकागानविषाग्वंरुहं। कनविषाधयहवपिगस्यत॥ **रुवादि॥** ॥
 दलमूलीनस॥ पंथय॥ कलथककरुतिल। अतिपाकशनिनिजाया। पार्थवकुसासकासक॥ ॥ **प्लेअतिग्रहमंवादी**। कथ्याद्या। पोडिषाधज। निनरु। प्लेअतिग्रह
 मधुकाकनिरुकणनीसेधवमजिवाचिदमस्वधुवो ३

श्रीकलवणविक्रमहंसकवलयहंशार्धकल्पसंगनाथतेन्यवमसारसममिलितविक्रममसा ५५५ हिमखपविश्यापुष्पायथावर्तकाय ॥ ४

हन् आत ४ सु घाटि कंषुवा लाघवं जायत सय सु श्रु वेवापनाम्यते ॥ इगं सुसि यथा मज्जं हाज नं तत्र यावद्वध ॥ १ ॥ नीयात्स तनं पार्क तथा हि न्यासधीति ॥ निजाय
तमे हि न्यासं कीर्ण विद्याद्वतो सी लीघतं बालकासु न स्यति शीवत कथा ॥ अवलं हाजर त एव पा कथया र्थ विदा प्रज ॥ पिना र्थं च नार्थं वा नाना वमथापि वा
लीघतं सन्निपातं कुर्यादा ना मदर्शनात् ॥ पाषाणामवमाणा कि लीघतया सहिष्णुता त उपाय कथय कश्चि त्स हन् लीघतादिकं ॥ कश्चि ह उ वधातो सु हति लं घतं म ह
त् ॥ आम कया दृष्ट मयि चाय न सहित कर्णे ॥ अंज कस्य वसाधतं से त्वर्व क उ कथय ॥ आकण्ठ धान यथा स्य ति शी व च्च पुन ४ पुन ४ ॥ त ता स्य ह दया कुम्भा म न्या या र्थे नि
ना गलात् ॥ लीता या कथ्यत सु आ लाघवं वा स्य जायत ॥ य व र्हा कना म्भु ति डा का न गला मया ॥ मस्वार कि नो न वं जाय म्भु र्गो णा प्रणा म्यते ॥ सका द्धि वि
व उ ४ कथा दृष्टा भाष वला वलं ॥ एत छि य न मं पा क र्हि ष जं सान्निपातितां ॥ कवल य ह ॥ ॥ मा उ र्त्त गाय क न मं का र्थं छि ल वेला न्वितं ॥ अन्य द्या सिद्धि विहितं
न स्य ती क्ति यथा जयत ॥ त त परि यत एत आ परि नी प वि सिं यत ॥ सि ना ह द य कणा स्य पार्श्वे न का यणी म्यते ॥ मधु के सा न रिं ध नु व वी ष ल कणा ४ स मा ४ ॥ एत क
पिष्ठा म्भु सान स्य कुर्यात्सी द्वा धतं ॥ मधु के सा नादि न स्य दानी ॥ ॥ सि नी ष वी ज णा म्भु क प्राम वि च से त्व वे ४ अंज तं स्या दय वा धाय स न सा ना नि ला व वे ध हि
अहि ४ स म हा ग मि लि तं का य दि र्हे न स्य क न ली र्थं ॥ १

[illegible]

कीधर्जकोमजवापि, (मकउहयजकन) आस्त्रासूरलाहाययकाय्य॥

रुतजवन्धवेगताउतादिकैतविद्यासमृद्धिकार्य॥

अथविद्यकीमसा॥ जलताला॥ ३४ (ममताला॥ ३५) कपनीयिपली रुतमसा॥ ३६

नवाहर्षलेषसमयाति, कामलोकरुयकना॥ रुतविद्यासमृद्धिरे, वन्धवसनताउने॥ जयरुताहिर्ष (गल्लं मत॥ ३७) न्नेषमातसी॥ तदि (मिकाताग नकांनो) काथ
मिर्वलिप्रितपिपलीकी॥ जीर्णकनावाचककाणल्ल, खासागिर्मयादिहयीतसम्॥ हंरुर्गमतयेपायः सायकनापयुधत॥ **निदिधिकादि॥** ॥ कामजीर्णरविस्वाम
हत्यापुकिमिनागन॥ जीर्णकनमिदिधिसमयात॥ उडपिपली॥ पिपलीरुर्णस्यकां काथहिनीहवाइव॥ जीर्णकनकरुर्षसी, पंचमूलीकताभवा॥ निनागेनव
पुलप्रमिन्द्रियप्रोतवाधत॥ जीर्णकनरुचिकर्णदयाकीर्षविनचत॥ सततविषमवापि, कीलस्यसुविनाक्ति॥ कनसहाउते॥ पाथी, कनये॥ समयावनत॥ तत्तृतीय
कनामूल, बालमूलकमर्थान्॥ पथलममताप, साकार्थमार्विपयिका॥ मात्सार्थसतलावाभीतू, दयाइकाविचक॥ ३८॥ कनकीलस्यनहिर्, वमतयुविनचत॥ काम
नुपयसातस्य, तिमिहैवहिनमलात॥ अनाचकगायसाधवेव, ममलादिष॥ साककनापिसाध॥ स्यादनुवन्धहयान्नन॥ जीर्णकनकरुकी, लकीरस्यापमतापमी
तदवतनू, (पथी) विषवक्तिमानवी॥ कामात्सासागिन॥ लला, त्पार्थल्लास्यपीतसान॥ मचतकनित॥ पीला, पंचमूलीसुतपय॥ रुकलकबलावा, धी, उडतागसा
धित॥ वन्धमउविवन्धप्र, (गोथकनह) ३९ पय॥ अद्यादरुर्णकीन, कीनाहायचउर्ण॥ कीनाव (मम) कर्ह्य॥ कीनपाकैत्यमिधि॥ पंचमूलासुतकी, रचउर्णजल

आमलयकानर

नवा॥ सिसवागुकाहिर्षा, धावाध्रवाकनापही॥ कलानां कनमृकाता, मिथ्याहानविहायिणी॥ ममस्वल्पापिसमका, दहिताश्रितिलानत॥ सततामृककाथाय, वउथान्
पलपकात्, करुस्ततैविहायनयथासर्वीकनातिह॥ महांनाजाहल्ल्यापि, नाजात्तुतात्तुतैपययत॥ ततश्चामागयथाय, नाषक्याहूनत॥ समीवातकली
यस्यहीनविहस्य, नहिर्षाया, नाजीकनरुस्यदिवाहीनकरुस्यच॥ पलपकसैविषम॥ अम॥ कीलाम (गोमिणी)॥ कलि॥ का॥ पथलस्य, पथकदकनाहिनी॥ पथल
सानुनामरुमाधक, कनाहिनी॥ तिमिपथल, विहला, मदीकामरुवत्सकी॥ किनातिकममता, वेन्दनीविषहृषजी॥ उड्यामलकीमरु, मर्धल्लकसमापता॥ कषा
या॥ समयैय, पुपयैवविषकनी॥ अजाजीउठस्य, कविषमकनतागनी॥ अग्निसादजयत्समाक, वातनागश्चानलित॥ उडयगमरुहल्ल्या, विषकावि
षमार्दि॥ उडवीमरुपाथी, कषायम्यासमाकिनी॥ मरुमलकउडवी, विन्धीषधकण, कात्रिकाकोथ॥ पीतमकला, कर्णसमधुर्विषमकनी॥ अत॥ पा॥
क॥ ससायैवीनसातमपयाजयत॥ पिपलीवर्धमानवा, विवतकीननसागत॥ दितमृकनुविश्रम्य, प्रयेतिसहतीयक॥ दितद्वयउविश्रम्य, प्रयेतिसवउर्थक
॥ कर्मसाधनली, उकात्तृतीयचउर्थकी॥ अतलोपतिकर्ह्यो, विनेषाकविकित्तिके॥ महांवधामतामरु, चदतालीनधाम्यके॥ काथतृतीयकरुक्ति, नकनाम

ध्याजितः॥ अथ मार्गजटा कथा लाहिते॥ सुफलं तु हि शक्यं वा न वस्तु न ह न हति ह न य क॥ अक हस्तो ह न य न रुमा व स व ह्नि त ना ध ह प य स फ य क
 न या त सु र्प ल का र्थ ॥ **न र्प ल म नु ॥** ॥ गंगा या उ ह न कूल अ य व का प स ॥ सु त ॥ त स्म ति लो क न द्या न्म व र्थ का हि का क न ॥ वा सा धा धी क्षि त्वा दान् य थ ॥ ता ग म सा
 धि तं ॥ सि ता म ध य त ॥ का थ य ॥ उ र्थ क ति वा न र्ण ॥ अ ग ति य उ च न स त न र्म ॥ हि त स्मि वा उ र्थ क म य वी र्थ ॥ न सा त क ल्क ति ल त ल मि र्थ ॥ या ग्ना ति ति र्थ वि ष म क ना ह
 ॥ वि म च त सा य वि न क थ ल वा ता म र्थ द्या धि सु धा न न र्थ ॥ य र्ण क षा ति त्व प र्थ व वा क र्ण ह नी त की ॥ स र्प य ॥ स य वा ॥ स र्पि ॥ दू प त क न ता ल त ॥ **अ सा ध य ॥**
 ॥ क रु स्त त सु वा ति ष त् न वा धि वि व उ र्थ वा वि य र्थ या र्था न क र्ण वि ष मा त्क क्क सा ध ता त ॥ वै ठा ल सा स क थ य ॥ व य मा न स ध य त ॥ सा म या न च र्ण व स मा त
 ग ल मी ष्व र्ण ॥ मू ज य न्य य त ॥ गी र्थ म च त वि ष म क ना त ॥ वि ष स ह स म्म र्धा त व ना च न प ति वि ड ॥ सु व त्ना म स ह अ ल क ना न्म र्धा त व या ह ति ॥ मू ली रु मि ड र्थ या य स
 ह द वा रु व र्ण था ॥ त डू ली य क म ल सा व क म र्ध क ना य ह ॥ वि ष म क न ष क र्ण र्थ म र्ध आ ध य ॥ ग म ध र्ण ॥ ग ति न य डि व क्क पि सु की र्ण वि ष म क र्ण ॥ म ध ना वा रु या ली र्ण
 ह र्ण वि ष म क र्ण ॥ क न व ग न्ध का ल य वि क य त् क र्ण ह य ॥ त स्म उ न र्ण ले वा पि वि ष ये न्ना ग य त्म ति ॥ च र्ण द्वा द न ना र्ण ड र्थ की ल क रु क न ॥ पि प ल य न्ध न
 श्री मा न य ॥

५
 ५
 ५

४ यथ कं यल ५ तोला ४ ना ती ५ या ती य प ल १२ का ११ ल १२४ ग य च त य ल ३२ क ल्क य ल क १५ ॥

मू ल मू ली न क र्ण ह ति ॥ क लि र्ण का सा म ल की सा वि वा ति वि ष स्मि ना ॥ वा का म ल क वि ल्वा ति ज्ञा य मा ना ति मि ष्वि का ॥ सि ष म ते र्थ त स या क र्ण जी र्ण व या ह ति ॥ क र्ण का
 नी लि न ॥ मू ली पा र्ण म ल म नी च क ॥ अ र्ण हि ता य म ति ष्व वि ष म र्ण ति य क्ति ॥ **पि प ल्या र्ण र्ण ॥** ॥ क ल्का च उ र्ण म ह ॥ स हा का थ य उ र्ण ॥ का थ य उ र्ण
 वा नि का थ ॥ का थ स मा म त ॥ म प य उ र्ण द य त क ति ना क उ र्ण त था ॥ क थि ना त क र्ण य च द र्थ वा उ र्ण क ज ली ॥ म द्या दि का थ र्ण घा त मा ना त्क र्ण वि क ति स का ॥ म
 ध मा रु य गा मि ला दि र्ण य क उ र्ण ज ली ॥ ^{उ र्ण क र्ण} द न मू ली न स र्पि ॥ स की न र्ण व का ल के ॥ स का र्ण ह ति त लि र्ण क र्ण का सा नि र्म द ता ॥ वा त यि र्ण क र्ण वा धी न ली हा त र्ण
 पि या र्ण ॥ **द न मू ला य य ल क र्ण ॥** ॥ च त ह ल उ र्ण र्ण ॥ अ का हा ने व सा ध य त ॥ उ र्ण ता र्ण य क र्ण वि ल्वा ति वि ष म क र्ण ॥ **प र्ण व का ले ॥** स मि न्द्र क ॥ प लि
 के ॥ य म सा स मा र्पि य क र्ण ह ति र्ण वि ष म क र्ण उ ल न र्ण ॥ **व य ल क र्ण ॥** ॥ वि सा ला डि रु ला का की म व द्या र्ण ल वा ल क ॥ क्षि ना त र्ण ह नि उ र्ण सा नि व ध पि र्ण उ का
 ॥ नी ला त्प ले ला म डि क र्ण ती दा डि म क र्ण ॥ वि डि ग य र्ण य र्ण क र्ण व द न य र्ण को ॥ ७८ ॥ ता ली स य र्ण व ह ती मा ल या ॥ क र्ण म र्ण व ॥ अ ने व क र्ण म र्ण क र्ण वि ल्वा ति वा हि
 न व व ॥ उ र्ण क र्ण द य त च त य क र्ण वि ष म क र्ण ॥ अ प स्मा न क र्ण का स सा व म र्ण त ल क य ॥ वा त न क र्ण ति स्या र्ण ती य क व उ र्थ का क र्ण म र्ण क र्ण व वि ष प
 पा ती य प ल १२४ च हि १४ या क ४ क र्ण १० ग य च त य ल ३२ ॥

यला इ य ल ३२ च हि १४ या क ४

यथ की तोला २

प्रथमकृत गोदा मन्त्रार्चनातीर्थलयाल ३२१ च ३३५ ल १४४ पानीयमल ४६५ हि ४ पा ४३२

अथ ब्रह्म कण्ठपाञ्चमयास्वादविषमहगवेषच॥ हृताय हतचित्तातां गुरुदामाभवतसां॥ लक्ष्मीं जीववध्वानां प्रणमाय वलपदं॥ अल्लभ्याय लला
घ्नैस्सर्वग्रहतिवानर्ण॥ कल्याणकमिदं सपिण्डं॥ त्रिर्षयस्सर्वतं ब्रह्म॥ तालीक कल्याणकं धृतं॥ ॥ सर्वजितातागवकृष्टसुत्रालाकातिगां लाहृतं यद्विकीर्तिशतलोक
नमस्तुते कसिध, मस्य ज्ञानाच्चितविदारुतस्यात्॥ यध्वससात्रकस्याजतर्ककद्वयमिच्छत॥ यध्वनन्दली॥ ॥ स्तुहकल्यायवाकुल्यावर्हितावर्हिबहुवत॥ वक्रोक्ति
चनोतावे सुनायाकचिन्तिदि॥ गत॥ गतद्वयनमेघाफ, रुतस्यायनमेतथा॥ गन्धवर्षनसादीतां सीपहोसिद्धिमादि॥ गत॥ घृततेलविपकस्य जातीयत्वे गता रुष
क॥ रुतातिमर्षते लस्य॥ गत॥ घृतवेदादि॥ गत॥ यन्मतायै हिते॥ गताधिकानकीर्ति॥ तथातानायते तेलजीर्णकनेवितागती॥ महालयप्रपगतक्रममोहता
प॥ पाकोमखकत्रलोहवमग्रथर्त्त॥ स्वदकवेधकतियागिमतीत्तस्त्रिष्या कण्ठस्थमूर्धिविगतकवलकलाति॥ व्यायामवद्यवायवस्नानवक्रमलातिवा॥ कनमूको
नसर्वतयावन्नीवलवान् रुवत॥ ॥ गति कनचिकित्सा॥ ॥ ॥ यथुकुतिदातेन कनातीसावतिर्ष्य॥ ॥ कर्तुं व्याहृषजावाज, तत्कमलविधिर्यत॥ कनातीसावयान
कैरेषजयत्यथकथक॥ नतमिलितयाकार्यमन्यान्यवर्धतयत॥ अतस्तेषातिकर्तुं विनोषादितरेषु॥ लपनमरुयात्रकमिलितकार्यविनोषसुदत्त॥ इत्य

[illegible]

पिवेत्पुल्लगायत कनातीसानतासनी॥उत्पलादि॥॥उगीनवालकीमरुविल्वधान्याकमवव।समंतधातकीलाधुविश्वपाचतदीपनी॥हृद्यनायकपिचुपि
खिवर्तसातिवदती।सालातिमतीसावैसकनैवाधविहनी॥उगीनादि॥॥दलमूलीकसायलविश्वमरुसमपिवत।हृनवेवातिसाववसुसो।धुपहलीगद
॥॥कनातीसानयिकिसा॥२॥॥लघतमेकमुक्ताताव्यदलीहृषजमलित॥समदीर्घाषवये॥समयतितत्योचयत्यपिच॥धान्यादीचसतनीयहृषा
नाहातिसानिला।जीववर्णनैवास्यामसुयपाठकेतवा॥मसुदीचसुततायैदयवापिपयामवे।सालयधुदिकोयेसुसावितनसहिधुज॥मसुनऊतयूषल
पधु॥स्यासाजगहृषि॥४॥बोपिछीरवनायथलघीमेवविषययात।कुताश्रुजीयतमइलादवलहिका॥लाजामउ॥कतायागे॥४॥कताहृममलुका।
कमुप्रीमवागुर्वा।पनर्मइहृकक॥सुतिषनकवारुर्ककधरटीहृतमचत॥गाकमान्सहलेयकाविलयावसइऊन॥गालयन्नीदृषपन्नीवहतीकैटकाविका
॥वलाकुडखाविल्यातिपाअतागनधन्यकी।वतदाहृवर्मयागे।हृतसवतिसानिला॥वहस्यानपन्नीदिशाहृव॥॥गालयन्नीवलाविल्व॥४॥पथकपन्नीवसाधिता
॥दाहिमान्नाहिताययापिहृल्लभातिसानिला॥सालयधुदिक॥॥धान्यापेवकसीसिद्धाधान्यविश्वकताधवा।आहृनाहिषजायायवातल्लभातिसानिला॥लघता

पंचमूलत वातपितृवृणस्यत ॥ आसयकाप्रमं हिला ताति सान क्रियायत ॥ अतः सर्वाति सानासु क्रियाय कामलकले ॥ मऊरामा ३२ त्वात विट् प कं उल्लवत
जल ॥ विताति द्यसं घातं ॥ जेत्य ॥ प्रभापद्रुषणत ॥ सकृद्गतिं साठाय विहं हारिषसं किन ॥ विपनीतति नामनु केरुत्यकान्नमऊति ॥ नामसेधहंदि यात अती
सानकर्थवत ॥ अकालमं गृहीता हि विकारी कूरते वरुत ॥ कीलधाउवलाहस्य वरुदायाति निश्चत ॥ आमापिर्मं रुतीयः स्यात्वा वतात्मनर्हवत ॥ साकं साकं विवेकमा
संश्लयाति सार्थत ॥ अरुयापि पलीकले ॥ सुरवाधे मेवि न चयत ॥ हनिडादि संवादि स्वापिव दामभृवदि माते ॥ मूत्रमूषय वागृषु पिप्यात्यादि धरया जयत ॥ धान्यता
गनमसुधकालकविलभेवच ॥ आसगलविवधर्षया चतव क्रिमीपत ॥ धान्यपंचक ॥ ॥ पेरु धान्य दउ कं उ पुणीत्यागवदति ॥ पकं रसकदती साना अहलीमा
गमाघना ॥ प्रवहंत यदाकार्यः क्रियः सार्हाहिका विधिः ॥ पंचमूली वलाविध्व धान्यका त्यलविलज ॥ वाताति सानि ॥ लोभया तज्जलान्यतमेतवा ॥ कंचटज मूयाडिम
सजाटकषडी जीवनी ॥ जलधनतागनसहितं गगमपिवणिता रंध्रात ॥ कंचटदि ॥ ॥ किनाततिक कंसु वत्स कंसन सांजत ॥ विवत्यिहाति सान ध्रंसकोर्धवदनाप
ह ॥ पलवत्सकवीजस्य ॥ प्रपायित्वा जलीयवत् ॥ यावलागी जयच्छीर्षं सापिरुज ० नामय ॥ कृताति विषामरु हनिडापार्ति द्वयी सभापल कं नं अरु पिक ॥ प्रभाति सा

[illegible]

सहस्रालितवदिवधवहृषिहोताशितसान॥ वत्सकादि॥ ॥ हयमाकममृदतक्रियावाहयमम्यदा॥ सर्वजवहृवप्रेत्वातपूठपाकक्रियामता॥ सर्वमन
सर्पयकंदीकाध्नः॥ सविनाति॥ तातावप्रेमतीसायपूठपाकैरदावत॥ त्रिधधर्तकृजवल्कमजहुजवृकोदलमृकमनिसानवतषयथात्॥ कृष्ण
कृष्णधियपमपूजिजप्रया॥ सवतिसानहनलेखयमवनाजा॥ हृषेजत्वायलेधय॥ त्वकपीपुतीर्धवहृस्यकास्मनीयधवेरित॥
मदावलिफसकतमंगनसवकलयत॥ सिन्धुमृकयति॥ पी॥ नसमादाययन्नत॥ सीताकर्तमधुमर्तयाययइदमोमयी॥ पूठपाकस्यपाकीयवहिनानकव
पूता॥ ॥ गार्कजमलमृकृष्णतायाम्लेपवत॥ का॥ धयकावलेषमित॥ लहपूठपूठमृत॥ यवत॥ सीवर्चलैयवकावृविठुसेधवपिपली॥ अतकीन्दयवा
जाजीवृत्तत्वायलेधय॥ लिफाईवनमार्धवृकीतकोदलसयत॥ यकायकमेतीसाननातावप्रेमधवेती॥ इवविग्रहणीवार्जयवृवधवाहिका॥ कृजलह॥ ॥
उलामथा॥ गिनिमलिकाया॥ सृशयकोवसमादुती॥ तस्मिन्पूठयलसमित॥ तिलकातिपिष्ठासहस्रकलत॥ पा॥ समजातिविभांसमृकविन्धवप
या॥ लिसवातकीर्ता॥ अक्रियरुयोविपचवतावत्दीर्घपलप॥ खनसतमावत॥ पीतल्लमोका॥ लविदाजतव॥ मंदनत्ताजाययमथवापि॥ निरुक्तिसर्वक्रिया

नमः पूज्यं सितं नीलकपीतकम् । धर्मप्रहृष्टं विविधं च न कं पि हंता धर्मं सिद्धं गतिनाति ॥ असुखं न वेद मसाधनं नृपं ति हं वयं कृष्णाय कोरयं
 ॥ उलायये जलजा लेखी लेखये उलायये न मता ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णस्य पत्नी हानी मक्षहागजलसुतं । तथेव विद्ययं कुर्यादाठिमादकसंयतं ॥ या
 वज्रलसिका हागं सितं नृपकल्पयता तस्यार्धं कर्षन् कलपि व्रजकाति सावितात ॥ श्रवणं सनलीयाय न सत्यायाति । गवनी कृष्णकाश उल्लव माठिम
 स्य न सायतं ॥ यथा मर्तकथा कीन मती सावे सुहाजितं ॥ विना कितं प्रतल्यय मया हागे सुसाधितं ॥ पुनः कुर्यात् नीषय वायना विविधवर्जितं । प्रवाहिकति नृप
 नं हं लोयत यव हं ॥ बालविल्वं पुठं तलं पिपली विवर्तु मज्ज ॥ लिहा दाने यति हं सुकूलं सप्रवाहिक ॥ ययसापि पली कल्क ४ पीता वा मनिवा हव ४ य हा निव
 हिका हन्या द्विन काला तव न्यती ॥ विल्वपसी पुठं लायं तलं मनिव याजितं ॥ लिहाति वीहि का हन्यात किं प्रमुख मवा प्रयात ॥ ॥ दध्रुससा यलं समाकि कनड
 जीतति यानक पीठितं सु । सतक कुर्यात् किं धितं तवापि की न लणीतं तम धृष्टं त ॥ वत्सकस्य व नीजाति दावा प्रित्व उह मा ४ पिपली ४ गव न व ला का कद क
 हिमी ॥ यद न न र्धं सिद्धं पयाम उा व नानि ॥ श्री सा नं जय स्यात् ॥ विधा व म पि दा नृ ॥ य उ न च न ॥ ॥ पुनः उा ह पु या क वा प गोल म धू का मृ तो । सकादि क

१३

प्रसीतकिं का गतपयसाथवा ॥ स्वनाथमृषिकामासे । गेवसाधकलतथा । उदतिस्मन लेखकं वा न नीयत मरुम ॥ साधादीन विना धन्य साध मत्से विवि
 सिते ॥ साधनं लक्ष नं हं श्रुत्वा स कागम नाचकं । चदिमृर्द्धं विहा काध दृष्टा साविलं लज्जत ॥ स्नानावगा ह मय म पुनः सिन्धुति हाजतं । व्यायाम मनिम
 ता य मति सा श्री विवर्जयत ॥ श्री सा न विविक्ता ॥ ॥ य हली मा प्रितं दा य मजीवी व दया व न ॥ श्री सा ना क विधि ता तस्या म ध विधा व यत । कवि क विल्व हा
 के नी त क दाठिम साधिता । य वा गु पा च य त्या म सु क ल व र्ध य त्वा पि ॥ लघु ता य व मूल त पं च को ल न सो ध यत । अनात्रिके ल्य अ वि दा न विल्व व का म्ना ठिम
 ॥ य हली मा प्रिता कर्क दी य तं प्रा हि ला य वा न ॥ य धर्म मे ध न पा किं त्वा न व पि रु ध को प तं । कषाया प्र वि का सि त्वा नी का च्छे व क रु कि तं ॥ वा ते ला व म्ना सा धि ता त्वा
 य स म वि दा ह त ॥ पुण्डी सु म्ना ति वि षा उ र्ध्वं वि क्स्व मा सां क थि तं ज ल न । मी हा त ल ल स त ता म ता या मा मा न व न्ध य ह ली ग व ॥ धान्य का ति वि षा दी च य
 वा ती म्ना ता ग न ॥ बाला द्वि य श्री विल्व व द या त्या च त दी य तं । वि उ कं पि पली मूलं दी का नी ल व ला ति व ॥ धा र्म हं ग ज मा द य व द्वा वि क य द्वा य न । उ ठि का
 मा उ लं ग स दाठिम स्य न स त वा ॥ क ता वि दा व य त्या म दी य य त्या पु वा न ल ॥ वि उ क उ ठि का ॥ ॥ श्री रु लं स ला द क ल्मा ना ग न न्ना पु त मि प्रित ४ म पु उा ।

ग्रहणी गदमस्य प्रकृतिं ज्ञासीति तावयति ॥ अत्रादिमर्गं भद्रा ० कण्ठपल्लवेषः ॥ यच्च यच्चित्तं बालविलस्युत्तागर्ग ॥ हृदिसर्वोत्तरी सावत्तुह
 लीमतिश्च ना ॥ ग्रिहा कटवर्तुतिवा ॥ ॥ नागनातिविषामर्क काथस्या दामयावत् ॥ वृषा हि वरकं वापिवाति केशवलीयत ॥ नागना
 ति विषामर्कं धातकी सवर्जितं ॥ वत्सकत्व करुल विल्ल पा ० कटुकराणि ॥ प्रिवत्समो सितचूर्णं सुकोप कण्ठलाभता ॥ येहि कप्रहणी दाष न कं यत्राय
 वं स्यत ॥ अर्गस्य थुपने ले पर्यवे वप्रवाहि का ॥ नागनाय प्रियं दक्षर्ण कषा यथ तं वृजित ॥ जलमश्नुती दसा यल कठिततत्तुला ॥ हावयि तातता
 दयं तत्तुला दककर्मणि ॥ नागनाय दक्षर्ण ॥ ॥ रुतिम्व कटुका श्रीम मरु के लव वात्समा ॥ द्वीविष का दत्स कत्व क हा गते प्राकटा दक्षर्ण यत ॥ पुठनीता मृतापी
 तं ग्रहणी दाष तुल्यमृता कामला कनपाधुल मेहा वृत्राति सा व नृत् ॥ रुतिम्व दक्षर्ण ॥ ॥ ग्रहणी लक्ष्मि रक्षा वा वेमितस्य यथा विविध ॥ कटुमूलवत्
 कवि ॥ तीक्ष्ण विविध यत् ॥ सर्वजायां ग्रहणी तु सामान्या विधिनिश्चेत ॥ मस्तनस्य कषायं विल्ल ग्रहं पथत घट ॥ हृदिक कषायमात्सवान् ग्रहणी पा
 ठु कामला तु ॥ मस्तन कार्य घट ॥ ॥ मस्तनस्य उलाका ॥ विल्ल गर्ह पथत घट ॥ हिना विद्वयसी सति मेस्तन घट महर्ग ॥ वीहिया न्यसे पा ० काथ

78

अष्टाष्टकं काला मसा रना गी ३ अक्षितलवचन म १२० गवघत पल ३२ अक्षि ४ पा क ४॥ ८

प्रयुषितं दावली विद्व ॥ मस्तन घट ॥ ॥ अष्टाष्टकं काला मसा रना गी ३ अक्षितलवचन म १२० गवघत पल ३२ अक्षि ४ पा क ४॥ ८
 विल्लानि च द्वादशकं गव न काथेत कलं न वसिष्ठमाय ॥ सक्ता गश्च ग्रहणी गड क ॥ गान्धा नि सा दा रे चित् दनिर् ॥ मावसि धत्त ल वा षे लज्जाल वि
 ल्लान् धात की सिद्धमाश्र मजा की नवा ॥ मेनी न स ॥ ॥ हिन्या उह यती सा नो पथा पथा सिता दूत ॥ पा ० क न व क पि ल्हा पि वि स य व घट पत्त ॥ बालवा
 के नी घट ॥ ॥ नागनी यिय ली मूल विष का हृदि पि यली ॥ त्वदृष्टा पि यली धान्य चिल्ल पा ० य वाति का ॥ वा ॥ मेनी स्व न स स पि ॥ कलं शरु वि य वि
 त ॥ वडु ॥ लेन दध्रा वत्तु तं के रु वा नृत् ॥ अर्गसि ग्रहणी दा ष मूड कटु प्रवाहि का ॥ पुदु सार्हि माता ह घट मेत यथा हति ॥ वा ॥ मेनी घट
 ॥ ॥ अवा क्प्रणी वला दा वी पृष्ट पत्री धिके क ॥ न्य प्रो ॥ दा इ न्न ना वत्तु ॥ पुदु सार्हि माता ह घट मेत यथा हति ॥ वा ॥ मेनी घट
 मूलमनि वं तागर्ग ॥ कलि सु सात्मली पृथ वी वा वत्तु त मं जती ॥ कटु रु ली विष की मर्क प्रियं वति विषाय वा ॥ पशो त्यला ना किं जल्क ॥ सम झानि
 दिधिका ॥ विल्ल मा व न सी पा ० हा ग क ष स म चितान् ॥ वडु ॥ यत्तु स रं पृष्ट कषाय मय कल्प यत् ॥ डिग त्यला ति उ पस्ती ॥ द्या दि पला धि क ॥ सुति ष न्ने क वा

पुंल्यकं यलनाला ३ मसाननाती २ यतयल ३ २ फामूल प्रत्येकं यलनाला ३ नाती १७ पातीय यल ७ १२ काथणयल २

[illegible]

१७ बाधसर्कपल १ रुकतमूलपल २ तिलतेलपल ३ अहि ४ पाक ५ सिद्ध ६ ला ७ पञ्चक ८ उल्लेख ९ बाधसर्कपल १० १

यदकुरुलपमालीयथेषावर्षेदिसंगमियकं। अतनसर्वप्रहलीविकाना॥ सखासकासखनरुद। ग। था॥ साम्यतिवायान्विमकन। ग्रहंतस्यप्रसूत्यववृद्धिहठ
॥ श्रीलविर्वधामयमालुहत्यात्कल्यालकातामपुठ॥ प्रदिह॥ तेल्लिवन्मातागुहादिसंगमियलीयल। सिद्धनीयम। गुटिकाकल्यालपूवक॥ कल्याल
कपुठ॥ ॥ ३॥ जयाविकानाप्रायलययवस्यनहंतव॥ अर्णसिन्नातिसानप्रहलीगदवव॥ तर्षमनिवलकीलेवृद्धिर्वृद्धिपत्रिकय॥ तस्मादप्रसहालक
तजष्विष्विलेवत॥ इन्नामाधधनापामप्रउकायनिकीहिन॥ रुषजकानगुत्तातिसाधलादायउच्यत॥ यद्यायानालाम्याययदनिवलवृद्धय। अत्रपा
नौषधीयनत्सवीतिसमर्णसि॥ वातातिसानवद्विन्नवर्चासास्यनयावने॥ उदावहविधानेतगहविक्रानिवासक॥ प्रबहवहलाप्रालिपिहणालिततानने॥
विदिवन्धितनक्रयमातीविठसंय॥ तविनाहतिउदजा॥ प्रनरुक्रसमाहिता॥ आत॥ सतकसुधनस॥ सम्यउपेतिथ॥ ततप्रष्टिवलवर्चसहर्षप्रपजाय
त॥ वात। लप्रविकाना। मतप्रवितिवरुयत॥ सुउडियिलीयक। मरुयायतहर्जिता। तवर्धतीयतासापिरुकथदानलामिकी॥ तिलानुक्कनसंयकहकयदनि
वर्धत॥ कृषनागरुनीप्रमर्णसातागतमनीतिलहृत्तातकंयथा॥ पुठवेवसमासिकी॥ इन्नामकासखासप्रहीहपाप्रजायह॥ मन्त्रिकस्तनकनयका। प्रीपृष्या

कवता॥ अथास्तुललवनेनमिविति वदयि॥ असिनातानिलातानाक यकचसीत वनिता॥ स्वादतागं सिताम्यनि चिर्जदयाप्रसिद्धं॥ स्त्रिन्वार्त्तकयलकषा
 या॥ कानजतमलिलनाततद्यतहृदयकं उठतहफितायाकि॥ पिवतिवतकं नूनं स्याच्चैवातिवद्वथे उदजाति॥ याकिच्यतागं प्रसासिहजात्यपिसफना
 जलापिहृत्तप्राप्तमतीकं ककपुत्रजापहा॥ उठजानागयस्यापुयाजितासुठगरुया॥ त्वर्वविठकमलस्य विष्ठाकं हृदयलययत॥ तर्कवादविवात
 जातमल्लोहनेपिवता॥ विरुलादगमूलानि निरुहानपिलयतीवनिधालेहृदयादलषउठतुलायत॥ आश्रुतापुष्टिमांसदन्त्यनिशोतिषवित॥ उठ
 जकिम्यदावहृदयहलीपापुनागहा॥ अविश्वदस्तुसंधानत्मातकीलिकहाजती॥ दन्त्यनिष्ट॥ ॥ हनीतकीर्तापिस्तुर्ध्वस्तुसामलकस्यचास्यात्कपित्तादंगयली
 ततश्चैतन्मवाविली॥ विडिहृदिप्यलीलाधर्मनिर्वसेलवालकी॥ द्वियलान्तजलस्येन चउर्ध्वलेविपाययत॥ जीललेषनसंतमिन् प्रणतिप्रकाययत॥ उठस्य
 द्विगततिष्ठतमासाधयतहाजन॥ यकाहृदमूवत्ययाततामाजायथावली॥ अस्यास्यासादनिष्टस्य उठजोहृदसंलय॥ प्रहलीपापुनागहा॥ स्त्रीहृदयोदनाप
 हं॥ कृष्टलोधात्रविहृतावलवन्निवर्धन॥ सिद्धीयमहयानिष्ट॥ कामलाविजतागन॥ किमिष्टधर्मेदंयमिनाजयअकनाकक॥ घानमानमनिष्टाद॥

73

काथमातसमंजउ॥ हेमजत्वात्यलकविलुथममदलकली॥ अस्यानिष्ट॥ ॥ द्विपलीलमवनस्यवउर्थमनिवस्यवाविपल्याकउवाधधरवथाया
 ॥ यलमवच॥ तालिसमजस्यपलेपलाधकंगवस्यवा॥ द्वयलेपियलीमूलादृष्टकषधरपउकात॥ सुभलाकषमकउकषलेवमणातया॥ उठतु
 लातिर्दिलचचूमेकककानयत॥ अकप्रमालुठिका॥ जालदावृत्तिकीर्तिता॥ पूर्वहृतासुधयवाचरुजनस्ययथावली॥ मयमसिन्वसंयमंको
 रीतायपिवदत॥ हृत्वादलासिसुबोलीसहजान्यप्रजात्यपि॥ वातपिहृकलात्वातिस्तनियाताहवातिवा॥ पानास्यधमूवककुवातनागगलेयहाकि
 मिद्वीगिलविब्रजता॥ सुनमतायमा॥ उलिस्तातहृत्वादयाविहृहायहृदायज॥ अन्नपातयथाकर्मवा॥ प्रोक्त हवयलीपेलद्वयवातिलज्जपि
 रुजउयलययी॥ जालदीयसिर्तादवाप्रमालावउठली॥ अहृविहृमिमियादीप्रयाईउठजाउय॥ जालदामादक॥ ॥ पथ्याधवपलान्यक
 मजाशामनिवस्यवा॥ पियलीपियला मूलचुयविठकतागना॥ पलाहिवधाकममयवकानपलद्वयी॥ रुतातकयलाव्यहो॥ कदमुद्रिउलास
 ती॥ द्विउलतउठतीषावकातकर्ममिता॥ कलेकाहृकयत्यात॥ तजममूवापिवत॥ मैदानिदीययलषप्रहलीपापुनागहा॥ ककायतनमिष्टाद॥

जंवागं ४ कावलायजयिहडा। गजजीसहालिकापडे नसेसैसालिखलपयत॥ ॥ कानलवाकुकनिकुतययदा नपिधापयवात (प्रापतीयवा
 कतपकजा मुरुलापमी। यदिस्याच्चतथाहंगतावनिपहदायत। तद्वाम्भुक्ते साधुयशीकलनलपयते॥ नतिमृतालवभ्रहंवाक्रिदध्रिहंता
 प्रकी। तिवायमपुसपि स्याविक्रि सजातवदता॥ सम्यकदध्रुगमकीनी लववदतनेपिके॥ सामतेसुपिषोपके नापयतकायथ हिषक॥ मूकह
 मयवस्यासीतायसेवर्धहाजत॥ कानममाम्भुतायायो विवन्ममववचसो॥ दाहावस्यादिउलेय॥ सतक्षीततसपिषा॥ तेवान्नमापतकेदि सद्य
 याकायमाध्या। विवेक्षणविपुद्यर्थ वनाकार्थमुत्तुल॥ जीर्णसात्यनमजादि पथीतिकादिसे न्यव॥ नूरसर्ववणीविद्य॥ कानंदलान्नवासयंत॥
 पिपत्यायतते लन सुवदीयतरुषज॥ महाकिंतुमूलानि स्त्रिसेववलितादहं॥ वर्मकीलतथाक्षिता दहदम्यत नलवा। वगवनाध॥ स्त्रीयसुयातेम
 कटमोलती॥ ॥ यथास्वदाप्रलप्यान्नमर्गस॥ यनिवर्जयत॥ अर्णविकिसा॥ ॥ समस्यनकलकार्य विषमं वातनिग्रह॥ तीक्ष्णपिहृषतीका नामन्य (प्रा
 अविष्णोधर्त॥ उिककमजभोर्दसे न्यवर्जो नकध समधेवलयतातामममोहिउहाग॥ अथमकवतलउकं सपिषा वृषभमतृजतयतिउधनाग्निवा

अतमलुताला ४ सोवकुनमसा २ यकाहिउ नाति ५ पातवी १

तनागतिहकि॥ हि **वृक्ष** कचूर्ण॥ ॥ अन्नमलुं विवइर्ण हिउसीवर्चलान्ति॥ विषमोपिसमकन मंदा (नोदी फयावक॥ रुद्राधतावसि विष्णो धनपु
 आलवद॥ (गालितवधुनम्या। कनापहानीकरुपिहहता वायुजयेदध्रुउलोहिमपु॥ सतलुलातपिमुतद्वययतदध्रुमर्कककयतकी। कुमुम्वरुसे
 न्यवहिहृतेलमहिषसर्व॥ क्रियतचमउ॥ विष्वाहयापुहवीना। कषायलगमहोषधी। पिबेकुभालिमीद (नो। लकउसूनहीकर्ती॥ वधमानो हवही कूरुस
 काखामहातेल॥ तस्माहत्माहिषे॥ सायि। दधिकीनेरुयसिषक। यकिं विरुद्रमध्रु। (प्रावकावितहवज॥ सर्वतदत्यनिहितं उकायलपतीदिवा॥ हुनी
 तकीरुक्रमाता नागवलउठतवा। सेनवापिहितावापि सातत्यतोनिदीयती॥ हाजता (प्रेसमापथ जिहाकल विष्णो धर्त। अत्रिसीदीयती दधीलवलाडकरु
 कर्ण॥ सिंधुलपथमग (धुववुकिचूर्ण ममाम्भुतायिवातिय॥ खलमंदवाक्रि॥ तस्यामिषलसपततवनात्रयानं रुमीहवत्यसित माउमपिक (लोम॥ सिंधु
 लहिउठिरुलायमाती बाषेनुठं सैउठिकाप्रकृयाताते रुकिंतेसूफिमवात्रवतिउं जीत मंदाग्निनापिप्रहृती॥ उठतलुणीमथवायकल्यापिथीरुतीयामथ
 दाठिमम॥ आमधजी (प्रेषउदामयष वचाविवन्ध्रवतिलयमया॥ विठरुहत्वातकविठकामतासुतागनामुल्यउठतसपिषा। तिहकि यमन्यकतागता

धृतीपयतासमस्तु ब्रजनायेत हर्कंदत्ताउहाजना ॥ नापयदस्य चूर्णस्य विहालयदमाउक ॥ एतदाहमाउलतसुर्द्धी वीहवतिसाभक ॥ बहुरागिमुखं चूर्ण ॥ ॥
 हास्तनललावाहक उटिका लिखतीय ॥ ॥ पिपलीपिपलीमूलं विह कोहसिपिपली ॥ हिंउ चयाजमोदव पवेवलवलातिव ॥ दोका मोहपुषावेव दया
 मधुपेलान्मितात ॥ दधिकजिकसुकानि घतमाजासमातिव ॥ मोदकस्य नसप्रसु चतप्रसु विद्यावयत ॥ एतदतिघतं ताम मन्दा नीतायनस्य ॥ अर्णसिताल
 नीप्रष्टं तथा उल्मादनायह ॥ प्रन्धुवदयवीकासकरु मधातिलापही ॥ नागथं हलीनापं स्वयधसुहृगन्धनी ॥ यववसिगता नाग यवक किसमा प्रता ॥ स
 वीकान्नागयलाउ सुश्रुम मन्वोदित ॥ मन्निघतं ॥ ॥ वक्रादिपेवमूलस्य काथेपलगतदय ॥ अमृताया नसस्येक पूतं स्मिन्न रुयासत ॥ पाठकं रुधपा
 जीवसस्य पलगतं विनाग ॥ यवेहु उलुताव पावदाया कलकल ॥ प्रकयसु उमधुतं सुगीतकठवदय ॥ प्रकियेदिसुगन्धस्य जिकणधपलदय ॥ यय
 कस्यायव कानात् मुक्तिस्मिन्नसायत ॥ उहमं कथितं पीसा अस्त्रिद्यामिनिवदय ॥ जीर्यस्यपिह काकातिकालीसासं कयी किमीत ॥ उल्मादनागं कुकाति
 साकच्छीतिरुतिव ॥ यागगतिव पाजितान् यहाऊयतिपीतमात् ॥ विवकउउ ॥ ॥ प्रकृतं पुलतायत मुषजलान् प्रसुउयेप्यामृतं ॥ प्रकाधदधिता

मूलकपलान्यसीउठान्मातिक ॥ मान्योसाधितं रुवनसकलाद्वसिपुजा कृत्यला द्रुक्प्रबलयातिगापलयगति ॥ क्रियहाउउर ॥ लिखधन्ययवा
 दिनालितिहितीतवासनावासयत ॥ ग्रीष्मायधनाययववउ नावषासुप्यागमे ॥ सुगीतकगलान्यत ॥ यनामिदीविप्रवातं चार्धितं ॥ वाउजतिपलनस
 हितमिदं कुम्बवकुचत ॥ हन्याद्योतकरामदोषजतिना नानाविधाता मयात इन्नामातिव प्रलुलुम्क ० वातहत्वातलीदाययत ॥ **वृकर्मकर्त** ॥ ॥
 यन्मस्त्रादिपुवीहाउ सुउठं कोउकाजिक ॥ मान्यनागो जिनाउरुं प्रकवृजितं दया ॥ **स्वल्पवृक** ॥ ॥ उउको दालनालाति समस्त तिय ॥ धाहने
 ॥ सीसतिदिउलगागस्य कवृकस्य सिद्धय ॥ कृष्टसे नवया ॥ कलं वृजितं लसमान्वितं ॥ विसुद्यामदतं को प्रखलीपुलतिवानर्ण ॥ **वृकोसावकुकाजिक**
 ॥ ॥ कवीजतिचलेनी प्रउपुवोक्तं वत्सक ॥ पीतकभाया वमता धावीहतिविसुविका ॥ व्याषकनंजस्यरुलीहनिजा मूलसर्मवायथमाउलं ग ॥ कयाविपु
 काउटिका ॥ कतामु हस्यविसुवीनयताहरतत ॥ लपधनास्राउरसिपुक्क ॥ नम्रयविष्ट ॥ सवचासता ॥ उहर्तवन्निविसुविका प्रीतं लवियचीवत
 दधकाति ॥ पिपासावासमृक्षे से लवजस्याम्रस्यत ॥ जातीरुतस्यवासीतं सुतं रुध घनस्यवा ॥ विसुद्यामतिवदार्था पाप्रादीह ॥ यसस्यत ॥ मरुकातज
 कृष्टसंन्यवत् ॥ हिलेतपल ॥ ३२ काजिकयल ॥ २४ अहि ॥ पाक ॥ ४

ध्यातिमस्यवानसः॥यातम्याकिकसंमर्कनीलितकामलापह॥श्रुजतकामलातविद्यालयसु॥८॥तिगागेविकवावीलावृथवा
 संपकल्पयेत्तस्यकैकटिकमूलमापयमाजातनीरुत॥श्रयावजाश्रावविडिगवृष्टिंलिहृद्विडिडिहृलाचितावा॥ससर्कनकामलितोडिहृष्टी
 हितागवाकीमेगुजवृष्टी॥काजीलाहृनजाश्रावतिगाकीजाश्रावकवा॥लेहानिवावयथा॥कामलामुदतामयि॥॥दग्धाककाष्टमर्मलमाय
 संकुलागमृष्टीतेवापितसमवाताना॥विचुललीहृमधुताविबलकृमृकयपापुगदंतिहृकि॥**मधुनकवर्ण**॥॥यापुनागकिथसिवा॥याजयेत्रह
 लीमर्क॥कामलायाहृयाहृसाविकाश्रावित॥हृनिजाडिहृलातिववलासवृकसाधित॥सर्कनामाहिधंसवि॥कामलाहृनमृहृम॥**हृनिजा**
धृधृत॥॥मृवातिकानिगायासृकश्रावतनयपद॥जायकीवसृरुतिमपरीलासृददोवृहृ॥मृकमाउधृतंयहृसिधृकीववडुधृत॥यापुना
 कवविस्मृटसाधालनकापिहृजित॥**मृवाधृधृत**॥॥श्रावविस्मृटवजनीडिहृलाधिपुनर्नवा॥मृकान्यथावज॥यालविडिगदवदोवृहृ॥**वृधृकोली**
 वहानीवेसृकीवेसृ॥सृतंयहृ॥सर्वोत्पलमयथतदिकायाहृहिकाकताना॥**वावाधृधृत**॥॥श्रावलीडिहृलासृविडिगदवदोवृहृ॥**वावीलमाकि**

२४

कीधृहृनिकीधवदावृव॥यतप्राधिपलातहागतवृष्टिदलायथकयथका॥मधुनीहृगुलवृष्टिचुधमज्जनसनिहृ॥मृजवाहृगुलेपकावृष्टिधृकि
 पहा॥उधृवनसमान्कयाहृकातान्यथागित॥उधृजिततर्कलसात्म्यकी॥**वृहृजत**॥मधुनवटकाकषयालदा॥यापुनागना॥कृशान्यज०नीला
 धमृवृसृहृहृमयात॥मृगामिकासलाभहृप्रीहृतंसमयानिवा॥**मधुनकवृक**॥॥पुनर्नवाहृवृहृपिपलीमावनातिव॥विडिगदवकाहृय
 विडकमृकनाकय॥हृनिजाधृयडिहृलादकीवेवविकातथा॥कृठजस्यहृलीतकापिपलीमृलमृक॥यतानिसमहागतिमधुनविगुलकत॥मृज
 वाहृगुलेपकाधवयन्तिधृहृजत॥यापुनागधनाताहृगुलार्ग॥किमिगुलमृत॥पुनर्नवाधृमधुनी॥॥धृवकीलासमनिवृधवदानहृलडिकी
 विडिगदवकाहृयहागलिपलसमिता॥यावन्तातिवृष्टिनिमधुनविगुलकत॥यकाहृगुलितमृधृधृतीरुततइधृनत॥तताकमाजाचटकातविवहृ
 कलतकडकायापुनागिजयधृममदामित्तमनावकी॥मृगामिगृहृलीलाधमृनसृहृनीमर्क॥किमिप्रीहृतमृहृनीगलनीगेवृतालयत॥मधुनवजतामा
 धृनागतकेपतागथ॥मधुनवजवटक॥॥यवलेधमृगाल्यनृनसेजाहृलज॥**मृजवाहृकीमसृनायेरुयोहृजितमिधृत॥कामलायापुना**

गमिका ३॥ ॥ तादिक माधोसंग्रह मन्त्रावलिन सयत। छत्याष्ट्र हली नाग स्त्री हउत्म कनादि कत॥ उर्ध्व च व रुपायस्य पूर्व नाहित पिह न॥ अकी
 लवल मासा १॥ कर्तव्य मयत पर्ल॥ यथै सती नय धल समिते लो जस कुह ॥ उर्ध्व च व र्धन पूर्व मधो गव म नीहि त॥ विवता विहला स्यामा पिपली सक नामध॥
 मोदक १॥ मन्त्रि पाणी १॥ न कपि ह न नाय १॥ मरुत यव यश्वा ह मरुला जाय या मधु॥ लिलि नै सदन याश्च न कपि ह न नम्य न॥ गाल यन्त्रादि ता सिद्ध य या पूर्व मधो गम॥
 नका ती सो न ह त्या ए या श्रा विधि न गषत ॥ कोल मांस वली वाली वक्ष मा मा न वन्धित ॥ अवस्य म वि न च य् सुम्भ ने स्म मया वन ॥ वष प जालि ति पी श्र न सै स म धन कर्त॥ विव
 हुत स म या ति न कपि ह न दान ॥ आर नृष क ति न्य ह पि र्धु म हिका ज र न॥ वि ती य ला धी स को ध न कपि ह न पि व न॥ वा सा क प्रा था ज र न म त पि र्धु ला धी क ता हा न ह
 क ग नालि पी त्वा सि ता की ड य ता नि ह त्या त पि हा सु जा व ग सू दी न्य मणु॥ वा सा या म्मि य मा ना या मा सा या जी वित स्य च॥ न कपि ह न कयी कानी कि म र्थ म व सी द ति॥ न व ध न स
 मी कि वि ह म र्ज न कपि ह न॥ ताली स न्न र्थ सै य क १॥ य य १॥ को ख ल वा स क स न सा १॥ क ह पि ह स्वा स त म क स न ह न कपि ह न १॥ आर नृष क म धी का य था क्ता थ १॥ स ग क र्त्त १॥
 को ज रा १॥ क स न १॥ स्वा स न कपि ह न वि ह ल १॥ समा क्रि क १॥ ह न्नु ह ला ह वा वा यी ता न स १॥ लो लित मा य ह नि॥ क था ये वि वि धे यी गि दी का १॥ लो वि जि त क र्त्त॥ न कपि ह न य च्छा

२७

म त उ वा ता ल्व ले य य १॥ कु ग य य स्या त् प न सै य था गे र्ग वी घ र्ण य व गु ले ज ल न॥ स ग क र्त्त म्मा क्रि क सै य य क वि दानि ग धा दि ग ले र्त्त वा॥ डा का या च वि नी हि व वि ल
 या म ध क न वा॥ स्व ड्वा या ग ता व यो न के जि त्या षि र्ण य य १॥ य का इ म्म नि का म्म य य था ख रू न १॥ स न ता १॥ म ध ना ध्म नि सै ली रा न कपि ह न थ क थ क॥ ख दि न स्य पि र्
 गु ना का वि दान स्य ग ल्मा ति १॥ य ष्य क्त्त नि म ध ना ति ह त्या ना य म ग्म न॥ वा स क स न सा य था स फ धा य नि हा वि ता॥ क ष्वा वा म ध ना ली रा न कपि ह न र्त्त ज य त॥ ड व ल या
 व ता ड य म की रू या ड ता व र्ज त॥ ता व ल्य मा ली ति दि र्द रि षा र्त्त र्त्त वा वि धो॥ अ ह या म ध सै य का या व नी दी य नी म ता॥ ल्प ष्माल न कपि ह न र्त्त ह नि ग्म ला ति सा न न्ने॥ ला ह गी वि
 नि ति १॥ स उ म न न य ग धि ति॥ म धी को ल ग मा र्ज उ ख ष दि उ ल म क र्त्त॥ ज ला य ज ल वा डा का १॥ पि य ल्य ध य ली त था॥ पि ता म ध क य रू न म धी का य ध लो मि ता १॥ सै न्ध म
 ध सै य का उ टि का सै य क ल्य थ त॥ अ रु मा ज न धा त यि ता रु क्थे ना दि त दि त॥ का स ग्वा सै क री ह का क्त्त मि द्ध मि द्ध मी॥ न क ति वी व न र्त्त र्त्त पा र्ध ग्म ल म ना व क॥
 स्वा सै ली हा य वा र्त्त व स्व न ह र्द क र्त्त क र्त्त॥ उ टि का त र्त्त ली व था न कपि ह न र्त्त ना ज य त॥ ज ला दि उ टि का॥ ॥ ना सा य व ह्री न्धि र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त कपि ह न मा म ल क॥ स उ
 नि व तो य व र्त्त न ल दि न्धि य ल य न॥ द्या ल य व रु ज ल मा य द य स ग क र्त्त ना सि क था य था वा॥ डा का न सै की न य र्त्त पि र्त्त र्त्त स ग क र्त्त न सै र्त्त न सै हि र्त्त वा॥ न सै य ड डि म

क
 र्त्त
 र्त्त
 र्त्त

पूषा यानसा हवो हवा ॥ अथास्मि ज ४ पला ॥ अर्वा तासिका मृत न क जिह ॥ वषस्य स न स कला उवे न हि य या ज य न ॥ प्रियं उं विहि का ला धर्म ज ता अति सु ॥
 य न ॥ अत च ॥ उ पा य य न व स्य न स ४ की ड स म नि न ॥ नासिका मुख पाय स्या यानि म धा व गित ॥ न क वि ह उ व द्ध नि सि द्ध व स य या ग न द ॥ य द्ध म स क त न व
 न क ॥ ति व गित ॥ त द य न त न र ॥ अत ति व स्य वा व द्ध नि ॥ म र ॥ गति व ह ॥ पि व स नि व ह न स ४ कित ॥ स ४ ग १ व य स न क ॥ न य न सा हि ॥ यो डि म द्ध ज य ॥ स
 त ॥ की न पि व द्वा पि प य ॥ मू ल्या ह ॥ अ ह वा ॥ ॥ ह व ॥ सी त् य ल किं ज ल म जि ह ॥ स १ ल वा लु का ॥ सि ता सि तं मू नी न य ॥ म स १ य द न य ॥ अ को ॥ वि य व ल्का र्थि के न त ४ सा यि न
 ज स १ खानि ना ॥ त १ ल मू ल्का को न द्वा वे व व ड ॥ अ ॥ त १ यो त व म ॥ न क ॥ ना व न ता सिका ग ॥ क ॥ स्या ॥ ग १ क ॥ त १ स्य क ॥ अ ॥ य द्ध न य न ॥ व १ ४ १ व ल नि य को
 व १ न य १ ह त व १ षी ॥ म १ ड १ वा १ य १ व १ व १ व १ सिक म १ स १ त १ दि न ॥ न १ म १ क १ प १ व १ व १ त १ द १ स १ य १ ज १ य १ न ॥ गी १ त १ व १ द १ न ॥ ॥ ह १ व १ य १ य १ त ॥ ॥ वा १ स १ स १ ग १ र १ व १ स १ प १ ल १ म १ स
 ल १ क १ ला १ क १ म १ य १ क १ स १ मा १ ति १ वा १ स्या १ १ य १ द १ य १ क १ ल १ मि १ य १ व १ न १ य १ त १ क १ ल १ स १ को १ ड १ मा १ १ य १ व १ नि १ ह १ नि १ व १ क ॥ वा १ सा १ य १ य १ त ॥ ॥ ग १ ल १ स्य १ को १ वि १ द १ न १ स्य १ व १ ष १ म्य १ क १ क १ ह १ स्य १ वा १ क १ ला १ य
 ला १ स्य १ ग १ सि १ नि १ य १ म १ क १ ल १ व १ ड १ प १ ल ॥ ग १ ता १ व १ नी १ दा १ डि १ म १ ति १ नि १ ठी १ क ॥ के १ को १ लि १ म १ द १ म १ व १ क १ वि १ द १ नी ॥ पि १ ष्ठा १ व १ म १ ल १ रु १ ल १ पू १ न १ क १ स्य १ य १ व १ न्य १ त १ घ १ त १ की १ न १ व १ ड १ पु १ ल १ य ॥ का

१ कल्ययस्य कंताला ज मा ती १ म सा २ १ हि १ पा १ क १ सि १ व १ नी १ त १ म १ ध १ य १ ल १ ४ १ मा १ क १ न १ य १ ल १ ४ ॥

म ह न ता ह वि व न्ध १ ल १ त १ क १ पि १ ह १ वि १ व १ नि १ रु १ ति ॥ स १ ता १ व १ नी १ य १ त ॥ ॥ स १ ता १ व १ य १ सि १ म १ ला १ ता १ न १ स १ य १ स १ द १ य १ म १ त ॥ त १ स १ म १ च १ ह १ वे १ त १ की १ न १ य १ त १ प १ ल १ वि १ पा १ य १ य ॥ जी
 व १ क १ र्थ १ रु १ की १ म १ दा १ म १ हा १ म १ दा १ त १ ये १ व १ वा १ का १ की १ ली १ की १ न १ का १ की १ ली १ म १ दी १ का १ म १ ध १ क १ स १ थ ॥ म १ र १ प १ नी १ मा १ ष १ य १ नी १ वि १ द १ नी १ न १ क १ य १ न १ त ॥ ग १ क १ र्थ १ ना १ म १ ध १ र्थ १ क १ सि १ द्ध १ वि १ श्र १ व १ य १ हि
 ष १ क ॥ न १ क १ पि १ ह १ वि १ का १ न १ व १ वा १ न १ न १ क १ म १ द १ व १ व ॥ की १ ज १ ल १ क १ उ १ दा १ त १ य १ वा १ जी १ क १ न १ ल १ म १ ह १ म ॥ श्री १ ग १ दा १ ह १ नि १ वा १ दा १ ह १ क १ न १ पि १ ह १ स १ म १ ह १ व ॥ य १ नि १ ग १ ल १ य १ दा १ ह १ य १ म १ य १ क १ ल १ य
 य १ हे १ की ॥ अ १ ता १ ज १ म १ नि १ ह १ य १ अ १ उ १ नि १ ना १ उ १ मि १ व १ मा १ न १ त १ ॥ स १ ता १ व १ नी १ स १ पि १ ति १ द १ व १ ल १ व १ य १ नि १ व १ द १ न ॥ ग १ ता १ व १ नी १ य १ त १ वा १ मि १ न ॥ ग १ क १ र्थ १ ना १ म १ ध १ पा १ दि १ की ॥ म १ ध १ व १ पा १ दि १ की १ द १ य
 य १ ता १ वा १ सा १ दि १ क १ य १ न १ ॥ ग १ ता १ व १ नी १ य १ त ॥ ॥ क १ श्मा १ ल १ का १ य १ ल १ त १ र्थ १ सि १ नी १ ति १ ४ १ क १ ली १ क १ र्थ १ य १ व १ ह १ क १ य १ त १ य १ ल १ पा १ य १ त १ अ १ म १ य १ ह १ ॥ य १ दा १ म १ ध १ नि १ ह १ पा १ क १ ल १ दा १ र १ व १ त १ ग १ त
 य १ स १ त ॥ पि १ य १ ली १ र्थ १ ग १ व १ ना १ स्या १ द १ य १ ल १ जी १ न १ क १ स्य १ वा १ ल १ ल १ म १ नि १ व १ य १ य १ दा १ य १ का १ ता १ य १ ला १ र्थ १ की ॥ कि १ य १ द्ध १ नी १ क १ त १ क १ द १ य १ र्थ १ सि १ य १ द १ य १ रु १ त १ ॥ त १ स्य १ क १ स्या १ य १ य १ हा १ ॥ अ १ दा १
 की १ ड १ य १ त १ र्थ १ की ॥ त १ य १ था १ नि १ व १ ल १ र्थ १ दा १ क १ पि १ ही १ क १ त १ क १ यी ॥ का १ स १ स्या १ स १ त १ म १ च्छ १ दि १ रु १ श्वा १ क १ न १ ति १ पी १ डि १ त १ ॥ क १ थ १ य १ न १ न १ व १ क १ न १ व १ ल १ व १ य १ स १ा १ द १ नी ॥ उ १ न १ स्य १ ध १ा १ त १ क १ न १ ली १ व १ी १ ह १ ली १ स
 न १ वा १ ध १ नी ॥ अ १ पि १ स्या १ नि १ मि १ र्थ १ १ ४ १ क १ श्मा १ ल १ क १ न १ सा १ य १ ल ॥ ख १ उ १ क १ श्मा १ ल १ क १ ॥ ॥ ख १ उ १ का १ म १ ल १ की १ न्या १ या १ उ १ स १ य १ ल १ द १ या १ कि १ य १ त ॥ ख १ उ १ क १ श्मा १ ल १ क १ पा १ र्थ १ सि १ नी १ क १ श्मा १ ल १ क

पतिव्रतक
पुत्रक

४ सिनपिण्ड तातयलोपितवृक्ष कश्मापुपल १०० ॥ अथयथोपल १३ ॥ ३
 यकमापि कश्मापुपाको गत्य नमयया ॥ खउमलकी न्या यजगयस्य द्यामि ॥ खउकश्मापु कश्मि १ कश्मापु कश्मव ॥ अथयखउकश्मापुसमयतस कला यम ॥ ४

धवात। अन्यउरवउ कृष्ण। सुममगसकला नमः॥ यंचासुचपलसि न कृष्ण। अं पसु माश तः॥ पकपल गतं खलु वासा काथार कपयत॥ मरुता धाजी उहा
हानी। उरुगं धिके न्य कापिके॥ वनं यवि न्य धान्या क मनि वे चपलानि के॥ पिप्यली कठ व। चैव मधमा नीम्य दापयत॥ काण्णि सारु रयी हि को न कोपि ह हली म
की॥ रुडा गम म्पि ह वर पीत स च यो हति॥ मरु सारि पि कृष्ण। यो का गन्ति त म्प यो॥ वासा खलु कृष्ण। ॥ उला मा दा य वासा या अ व द स उ। लज्ज
। नंत या दा व ग षण पा व य दा र क र ह ष क॥ वृष्मं ता म रु या ता च र ख उ अ कृ दं त था ग तं॥ क प ल पि प्य ली नृ प्ति सि छ नी त व मा कि का त॥ क ठ वं प ल मा ल य वा उ
ऊर्ति वि श्रु ति॥ कि षा वि ठा लि तं र वा द ड क पि रु य था व ली॥ का ण्णि सारु ही त य य म्प न यो ति पी ठि तः॥ वा सा ख लु॥ ॥ ग ता व नी छि न र हा व ष म उ लि का व ला
। त ल म ली व भ य जी छि रु ला या च व रु थ॥ हा नी प ष न म ल य प थ क र्प व प ला ति वा॥ ज ल डी ला वि च क थ म रु हा ग व ल णि तं॥ दि वा ष वि ह त स्या पि मा की के न ह त
स्य वा॥ प ल द्वा द ण क र्प यं नृ क लो ह स्य च र्पि तं॥ ख लु उ ल्य य तं द र्यं प ल धा ठ सि क र्पे॥ रा च की मां त पा र्प व स र्प मी स न र्प य॥ उ र व यान् न पा तां ति सि च मा सि
नि व ह ती॥ प व रु म म य पा ड उ उ पा क म ता य था च रु द म्प ना द र्यं रु द म्प ज उ क ल व॥ गं गी वि ठि क कृष्ण व र्प थ जा जी प ल म तं॥ ॥ छि रु ला धा न्य क र्प वं च र्प म

विचकणनी। चर्पदत्ता उ म धि तं सि च रु। उ ति क प य त॥ य था काले प र्श जी त वि ठा ल प द कं तः॥ ग व य की ना न्द पा र्प व स र्प मी स न र्प य॥ उ र व यान् न पा तां ति सि च मा
सा ति व ह ती॥ न क पि रु क र्प का ण्णि प कि ल मि ण ष तः॥ वा त न क र्प म रु च र्णी त पि रु व मी क र्प मी स य र्थ पा र्प ना ग थ क र्प मी हा द र्प त था॥ आ ता ह न क र्प मी वा व म म्प पि रु
नि रु ति वा॥ च र्प मी व ह र्प म रु ल्य पी ति व र्प तं॥ आ ना य प र्प दं प र्प का या नि व ल व र्प तं॥ थी क र्प मी च व क र्प र व रु र ता य थ की र्पि॥ रु द म्प ना ना व र्प मी र्प ति रु नि
क क ना ण णा॥ काले ग ४ कृष्ण ना य र्प मी र्प ति या उ य त॥ तालि क र्प मी प य ४ पा र्प मी र्प ति च न क बा रु की। स र्प म ल क जी वा र्प य ठा ली व ह ती रु ली॥ रु ल य का म वा हा रु
ख र्प मी स र्प द ठि मी॥ क का न र्प व क र्प मी स र्प ना य र्प मी र्प तं॥ व र्प मी य वि ण ष ल ख लु र्वा र्प य क र्प मी॥ ख लु र्वा र्प मी॥ ॥ य च पि रु क र्प मी क र्प व हि न क र्प मी॥
न क पि रु हि त य च र्प मी क र्प हि त य च र्प मी॥ सारि पि क र्प मी वा ना य ल म रु म स न का॥ य ठा ल ति च व य थ त लु ली या द यो हि ता॥ पा ना व त क पा ता य ४ स। ग त रु नि ण म थ
। सा मा न्य दि त या। ग ४ य ल कि स मी च व॥ य था च न क पि रु क र्प मी वा ना य ल म रु म स न का॥ न क पि रु क र्प मी॥ ॥ गं गी वि ठि क कृष्ण व र्प थ जा जी प ल म तं॥
लां प कि म ग ४ स र्प वि ण ष तः॥ सारि पि ली क र्प मी स र्प व र्प मी स र्प ल र्प मी॥ दा ठि मा म ल का प र्प सि च मा ज व र्प यि व त॥ रु त ष पि ति व र्प मी क र्प व का ना ४ पी त सां द य॥ ॥

वहिर्मर्जितनीलस्य कृष्णस्य लालपयस्य च। गणधायनमवर्ज्य काययन्मालोहिष्ठति॥ कर्णली मण्डु रुक्मस्य वहिर्मर्जितसर्वविनशः अविभाजितवंगस्तु काययन्मालोहिष्ठति॥
 व्यानादिगुणमाम् सर्वतादृशगुणजलं॥ पादसुसंस्कृतवाक्केषु उक्तं गच्छेत्तु वातं। धान्याकीपिप्यतीविश्वदण्डमूलीजलीपिवत॥ पार्श्वमूलकवस्त्रासपीतसादीनि
 वृहथ॥ श्रवणं धामतादा नूदणमूलीवलावका॥ यक्षनातिविद्या घृतिरुयश्री नवसागिनी। दण्डमूली वलां यात्रा यक्षनासे नक्षत्र॥ नागवे ४ कविर्तयययाव्या
 म्नासिगिनायक कृतकासादिना कये सुलिलं॥ ककरुखनागवलावाननिवीजानि वृष्टिर्तपयामि। पर्वक मधुघटं युकं ससितं यन्त्रादिकाणहनी। मधुताप
 विठिमीस्य जडुलोहयतादथा॥ अक्रिये आलमत्पुत्रं सचमाना हेतानि तः। कषाडा कालितो लह कयहा कोवते लवाना॥ मधुसर्पियता वासु मधकश्रुति
 मोरुवा॥ गं कनामधुसंयुक्तं नवनीर्लिहृ कयी। श्रीनामीलकृतयुहि मउल्यवाश्रमाकि केशा। सिनात्यला उगा की नी पिप्यती व कले त्वं व ४ श्रुत्य इष्टिउति
 तं लह मन्मधुसर्पिषा नृत्तिर्तयासयत त्वासका ग क हनी॥ पार्श्वमूलकमत्पुत्रं सुकजि कमनाचिती हसुपादा मदाहृष कवनकं त (थाई) गी दण्डमूलीय
 तानुकीना न्नापि य इदियान्नवम। तत्कतो मधुसंयुक्तं घटं विदविना धनी॥ सिनास्य पार्श्वमूलकं स्वासका ग क नाप हं सिद्धं जगति विद्या तं स्वापिना यनमोषधी॥ गत
 पृथानतं कर्षं मधुसंयुक्तं नवदात्रवा पिष्टुलं प ४ समीपे ४ यक्षपाश्वी नृवक्षव॥ कर्षं ककरुहि मधुसंवा सकनसहाविनम कृतवाना मधुघटसितात्यला हितं कय

२८

कर्मादिको न संन नम नयनिप।
 ताका कर्मद्वयं लो जयन क क यनन॥

कागत्रकपिहृ हनी॥ जलाजमीदामलका हयाक गयडिनिवा सुतसालसानान॥ विठिग्रहस्तानकविशकाय कदपि काहाद सुनाइ जाग्या पक्का जलतनपवहस
 पितस्मिन्सिद्धत्ववताविन वाजिसत्यलान्यजसिनात्यलाया दयात्तु गकीनियलातिषज॥ यक्षघटस्य द्विगुलं यदयात् कीडरुतामक हनी विदयात॥ पलीय
 लंवातनगालि ह च यथात्यवत कीनमतस्तिन्या जतद्विसेवा यनमपाविर्षं यक्षयमाय श्रुतमंतयेवा यन्त्रालमर्षयप हतिनूतं पीपामय (येवरुगन्धनेष्या) नवा
 यकिष्टित्यनिवर्जनीयं नसायेतवेत इयास्यमानं॥ जलादिमन्त्र॥ ॥ वनाविदानी कस्य पर्व वमूलं पुनर्नवा। पर्ववाता कीन व कालं पुं गत पथक यलामि
 तान्॥ जवाकषायद्वि कीन विद्यायां सुवसानिका जीवनीय ४ यथल्ले न क माये घं ता र कं॥ सिनात्यलातिपुन वलीत द्वापि सत किपत॥ गमधुमपिप्य लीमा सो च
 र्णं लं ग ४ कस्य च। समाक्रिक कोडवि क तत्सर्ववक्तु मूर्द्धि॥ स्यातं सपि पुं गत कत्वा रुजू पर्वतवक्षि॥ तानं दग्धायलिकात् कीन मयवान् पिप्यत्क
 जायका ग क न की ल प्रमथी रुान कर्षिण॥ न कति वी वनताय पीतसंवा वसकिते। सके ४ पाणे सि न ४ ल रुं दे वस्व न वक्ष्या ४ सपि ४ ४॥ ॥ विल्वो गिम
 कणा ताक ४ कास्मर्य ४ पाटली वला। पर्वु यत अ ४ पिप्यत्य ४ ल ड्ड व ह ती दयी॥ लं गीतामल की जाका जीव की यक्ष ना ४ ४॥ श्रुया सोमतामधि जीव क र्षकी

गली मरुत नैवामदाष्ट केलात्यल वंदने॥ विहारी वष मूलानि काकोली काकनासिका॥ उषा न्यामलकस्य च॥ पञ्चदशाहक थंडल
 जाल विपावयत्॥ कालात नन सीधय नस ग्रीत गालिनी॥ तत्रा मलक मरुत्य निःकले केलसर्पिषा॥ पल द्वादश कुरु दत्ता चार्ध उलाहिष का मन्थ लि काया॥
 धूराया लेह वत्सा धसाधयत्॥ मधुल मधुन घाति छली तपदा ययत्॥ वहुः पतंग मकीयो॥ विप्य त्याघि पलीत था॥ पल मे की विद यात्र ललाय कल नात
 ॥ **अथ वल पा मः वन मूला नसायनी** ॥ काला सारु नये विलेखे लोपि दिस्यत॥ कील कता नीवा लाती वक्रा नीवा रु वक्रत॥ सन रुय म नीवा नी द्रु ज नी वा
 तलो लीती॥ विपासा मरु उकु कला न दाषा कषेति॥ अस्य माया पय जीत या विन दान्न रुज नी अस्य यया गत च वलः सुबद्धा रुन्य न नैवा॥ मया स्मृति का
 किमता मयत् मायः प्रक र्ण वले मीले या ली॥ श्री मरु ह र्प य न मने वक्षि वरु पसा र्प य व ता न लाम्य॥ नसाय न स्या स्य तन ४ यया ग ल ह त जी प्रोपि कृती य वना
 त॥ जना रुत म व स न र्प विरु हि न र्प न व यो व ता नी॥ कवि दि द्ध कि म द्धु १॥ स्तान उमि त न की नी॥ मइ वल्क से म ४ पा का रु क मा यो ४ य ल स्य त॥ च व त या स
 ॥ ॥ दल मूली स र्प उ का र्ण ख य षी ल दी वली॥ हलि पि प ल य मा न न पि य ली मूल वि उ का त॥ हा नी मरु न मूल च द्वि प ली न य वा रु की हरी त की ल नी चैव

२२

उलपे चार कं पयत्॥ येवे ४ खिने ४ कषा यर् प्रतीत चार या ली॥ पंचरु उ उला न ला कुरु वष य थ क य ता न॥ तैला मपि पली चूर्ण मि छली त व मा कि का
 ता केल व पल मा नी ठे वा उ यति विनिर्मित॥ लहं धवा रु य निर्य म न ४ खा द द सा य ता त॥ त दली प नी ह न्या दो य प र्ण व ल य दी॥ पंच को सा न रु य स्या र्ण हि
 को स विष म क नी॥ ह न्या रु धा ग्र ह न्य लो द्रु जी ग र वि पी न सा न॥ अ ग स्य वि दित ध न्य मि दं प्र ष न सा य नी॥ य धा दि र्प उ र्ण क र्ण त पि र्ण क र्ण त यदि॥ त दा सा र्ण
 उ ज यी ष उ ष व ल य मा ज या पा द ल ष क षा थ ल सि ना सा सो रु नी त की॥ विहि ना किल त ले वा य व दा ला हि ता द या त॥ मी र वा नी पो ला नी ल त सा
 ध ना॥ अ ग सि रु नी त की॥ ॥ जी व नी म धू कं पा का रु ला ति क रु ज स्य वा ली व क न मू ली वे वा यी ल रु न कं व ली॥ नी ला त्य ली ता म ल की वा य मा ना इ ना ल रु
 ॥ पि य ली व स मी पि ष्टा घ र्ण वे धा वि पा व य त॥ उ त द्या धि स म रु स्य नी ग स म्य स म क्ति त॥ न य म का द न वि र्प स पि न र्म य बा रु ति॥ जी व स्या र्ण र्ण ॥ पि य
 ली उ उ र्ण मि र्ण क ग नी न य र्ण र्ण ॥ उ त द ने वि क र्ण र्ण स पि र्ण क र्ण य का सि र्ण ॥ पि य ली र्ण ॥ पि य ली पि य ली म ल व व वि ष क ता ग न ४ स या व स्र के ४ स नी ने ४
 श्री त सा लो ध न र्ण ॥ क ल्का य पा दि क ४ का र्ण ४ कान घा पि व रु उ र्ण ॥ व ठ म र्ण ॥ ॥ य र्णी व ल उ र्ण य ल य र्ण व मू लो उ र्ण य व न॥ स र्ण र्ण म रु हा ग रु त द पा ष

पवत्यर्त्त॥ धापीविदानीकनसपाधययसोर्मल ॥ सुविस्त्रेजीवतीयेधनसमिदंघत॥ ससेन्यनाजयन्नालंडन्मलयतिगीलित॥ घनासर्नघत॥ ॥
कागसीसपलगत १०० यातीयगत यज १२ काथलपल १२० घनपल ३२ कल्कयत्थकीपल १११ मधुपल ८० कनपल ८॥ ४
यत्तामिर्त्त॥ सम्यकसिद्धकवतायजीर्त्तमित्यदापयत॥ गक्तनायापलान्येधमधुत॥ कृत्तव॥ किपत॥ घलीपलीपि वत्यात यन्नालंडन्मलयतिगीलित॥ कतकयपीचकागो
न्यायवत्तलमनावेकीस्वनकयमनानीगीस्वोहृन्त्यासूदादली॥ वल्यीमसिकनवधमनिर्त्तदीपनीयनी॥ कागलायघत॥ ॥ तायडाणदितयमसिद्धागस्यपलगत
तैपक्ताजलमक्षसिद्धतमित्तिकिअघतघक्त॥ कल्कनेजीवतीयानाकृत्तवतउमासिपिनिद॥ येहानिलीतहन्त्याहृक्तातकनसकनसकपाजितपीत॥ कागसासा
नयन्नालम्याग्धदूजंधानी॥ अक्षस्यवायसार्धसमयतिनेवापनध्वकिश्चित॥ कागनायघत॥ ॥ द्विपवमलस्यपवत्तुभाय॥ यस्तुधर्मसिन्नसस्यवेकाकस्कीबला
या१स्त्रियायगर्भ॥ सिद्धपय१यस्तुयर्नघत॥ सर्वाहिघाताक्तितयन्नालंडन्मलयतिगीलित॥ कतकयपीचकागोहृन्त्यासूदादली॥ वल्यीमसिकनवधमनिर्त्तदीपनीयनी॥ कागलायघत॥ ॥ तायडाणदितयमसिद्धागस्यपलगत
तिमपपटकीमूर्त्त॥ जायेमाताइनालहा॥ कल्काकषायपकार्थ॥ दयाहामकीगी॥ जाकायकलमूलधमदोमामलकानिव॥ घतयस्तुधर्मसिन्नसस्यवेकाकस्कीबला

३०

सीमरुमर
चिर्युमुसु
तिकाकस्तुनी२
मठिकाव ४ अष्टाप्रत्यक्षीतालारतेलपल ३२ यमिमधुपल २२० ॥ २
नी॥ कथकागपलमर्त्तनिनवाग्धेनजायह॥ वलायघत॥ ॥ यदनाखनखताय॥ यहीसेलुययभकी॥ मजिहासवर्त्तनादली॥ धलायतिक्कनी॥ यद
तैर्त्तमलासासीककाजीवतितामूदी॥ हुनिधसानिधतिक्का॥ लवंगायुर्त्तुक्रम॥ लप्रणतालिकावहि॥ सेलमसुवउपली॥ लाका॥ नससमीसिद्धग्रहघ्न
वलवेर्त्तुक्त॥ अयस्मानकनामादकत्यालकीवितासेनी॥ आयुष्यकनायवेद॥ प्रयीकनलमरुमी॥ यदनायघत॥ ॥ कनसकापदीवत्येलाकातेत्ययी
जयत॥ बालनीगधिकावाकपात्रधथीपदगत॥ वलायघत॥ धापीपनी॥ वरुपुदीपुतत्रवा॥ ययमानिस्मयसा१॥ समयतिकतकय॥ ॥ कातिकविष
यक्ति॥ यमाकागवर्त्तदते॥ सुतपयामधुर्त्तसुधाताथेपिवरुघत॥ घतचलानागवलाहृतीसुसिद्धसेयही॥ मधुकल्कपादी॥ दडागपुलकानकापिक
कागानिलासुक्रमयसुदीय॥ वलायघत॥ ॥ हितमयविणधलखलुकुष्माकुकीहर्त्त॥ कागानीसात्रपावहि॥ स्वनरुदाशविदने॥ विहिवापीठनीले
गे१॥ सासकागोसगमये॥ रुकावेवाकन१॥ सासकाग॥ गालितदणर्त्त॥ स्वनरुदयजयत॥ यदूषनाजयन्नालंडन्मलयतिगीलित॥ घनासर्नघत॥ ॥
साहृषागेनूपकाक॥ सुनग१॥ गधपीठित॥ एकायहवलीयसा॥ मलाहृहिजीवित॥ तस्माद्यन्नतमंनक॥ यन्नि॥ गामननसी॥ तिस्वदहृषुजीतहृका
लाकापल १०० यातीयपल १२० घनपल ३२ कल्कयत्थकीपल १११ मधुपल ८० कनपल ८॥ ४

नकुयवहृदका॥ यूपतायनवापिवत्॥ चरकाष्टु नर्मवापि नकीवाद्यागजगिल॥२

हृषयवताउनुष॥ कृगमस्ययासुतजीवति यन्मोचिनेधतिमान॥ उयउवधिस्रवेकतादीतुजययथास्वयनमीश्रगांशु॥ (नाकंष्टिय४काधमस्त
यताय्वलजइनादानिषयानुहजत। उनुतद्विजातीनदिदनां प्रपूषकथाप्येय्या४ण्टण्याद्विजस्य॥ नाजयन्माधिककयधिकान॥ ॥ पंचमूलीक४का
थ४पिप्यलीचर्चुस्यत४। नमोत्रमन्त्रतातिर्ये वातकोणमदस्यति॥ हाजीवाकागदीण्टमीपिप्यलीविचरुषज४। उउतेलयतालं कृहितोमानुतकालिताम॥ कर्चु
ताविचइस्यर्ण४। जीवाकागदीमिता४। लीहोतेलनवाताक्त कोणजयातइमनी॥ वलाद्विचहतीवासा जाकाहि४काथितंजली॥ पिहकाणायहंपयनकंनोमधू
याजती॥ सनादियं वमूलस्यपिप्यलीजाकयासुथा॥ काषायनसुतंकी नपिवत्सुमधुनकंनी॥ जाकामेलकखरू नपिप्यलीमनिवाचिती॥ पिहकाणहनीकतंलि
हृहृन्माकि कसार्थिषा॥ खरू नोपेयलीजाकामितालाज४समान्तिका४मधूसार्थितालं४॥ पिहकाणहनीपनी॥ मजामलास्यायवदाठिमास्या ककंन्धनामूलकसु४कं
नाणुलीकलास्याचिकलककतयुषातवास्४करुनागहता॥ प्रकंनकहलहागी विचपिप्यलीसाधितं॥ पिवत्काथंकरुकुथं काणंसासवचक्रुह॥ खनसंनंगवयस
माकि कतसमन्तिती॥ घायथत्सासकाणध्रं प्रविन्धायकरुपहं॥ घाव्णेलकोनकामसासहलसं समरुव॥ पिप्यलीचर्चुस्यकंदनामूलीजलीपिवत्॥ कट्ठलीक

३१

विलंहागी मरुधान्यववाहया। पुष्पीप्रपर्ककंठगी मूलाकश्चजलीरुतं॥ मधुहिउयुतंययं काणवातकरुतमका कणनामखसुत स्वासहि काक न वृव॥ कट्
हृतादि॥ ॥ वातल्लेभकतंकाणतालीसा मीयथाजयत्॥ पिहयूकंरुवकुष्वंननावतयाचिती॥ तालीसेयउमनिव तागनीपिप्यलीपुता। यथाहनीहागक्या
लेलेलावाहहागिक॥ पिप्यत्यस्रउलेवाउ प्रदयासितगंकीन॥ काणसासात्रविहनी तच्चुर्चदीपनम्येनी॥ रुत्याधुग्रहलीपाषल्लीहणंमकनापह॥ कृयती
सानल्लघ्नी मूरवातानुलामनी॥ तालीसायामादक४॥ ॥ कस्ययकुटिकायेतत् चर्चुयद्यासितामली॥ कुटिकाकगिसेयागा॥ चर्चुलेयुतवा४सुता४॥ ॥ वासक
खनस४पया मधुयकाहतालेता॥ पिहलेभकतंकायंनकपिहोविणेषत४॥ काणठकतजवले जीवले वहनेनपिसमनीपिहकाणोके नन्येयमधुनाषधे४॥
मधुकीपिप्यलीजाकालाकाण्टमीगतावनी॥ द्विउलावडुगकीनी सितासुर्वेप्रउले४॥ लिक्काउमधूसार्थिस्या कृतकाणतिककथं॥ पिप्यलीमधुकीजाकासुपकीवह
हीरुली॥ यतकोडयतालं४॥ रुयकाणानिवहली॥ यथापुण्ड्रिचनउठ॥ कुटिकापानयन्मख॥ सर्वषकाणसासंषु कवलवाविहीतकं॥ मतलिलालमनिर्वंसीसीमसुउ
उ४पिवत्॥ धर्मतस्यानवपय४॥ सुखाषसुउठपिवत्॥ उष४काणानुपथक् द्वंद्वसर्वपाषसमन्तितात्॥ गतेनपिप्ययागनी साधयद्वयसाधितात्॥ मत४लिलालिफ

वायाटल्याऽसहलप्रय कश्चाखरू नमस्कं। पठतयादिकालकृत्तिकाप्रामधसंयता॥ मधूकंमधूमयकं पिपलीगकं नाचिता। नागनाउठसंयकं। हि
 काध्रीलावतयय॥ उल्यनमाक्रिकाविष्ठा तस्यवालककंदता। याश्चिक्राहिरुतायसुन्यंवावीनताचिंत॥ मधूसीवचलापतमाठलंगवसंपिवताहि
 काहोमधुनालिक्काकुलीधावीकलाचिंत। कश्चा मलकउलीनाचुर्ध्वमधुयतासिता॥ मरुमरु४४याकबीहिकास्वामतिवाचनं॥ याणावनाधरुऊनलोसने
 नीतलवानिषकेशावे४कथाययागे४समयतिहिकोमताहिघातय॥ हि कास्वासाउनयूर्ध्वतेलाके४धदव्याताउधध४॥ धर्तनकइवर्तसमनमनी॥ हि
 कास्वासीपिवहागीसावधाम्भुवानिला॥ नागनामासिहाहानी सोवचलसमाचिंत॥ ग्रहयानागनाकलुपीकनयावसूकमनिवकल्लुआतीयताधुनापिव
 कासीहिकावतहासी॥ रुषितादगमूलस्यकार्थवादेवदानर्ण॥ मदिनामापिवधकाहि कास्वासयपीठि४॥ गृहीकइहिकरुलवयकणकात्रीहागीसय
 कनजगलवलातिर्यव॥ चूर्ध्वपिवदगिनिनलजलंतहि कास्वासाधवातकसनाचिपीतसय॥ गठीवानकजीवनीत्वभूसयकनाकय॥ सवसामलकेलाव
 पिपल्यउरनागनीवालकयसमंरुर्ध्वकला४गुलनकनी॥ सर्वदातमकस्वासेहिकायाधययाजयत॥ कागमर्दकयजोलीयूष४सीरुजरतस्यवोपुष्कमूलक

३३

यषसु हि कास्वासनिवाचनं। यकिधिरुकरुवातध्रमध्ववातातलामने॥ रुषजं पातमनयहि कास्वासयतचिंत॥ अमतातागवहानीवाधीयध्वसमाधित
 ॥ काथ४पीठ४कणचूर्ध्व४कागस्वामोजयनिवासनागनाहयाउल्याकागस्वामोयपोहति॥ दगमूलकषायलेयूकनलावचूर्ध्वताकासस्वामयगमनीयान्वरु
 लतागत॥ कलकतागनीवाधीवासानिकथितजली। पीतपोकनसंयकंस्वासाहिकातिवाचनं॥ उर्ध्वकउकतेलतमिप्रयित्तासमीलिहता। जिसकाहयथा॥ तस्वाम
 निम्नलताजयत॥ याकहिनीतकीकषाककादखदिनालहा॥ विलिहन्मधुसंयिथास्वामानहकिमुदानुगत॥ ॥ हिआविठिअपूतीक विरुलोथाषविषके४दिका
 नीसायिष४पक्षवेउतुलजलान्वित॥ कोलमाउ४प्रधवाहकागस्वामयवाहति॥ अगस्थिनावकीउल्लसुकेहदकयतथा॥ कालस्तातश्चकष४स्याद्वयतादसुठिता
 ॥ हिआयि४॥ ॥ गीतंसीगृहकायासुदगमेत्यासुथायनी। गीतहीतकीतविंयवहायवउगुला॥ योदलववतसिंसुवसवउपनिश्रुत॥ आलोच्यवउतायुताउ
 उयलहयान्त॥ यत४यवधुमवहतीयावलेहलमागते। गीतवमधुतथायषट्पलानिपदाययत॥ डिक्दुमिसगनययपलिकानियथकयंधका॥ कषधययवका
 वसंनश्चयकिपह४॥ रुकथेदहयामका। लहस्याधपलीलिहत्। स्वासीसुदानर्णहकि कोस्यविधिनेथा॥ सववन्धुपदाधवज० नागिन्धदीयनी। येलामितगतमान

मला ४

नक्षत्रमिह श्रुतं ॥ हरीतकी गणकस्य वात्रियसु मिहाधिकं ॥ हरीतकी ॥ ॥ कुलकादगमूलस्य तथैव द्विजयष्टिका ॥ गणकस्य मृगकुलका ॥ लविपावयता ॥ वा
 दावगणधरसिंघु ॥ उत स्यादुतलकिपेता ॥ गीतकृतचयकत मधुना ॥ शीपलातिवाषट्पलातिठगा कीर्त्या ॥ पिपल्याचयलदय ॥ डिमृगन्धिसृगन्धत रवापदनिवर्त
 यति ॥ सामकासेरुनीहिको नागयहम कतेथा ॥ यागसीदरुनादवकद्वेधा यदगता ॥ जलकटुर्लुपिद्यमल्यत्वादीनवानिल ॥ मानसोनिधम वादाद्विपली डिमृगन्ध
 त ॥ कुलक ॥ ॥ **हिकासासाधिका ॥** ॥ आर्यकाश्रुजलीपयं जम्बायत ॥ उतादनी ॥ कीनामपातीपिहा ॥ कपिवन्मार्थवत डिमृग ॥ पिपलीपिपला मूलमनि
 वीविष्यतेषज ॥ विवतसूखलमतिमान् करुजस्वतसीकय ॥ स्वनापघात स्वनाज करुवद्विपिनिश्चत ॥ रुयजसर्वजवापि प्रत्याखयाच नक्षिया ॥ विद्यमन्वतसकशुदि
 कतिनिधक तालीसेजीनकडगदहते ॥ समीसे ॥ चूर्ण ॥ उत यमदिन डिमृगपियुक्त ॥ वैश्वर्यपीनसकरुवविषयसर्क ॥ वदनीपयकल्कीवा ॥ यत रुजसमेन्ध
 वी ॥ स्वनापघात कोभेच लह ॥ सिद्धयथाजयता ॥ नर्कनामधूमिप्राति मूयालिमधुनेमह ॥ विवत्ययसियस्योच्च ॥ वैदया ॥ रुहिह ॥ स्व ॥ वाद्यीस्वतसेवेयक नासा
 वाद्यालग्न ॥ रुने ॥ ॥ सपि ॥ स्वनापघातवेहन्या ॥ कानिचपवध ॥ बाद्यीयत ॥ ॥ उत यमभयादाय स्वनासातामसीरुवे ॥ वात्रिय ॥ उलसाध ॥ आर्यकादोव

३४

आर्यका ० कापीयल ४४ पातीयपल ३२२ काथ ॥ लवमल १२८ गवय ॥ यल ३२ कलाय ॥ कयल १ ॥ लारमसा ॥ पाती ३ ॥ हि ॥ पाक ॥ २

(गणितं) ॥ **स्वनापघात ॥** ॥ वाताववाहिवतिलविधिवस्येव हस्तिहाभूतायमदिना न्यतमनकर्ष ॥ कश्चाविउरुयवहस्महने ॥ हागी ॥ नास्तेलहि ॥ तुलवणा
 रुमनाग नागा ॥ पिह ॥ उतामधुकेवमतीपसर्क लि ॥ ४ ॥ ससेधवसितामधुमार्थनि ॥ निम्बामृकुदितवत ॥ करुजडपात ॥ नाजडमविमधुनासहपीयकाघ
 ॥ चूर्ण ॥ यदकमधवातिलजतदव सवे ॥ यमसर्वकतमेवमयक्रमे ॥ यस्मिंसीन ॥ लपिह ॥ विनकवमतीक ॥ रुयज ॥ यान्कुलाति ॥ रुवण ॥ यमनाघ्रज ॥ ॥ उता
 रुयासहयज ॥ उताथक ॥ रुवावाभिधायवित नखलस ॥ रुपात ॥ अथ ॥ यवातिपति ॥ यूनरुवाय ॥ योनालेके ॥ अतिप ॥ धनन ॥ मानयह ॥ सान्ध्यान्धदहदवि
 नासिविधा ॥ रुकात ॥ पातातिमूल ॥ रुल ॥ पाठवना ॥ गलेहात ॥ सर्वो ॥ रसां ॥ यविधिधत ॥ विविधे ॥ ययागे ॥ उजीत ॥ वापिल ॥ पूत्रकमत ॥ सुखाति ॥ अस्त्रिका ॥ उतायव
 ल ॥ गलामनिचानिती ॥ अरु ॥ कर्ष ॥ दना ॥ गेष ॥ सर्क ॥ कवठ ॥ पावणी ॥ कसो ॥ वच्च ॥ लाजाजी ॥ नर्क ॥ नामनिर्विठ ॥ धा ॥ यलाय ॥ मकली ॥ नपिपल्या ॥ यदना ॥ त्यली ॥ ला ॥ धत ॥ जावती
 यथा ॥ अषलमनिचायज ॥ आर्द ॥ नातिमतिर्यास ॥ यजाजी ॥ नर्क ॥ नायत ॥ सुते ॥ लमा ॥ किका ॥ यन ॥ वलाय ॥ कवठ ॥ ग्रहा ॥ वठ ॥ ना ॥ वा ॥ कान ॥ हन् ॥ वाता ॥ य ॥ क ॥ रु ॥ सर्व ॥ जान ॥
 जी ॥ य ॥ मला ॥ ति ॥ डि ॥ रु ॥ ला ॥ न ॥ ज ॥ ती ॥ द ॥ य ॥ य ॥ चूर्ण ॥ कता ॥ ते ॥ य ॥ व ॥ सु ॥ क ॥ दि ॥ मि ॥ प्रि ॥ ता ॥ ति ॥ की ॥ जा ॥ नि ॥ ता ॥ ति ॥ वि ॥ त ॥ न ॥ म ॥ र ॥ वे ॥ धा ॥ व ॥ ता ॥ र्थ ॥ म ॥ ल्या ॥ ति ॥ ति ॥ क ॥ क ॥ इ ॥ का ॥ ति ॥ व ॥ हे ॥ य ॥ जा ॥ ति ॥ ॥ का ॥ न ॥ य ॥ जा ॥ जी ॥ म

निचं जाकावका सदातिमी सोवर्चल उठं कोडं सुवर्चावक नागते ॥ माषचउरुधन उठि कां कला मरुध धार्या ॥ का ॥ नवादिपान कं छुठिकावा ॥ ॥ यमा नीति नितीक
 अनाग नवा सदातिमी ॥ दातिम वद नवा सुं कार्षिका न्यपक न्यय ॥ धान्य सोवर्चल जाजी वना मरुध कार्षिका ॥ पिपली तागिती के कं दगती मनिवस्य वा गकं वाया
 थवसा निपला न्ये कउरु धन ॥ जि का विना धनं दयं न चूर्ण रुक नावती ॥ हन्यी हया र्धनं ल प्र विव न्या बाहता सती ॥ कागवा सहनं प्र ह्य हन्य (ग) वि का न न
 ॥ यमा नीति उव ॥ ॥ श्री वाचका धिका न ॥ ॥ श्री मा ग्या कं ग रुवा हि सवा र्धु र्मा मती लेय त मे वन स्यात् प्रा का नय न्या वत जी विता उ सी ला धनं वा क रुयि रुहा
 नि ॥ हन्या त की नाद कं पीतं कुदि मावत स हवी ॥ ससे न्व वी पिव न्य पि वी न कुदि नि वा बली ॥ मजा मल क यष मा सस पि ल ससे न्व वी यवा न मधु मिश्र मा र्ध व मली
 रुता पि व नु ॥ पि हा मि का या म न लाम ना र्थ जा का वि ना नी रु न से सु व स्यात् ॥ क रु मय सु त्व ति मा य व दं पि रु ह न न्या इ हि न र्ध गी ॥ उरु र्ध का ल मधु सी पि स कं
 ना र्था ला ज धि म न्कं य दि वा पि ध र्था पि ना य न्म रु न स न वा पि गी लो द नं जा रु ल उ न से र्वा ॥ वंदन स्या क म उ ल सी यो मा म ल की व सी पि व न्या कि क र्म य कं कुदि
 रु न नि व रु न ॥ क पा था रु र्ध म रु स्य सु न जा म धु न कं वा ॥ रु र्ध ती सो न रु द रु ॥ रु न य ॥ स य का सि त ॥ ह नी त की ना चूर्ण रु लि या न्या कि क र्म य ती ॥ य (वा) ग मी

३३

कत पाष कुदि ॥ कि ध ति व रु न ॥ का थ ॥ य र्ध कं पीतं सु को ड ॥ कुदि ना ग न ॥ उरु वी जि रु ला नि रु प ग ले ॥ का थ ती पि व न ॥ को ड य कं ति हं र्था उ रु दि पि हा म्म स
 रु वा ॥ क रु मि का या ॥ व म नं प ग रु स पि प ली स र्व य ति म्म ना र्थ ॥ पि डी त के ॥ स न्व व र्म य र्कं थु र्धा क रु ना ग य (ग) ध ना र्थ ॥ वि डि रु दि रु ला वि न्व रु र्ध
 म धु र्ती लि ह न ॥ वि डि रु ल व उ ली ती स म धु (ग) म्म जा म्म मी ॥ स जा म्म व वा व द न स्य रु र्ध म्म का य र्ण क क र्क क म्म र्णी ॥ इ वा ल रु म्म म धु र्म य र्का लि का रु रु
 कु दि वि ति य रु र्थ ॥ ता थ म्म म धु र्म य र्कं वि रु ल म पि रु रु ॥ क र्त उ रु र्धा वि वि व रु क पा य हि म र्म रु ति ॥ वि रु र्ध रु व न्म र्म मा कि क र्म स मा य र्ती ॥ प्री रु ल स्य
 उ रु र्धा वा क रु था य म धु र्म य र्ण ॥ ध र्म कु दि य र्णी ता म्म र्वा वा त उ ला म्म ना ॥ ज म्म म य रु व ग व धु क धा न्य म्म र्वा जी व न वा नि म धु ना पि व ना न्य म्म र्वा ॥ कु दि य या ति से
 म र्ती वि रु ग न्मि य का ली रो ति ह कि म धु ना थ इ वा ल रु वा ॥ जा ती न स क पि रु स्य पि प ली म नि वा चि तं ॥ को ड ल य क ॥ स म य रु र्ध र्थ कु दि म र्म र्णी ॥ जी ती धा वी सो
 व र्च ला जी ल कं ना म नि वा नि वा य र्का य म धु ना ले ह ॥ (ग) रु रु दि नि वा ब ली ॥ का ल म रु क क र्ण धा री ला जा वि रु य ल डि कं ॥ य मा म्म र्ता र्क की ला मि म कि का
 वि रु ति ना य ता ॥ क ल म ल क पि रु म्म रु ल ग ला य र्कं स र्म ॥ स को ड या दि का रु हा ॥ रु रु न कु दि ना ग ना ॥ का ल म ल क म रु र्ती मा कि का वि रु ति ना म धु स क रु त रु

॥ धन्यास्तु स्यात्वे न स्य मलदोगन्धनागती। तद्वलवर्णीगीतं मुखं ॥ १ ॥ हनं यनं ॥ कालदाडिमक काल्पवृक्षिकाश्चिकिकानसी। यं वासुकी मरुवाले प० स यस्तु
 प्रातियच्छति ॥ वटप्रवाहं मधुकुष्ठ मृत्युलं सुलाजचूर्णं ॥ २ ॥ अठिकां प्रकल्पयन्त ॥ सुर्महता सावदतन धानिना रुध्राय कक्षामपि हकि सत्तवं ॥ ३ ॥ डान्तेन क० ॥ ४ ॥ लीलागी
 तं माकि कर्मयुतं ॥ राजयहृतसंम्यतं कुट्टितं ॥ ५ ॥ अविनाक्ति ॥ ६ ॥ रुध्रतपूवमियकी ॥ ७ ॥ तले रुतजलं यदि मन्तली दीर्घा गवाया प्रयाद्वितं न न ॥ सात्मानं रुत
 हे भजं सुष्ठु तस्य जयन्त ॥ ८ ॥ तस्यां जितायामन्यापि ॥ ९ ॥ सांकाविकेति ॥ १० ॥ रुषिता माहमायाति माहान्याली विम्वनि ॥ तस्मात्सर्वस्ववस्तु न कविद्या विवाय
 त ॥ ११ ॥ **रुध्रिका न ॥** ॥ १२ ॥ सांकावगमलय ॥ १३ ॥ सुहावा ॥ १४ ॥ लीलाय ॥ १५ ॥ हायजतो निलाश्वाली ताति याताति वगन्धवहि ॥ सर्वास्मृक् स्वति वापि कोते ॥ सिद्धाति वेगेम
 धने ॥ १६ ॥ यथासि ॥ १७ ॥ सदाडिमाजी गलजा नसाश्वातथायवालोहितगालयन् ॥ १८ ॥ मूर्च्छा समसा ॥ १९ ॥ सप्ततीन मूर्च्छा ॥ २० ॥ यथादाय कषायाति कून प्रीतिप्रयोजयत ॥ न कजाया
 तु मूर्च्छाया ॥ २१ ॥ १२ ॥ किया विधि ॥ २२ ॥ मयजायां विवन्मयं तिर्था संसवद्यथासर्व ॥ विषजायां विषप्राति ॥ रुषजाति विषपत ॥ २३ ॥ कालमजी ॥ २४ ॥ पलोनी न कजाय ॥ २५ ॥ १३ ॥
 वानिला ॥ २६ ॥ पीतं मूर्च्छा जयही द्वा कषां वासधूसं यता ॥ २७ ॥ महावर्षा मतां दार्कां पीकनं प्रकि काहवा ॥ २८ ॥ विवल्पाय तं काथ मूर्च्छाया ॥ २९ ॥ यतदं ॥ ३० ॥ विवद्नाल हाक्काथं स

३१

यतं डमलकथा ॥ ३१ ॥ विरुलाया ॥ ३२ ॥ यथागावा ॥ ३३ ॥ यथाग ॥ ३४ ॥ यथासापिवा ॥ ३५ ॥ नसायला नां की सुम्ह ॥ ३६ ॥ सुधिषा वाप्रसत्यत ॥ ३७ ॥ अजना न्यवपीठा ॥ ३८ ॥ यधमनापिवा ॥ ३९ ॥ सुवि
 हिमोदतं सुर्मदह ॥ ४० ॥ पीठान्तरा कन ॥ ४१ ॥ लुण्ठनं कलाम्बु ॥ ४२ ॥ दत्तं दणं नमवव ॥ ४३ ॥ आमेउफावय धां ॥ ४४ ॥ हिता तस्याववाधत ॥ ४५ ॥ **मूर्च्छाविका न ॥** ॥ ४६ ॥ मूर्च्छाविकाने
 मदीका व काल्पली कलाठि मे ॥ ४७ ॥ यनूषके ॥ ४८ ॥ सामलके ॥ ४९ ॥ यका मयविका न न ॥ ५० ॥ सतीन मूर्च्छा मिथं वा दाडिमा मल कोन्विता न ॥ ५१ ॥ दाका मल कख ॥ ५२ ॥ यनूषक न स न
 वा ॥ ५३ ॥ कल्पय रुध्रान्ते पूवत नसाश्च विविधा न कान् ॥ ५४ ॥ यथा काथे त सीसे ॥ ५५ ॥ यतं वाजी न स न वा ॥ ५६ ॥ मयि कल्याण कं वापि ॥ ५७ ॥ मेदमूर्च्छा यही पिवत ॥ ५८ ॥ सच्छिद्र मूर्च्छा
 सानं मय पूग रुला रुवी ॥ ५९ ॥ सय ॥ ६० ॥ सय न्यीत माह के वापि जीत व ॥ ६१ ॥ वन्यक नी प्रयाण कुल याता क्लवण रु कला दाय ॥ ६२ ॥ साम्यति युग रुल मे दं ॥ ६३ ॥ कना क
 वलप्रहात ॥ ६४ ॥ मय सी वच्चला ॥ ६५ ॥ यक किं विरुलान्ति ॥ ६६ ॥ जीर्ण मया यदा न वात या नाह्यया प ॥ ६७ ॥ मूर्च्छा य ॥ ६८ ॥ सिता य ॥ ६९ ॥ स्वाद वापि ती न स ॥ ७० ॥ पिरु पाणाय
 यथा र्थ सुवेत अहि मां क्रिया ॥ ७१ ॥ पात नाग क रु रुतं लं घनं यथा वली ॥ ७२ ॥ दीपनी या ॥ ७३ ॥ यत पिवन्मयं स माहित ॥ ७४ ॥ सर्वज सर्व मव दीपथा क रं विविदिस्ति ॥ ७५ ॥ आ
 हि ॥ ७६ ॥ क्रिया हि ॥ ७७ ॥ सांक्रिया नि मदात्ययं ॥ ७८ ॥ न च त्सदा कर्म मूर्च्छा की न मस्य यथा जयत ॥ ७९ ॥ लंघनाय क रु क्री ॥ ८० ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

पनीतमयतः॥ श्रीवयथागमयैवकुमलाख्यान्माचनतः॥ यथः पुनर्नवाकाथं यशीकल्कवसाधितं॥ घर्तं वृद्धिकर्तं पातामयपातहताजसः॥ सोवर्चल
 मजाश्रयवृत्ताम्रसाम्प्रवतसी॥ त्वणलामनिवाधोत्तलकं नारागयाजितं॥ हितं लवणमस्राजं मन्त्रिर्दीपयतीत्यर्थः॥ मदात्ययकरुणायदयात्काताविनाश
 तं॥ वयसोवचलीहिउपेक्षनीवेधेदीपको॥ चूर्णमधेतपातयंयातात्ययत्रजापहं॥ जलप्रवर्धनतद्विषाजः॥ स्वप्नासहकाधिमितोपदसां॥ पिवत्सुनाकेन
 लहतागमन्मतामतिप्रलम्बतयाति॥ जाकाकपित्तामृकदाठिमयत्तत्पातविहमहर्नमधुनकनाथं॥ **मदात्ययाधिकावः॥** ॥ सतः क्षीतद्यतात्यकं
 दिहृद्यवसुकुलि॥ कालामलकसुमके॥ क्षान्ताम्रेनपिद्विमान्॥ कृपयत्तुस्यसेवाजमानतालाजवासा॥ लामकेनाथप्रकृतचदनतानलपयतावीद
 तामृकलास्यदितालवतायदीजितं॥ सुषामाहाहितिं रुजकदलीदलमस्मिन्॥ पविमकावगहृष्टं वीजताचनिसवतं॥ सस्यतलितं नीतार्थं रुद्रादाहायणत
 थ॥ कानेः श्रीवकवायेचसुणीतेश्वनान्वितं॥ श्रुतार्थं हितमयं यन्नेष्टान्नेष्टनीतले॥ कृपादिगालपञ्चादिजीवकाथनसाधितं॥ तेलं घर्तं वादाहृष्टेर्वा
 तपिहवितागतं॥ **कृपाययतं तेलं॥** ॥ पिरुक्कनहर्नयच्चदाहृतस्त्वमिथयत॥ रुतनीलोध्रसव्यामृहिमपलं कान्तं॥ कालीयकनसाधनं दाहसकीविलेपनं

३७

॥ क्षान्त्यपीषयतेपीत्वावावितादाहतागतं॥ हलकसुमलतालपचन्दतस्यापिदाहृतं॥ त्वग्रतस्यामलाभाधात्गीतकृत्यथाउना॥ जीवनयधकाणीनव
 दनकाठवाविता॥ संपूर्णमवगहृतजालीदाहादितातनी॥ **वृत्तिदाहाधिकावः॥** ॥ वातिकेन हृपानंयाग्निनेकः पिरुसंरुव॥ करुजवमनं कार्यपनावसा
 दिर्ककमः॥ यच्चोपदकतकिंविदपस्मानचिकित्सितं॥ उन्मादतच्चकरुवीसामान्यदृष्टावथ॥ वाक्कीकृष्णात्तुल्यपट्टकागंरवप्राप्तिकाखनसा॥ उन्माद
 तादृशः॥ यथगतिकृष्टमधुलिङ्गा॥ दलमूलाचसद्यतं यकं मीमंनसतवा॥ ससिद्धार्थकचूर्णमृकचलेवानवैद्यैर्घृतं॥ उन्मादगतकयाययातुमावाताल
 खर्जनी॥ ॥ यथाघसाधयेतेतं तस्यास्युजतया॥ सदा॥ सिद्धार्थकावचाहृष्टं कर्तुं जादवदानच॥ मंजिष्ठाधिरुतास्रताकटहीचकट्टिकी॥ समप्रानिदियंउ
 च्छालनीमानजतीदयं॥ वरुमृधलापिष्टोयमगदपीनमंजीनी॥ तस्यमालपनंचैवस्नानमृदुर्नतथा॥ अपस्मानविषान्मादकृत्यालम्बीकनापहं॥ रुतस्य
 हयं हनिनाजघानचसस्यत॥ सपिपतलासिद्धं वा॥ सप्तमूर्धतदर्थकत॥ यूपर्णहिउलवर्णववाकट्टकनाहिनी॥ सिनीषनकमालातावीजं सुतायसंयथा॥ ग
 म्मजपिष्टेनतश्चवर्तितंजितं॥ वातार्थकमपस्मानमूमादचनियेकृति॥ **यूपर्णयावलिः॥** ॥ आस्तासंयष्टद्वार्तावायेधर्मार्थसाधकः॥ कृपादिद्विदिता

नीवा, दण्डयदुतातिवा, वरुसाधपतेलाक, मरुतयानयन्यसुत॥ कपिककथवातफेलाहतेलजले॥ कणाहिमाउयित्वाउ, सुवधाविजुनगह। ईश्वर
 ताहिबिदित, सुथावजितनमस्व॥ सूर्यलोचनदंडल, दातेहिमिहगजेभ्यत॥ जामयकपहसेभ्य, सुखहिसुखनेसुथा॥ अथवावाजपुत्रषो, बाहिनीचासुसंयत॥
 जामयत्पूर्वाथेनत, तज्जयनानयाहया॥ दहइ४खरुथस्यापिपनीखालहयंमर्त॥ तनयातिसर्मतस्य, सर्वताविद्वतंमर्त॥ ॐ पूजयविनासा, तुमनायस्यायम
 न्यत॥ तस्यतत्सहजप्रोक्त॥ गालासाहे॥ समनयत॥ कामलोकरुयकाध, रुथेबाहोरुसंरुवातायेनस्यनयतिद्वंद्वे, नहिनवसर्मथयता॥ वृक्षादाषमन४सा
 त्यदणकोलेवलावल॥ विकिसिर्तमिदं कुर्याद्दन्मादयाप्ररुतज॥ दवर्षिपितृगंधर्वे, नमरुस्यवेद्विमानावज्जयंयंजनामीति, तीक्रान्तेकममवव॥ सापि
 यातादिनागीतोमकुादिभ्यथविधि॥ पूजावत्पहाशेहि, होममर्वाजनादिहि॥ जयंदागलुमन्मार्गयथाविधिपुत्रिहिषका, कल्याणकंपयंजीत, मरुद्वाव
 नसीधर्त॥ तेलनानायलयच्च, नइन्मादययागीजयत॥ जटिलप्रुततांकीणीवावटीमंकीटीवर्वा॥ जयमालांजयावीनावावकीकेईनाहिली॥ कयस्कीण्ठकनीक
 जीसातिवृषापनीकषा॥ महाप्ररुषदनाय, वयस्कोनाकलोदय॥ कटिहनावचिकाली, किनायेवउतेर्धर्त॥ सिद्धिवाउर्थकोन्माद, ग्रहापस्मानतोतनी॥ महा
 जम१ सूर्यरु१ उल्लु१ गतावनी१ जगमांसर हनउ२ हीमनाज२ बाकी२ सुसमी२ वासनेद्वय२ कटिहनामधलाजमानपणी१ व२ कीवकाकीनीवावमास, कएक२ सिद्धिवादिमल२ वावातीकेद२

१०४ कल्कप्रपायसर्वातीला२मसा॥ नाती२गुब्बुयतयल३२ पातीयपल१२४ अहि४पाक॥ १०॥ १

येगाविकंताम, यतमेतयथाभर्त॥ मधावद्विस्मृति कनीवालातांवाकवर्धनी॥ महायेसावधर्त॥ ॥ यंचमूल्यावकासमर्था, नास्तेनपुरुवदला॥ मूर्ध्वागतावलीच
 ति, काथेर्दिपलिकेविमेश॥ कल्याणकस्यवा, रुनचतर्सीनामतस्यर्त॥ सर्ववताविकावाणां, नमर्तयनर्ममर्त॥ कार्य४कषायादिपुलाष्टताये४, वालीयकल्याण
 कयादकल्क४॥ वासंयर्त॥ ॥ हिउसोवर्चलवाधे, दिपेलसिधेताटकी, चउठेलगवांमूय, सिद्धमन्मादनातनी॥ हिंवायंयर्त॥ उन्मादाविकान४॥ ॥ वातिकीव
 मिहि४याये४पिहंवायाविनवने४॥ करुजं वमनीधीमा, नयस्मानमयाववत॥ ततस्तीक्ष्णयंजीत, हिषकसम्यकयबाधनी॥ सर्वत४उद्धदहस्य, त्याइन्मादहरीक्रिया
 ।मनाकातिर्कजयेवलाकन्यावावतस्यवा॥ अजर्तहयपस्मान, मन्मादयविणेपत४॥ यक्षीहिउववावको, निषलसुतामये४॥ साजमूयनयस्मान, सोन्मादनाव
 ताजनी॥ कथितान्मात्रलान्मृजा, न्मृगानीयवाकथा॥ सवाभान् वसुमूखलपिष्टवही४यकल्ययत॥ अपस्मानत, थोन्माद, सूर्यदंडुगनादिता, विषयीतजलासतव
 ता४सूनमनायमा४॥ प्रथाकृर्तसून४पिहमयस्मान, नमर्जनी॥ तदवसर्पिषा, यकंधूयर्तयनर्मस्यर्त॥ कर्कपाकि, राजा यस्य, स्वदाहसादिनीतता॥ दणमलीजलकस्य
 कल्याणायन्यथाजयत॥ य४वादत्कीनरुकाणी, माक्रिकनवनावज४॥ अपस्मानंमहाधार्न, सुविनीकजयंयर्त॥ ॥ गलरुवहथेन, पुादणमूर्त्तगतावनी॥ नास्त्रामागे
 कल्कप्रपायसर्वातीला२मसा२ नाती३ अहि४पाक॥ १०॥ १

धिकासिक्का कथं ददयल हवत् विदानी मधुकमदे, दका का ल्यो सिता तथा ॥ खरु नाही नम दी का मज्जरा गग ख न कथा ॥ वत सम्य दत स्या मे १ य क वी स प्यि न ह मी ॥ म
हवत स सीरु लु स वी प स्या न ना गती ॥ ग ना म्मा क पति प्या य ह ती य क व उ र्थ का ना या म्मा ल श्री र्ज य स्य त् सर्व ग्र ह वि ना गती ॥ स्वा म का ग ह न वे व गु का र्हु व वि णो
धती ॥ महा य न स य त् ॥ ॥ अ व मा या न्ति त् का थ द त्वा षा ठ सि की ज ली पा द णो ष य क ह व म ष ४ का थ वि धि १ म त ४ ॥ ॥ वा श्री न स व वा क ४ न र व प यि हि न व व
। य ना ल स प्यि न्मा द ग्र हा य स्या न ना गती ॥ वा श्री य त् ॥ ॥ क षा णु क न स स प्यि न्मा द ग गु ले य व त य ष्ठा क क र्क त द्या ना द य स्या न ह न प नी ॥ क षा णु क य त् ॥ ॥
गा न क ड स द ध म्ना की न म्मा ४ स मे य त् ॥ स र्ज व उ र्थ का म्मा द ग्र हा य स्या न ना गती ॥ ख ल्य प व ग य द त् ॥ अ य स्या ना धि का न ४ ॥ ॥ अ र्ज ग ४ स द त म्मा मि त् स म्ना ह
वि न व ती ॥ स्ति व म्ना ल व ल स्या इ व अ म्मा ता म या प ह ॥ य ठ ल रु ल के र्थि र्थ आ वा त ह ना ल य ४ वा या ल क द ता य ४ प न म्मा त वि ता ग ती ॥ प व म्ना ला व ला सि र्ज की न वा
ता म या ह ती ॥ ती ता म्ना स्ति व न का र्थे र्थ ता म्ना म्मा त ग म्मा त ॥ वि का न त उ वि र्ज य इ स स वा ज गालि ती ॥ वा जि गी धा व ला मि त्वा द ग म्ना ली म हो ष र्थ ॥ द ग ड न र वी ना म्मा य ग
ला म्मा न त ना ग ती ॥ आ नू य म त्स्या मि ष वे स वा ने न र्थ ४ य द हा ४ प व ता य ह ४ स्या त् स्ति र्थ उ र्थि द न म्ना ल सि र्ज ग म्ना षा धि यानि ल हा य द ह ॥ नि न क्ति पि सि र्ज पि र्ज

४०

स्ति र्थ उ उ द ता न्ति त् ॥ क षा म नि व र्ज य क वे ण वा न र्ति स्म त् ४ ॥ का का ल्या दि ४ स वा त ध ४ स र्ज म्ना द य र्ज य त् ॥ सा नू य म्मा सि ४ स र्जि न ४ स र्जि न ह स मा य त् ४ ॥ स
र वा ४ ॥ स र्ज ल व ल ४ स र्ज ल व नि की र्ति त् ४ ॥ त ला य ता ह क वी त् सर्व दा वा त ना ग ती ॥ का का ल्या दि र्ज ग म्ना का वा ष व र्ग कि र्ति त् ४ ॥ वा त धा रु द दा या दि र्ज गी
मो दा ठि मा दि की ॥ स र्जि न ह य ४ स र्जि न ह ल व र्ज स र्ज वा दि की ॥ अ म्ना दि र्जि न्म र्ज का र्ज का का ल्या दि र्ज य दि हि ४ ॥ आ मा न य ग त वा त द्वा र्ता य य था क म ४ ॥ य य ४ य द व
ला या ग ४ स र्ज ना र्ज स र्ज वा च ना ॥ वि उ क ल य वा ४ पा ण क र्का ति वि वा रु या ४ ॥ म हा वा वि षु ग म ता था ४ ४ य द न ४ ४ ॥ क षा य द ग ति र्ज वे र्ज व ली या धि के मु त ४ ॥
त न ष द न ला या ग ४ स र्ज ना र्ज य य ४ ॥ य क्ता न य ग त वा पि का र्थ स र्ज वि न व ती ॥ व स य ४ ला ध नी या य वा स्या य ल व ला रु ना ४ ॥ का थ वि मि ग त वा पि वि धि र्ज
स्ति वि णो ध ती ॥ आ ता दि षु य कु पि न का र्म यानि ल हा क म ४ ॥ अ हा र्ज गी य ता हा य म र्ज ता ल य ता नि च ॥ स र्ज म्मा सि र्ज सि ना या क क र्था च्चा स र्जि मा क र्णी स दा
य ता हा ति क र्म व न्ध ना म्मा द ता नि च ॥ सा य स म्ना सि र्जि पा क क र्था च्चा न वि व क ल ४ ॥ ति र्ज र्जि ग त वा यो पा लि म र्ज न त ना नि त ॥ ना ठी द ला रु ति हि ष क व
ष य ल्य व न व ली ॥ पु क या त नि ल का र्थ पु क षा ष वि कि ति त् ॥ व क र्जि क ल्प न्ग र्ज वा य म न्या ग र्ज तथा ॥ व म न ह ति न र्जि ४ क र्ज ले त य या जि त् ॥ मा ष व ल पु क

[illegible]

व्यालकम्भहता॥ हृदयं यदि वा पृष्ठं मृनतं कमलं स नृका कुशा वायु र्यदा कथ्यते हृदयं ककुमादिनेत॥ वात प्रेक्ष्य मूल्यावतव ककुमपावत॥ भेहमा
सुनसेवापि प्रेक्ष्यते विवर्जयत॥ पित्तव्यादि नृजस्तृतीयेति हृत्या॥ सुखाम्बुना॥ पित्तव्यादि हलवर्णं संचर्तुं नहि युवा॥ आध्यातलेयतेयाल तापे च हलवर्ण
य॥ दीपतं पावतं नैव वसिष्ठा येन साधतं॥ प्रत्याध्यातु वमनं लघनं दीपतं तथा॥ प्रत्यशीला क्लिप्तकया उक्तान् विद्वद्विजिया॥ चूर्णं हिंदादि कवापि सम्य
तविलेपत॥ विस्तार्य र्वजपां गन्धदाह हृष्यपादया॥ काष्ठुणी धविका नवविका न वातकण्ठके॥ सेनायथा कानि विध्वं विकिसावात वागवत॥ जिह्वा क्लिप्त
क्रिया प्रेक्षा सामान्या व्यातथा दित॥ सिनाग्रह उक्तं हृष्या सिनाग्रह मश्रु क्रिया॥ सहनिजा ववा कृष्ट पित्तली विष्वहं घर्षा मृजा जीवाजमादा च यक्षी मधुकर्म
वी॥ अतानि समहा गतिस्तु कुरु प्रतिकानयन॥ तच्चूर्णं सुपिषालो अग्रहं हृष्यनन॥ एकविंशति नो हल हृष्यवृद्धि धनानन॥ मय ईश हिति धोष मरुका
क्लिप्तं स्वतः॥ जठराग्नि मूकलं लहृकल्यालका जयत॥ कल्यालकलह॥ ॥ उत्रुर्लकी कुणी र्वध्व उत्रुवी विहला मृता हृदाम्ली वला नास्त्रा उत्रुवी विष्वहं
॥ पित्तवद्वन उत्रुलन गृध्री र्वज य उत्रु॥ विना ध्या न उत्रुवी जानि पित्तु की नलया वयत॥ तत्यायसं कटी गूल गृध्र्या यन मोषधं॥ र्वचमूली कषाय उत्रुवर्ण लहृ वयतं
॥ की नलो नलो र्ववा पित्तवद्वन उत्रुवी नका॥ आमासमालम्बयाय कायमा वात नका हृ॥ हत न कति लहृ ना विधि ४ कले ४ यजमन॥ २

रीदत्वा यदुत्तुलीनास्मान्मृकासिधुक्तता केन उमृक्त के ॥ जीवनीयवलाया ४४ पवदक समैरुषका हस्तक म्यानि ४४ क म्या वाक्का ॥
 वाविशैक प्रगुले व के प्रताप वदा नृणां विनृच्या मदिनं कृत्वा ॥ ४५ म्या मयता न क ॥ वस्तुम्य ३३ तपा ते नृणां वन वयथा जयत ॥ माषत लामिदं प्र ३३
 द्रजक गदाय ह ॥ माषत ली ॥ **कह माषत ली ॥** ॥ द्विपं व मृलीति ४ का थ त ता त प्रा उ न हि उ ले ॥ माषा र क सा धयि ता तान्ने रू हं व य उ उ ली ॥
 हयि ता उ वि य व रु ल य रु य य ४ सम ॥ कल्का र्ध स मा वा य त ता त प्रा उ न हि उ ले ॥ माषा र क सा धयि ता तान्ने रू हं व य उ उ ली ॥
 रु ल य रु य य ४ सम ॥ कल्का र्ध स मा वा य हि ष गृ य नि वृद्धि मो ता ॥ अश्व ग न्या ग ती ना र व ला ना स्मा य सा नि ली ॥
 न नृवा ॥ मा उ ली ॥ रु ला जा श्री वा म र्ण त पृ ष्ठा का ॥ ना ता व नी ॥ रु न र्क पि पली मृ ला वि य की ॥ जीवनीय ग ली सर्व स ह स्य व स स न्य वी ॥
 त स्या ध सिद्धी व ला य मा षत ल मि दं म ह ॥ वस्तुम्य ३३ तपा ते नृणां वन वयथा जयत ॥ य का पा त ह न र्क र्क ॥ अदिनं सा प त क क ॥
 अ व वा रु क वि नृ च ॥ र वी ज यं तु ल या वा पि ॥ हस्तक पालि न र्क य ॥ क कु वा म न या वा पि ॥ हस्तक पालि न र्क य ॥ क कु वा म न या वा पि ॥
 हस्तक पालि न र्क य ॥ क कु वा म न या वा पि ॥ हस्तक पालि न र्क य ॥ क कु वा म न या वा पि ॥

४३

हे पश्चादमिदमादिना ॥ महाभाषते ली ॥ ॥ कंतकी मूलवला र्जिवलानां यदुत्तुलं त व स त वि प की ॥ त ल म न ल्य उ वा द सि धि मा नृ त म स्ति ग र्वा य हा ति ॥
 कंतका र्थ त ली ॥ ॥ वा जि र्ग वा व ला वि नृ द न मृ ल्य मृ को ल्य ती ॥ ४६ म्या र्क ल म न रु पा त व सि ष ग स्य ॥ अश्व ग न्या र्थ त ली ॥ ॥ व सा न क र्क स व स त प
 की त ली य व य रु त ला म या रु ॥ त स्या उ न स्या नि हि व त ना ग ॥ य क्ता वि नृ ला ॥ व ३३ ॥ ४७ ता ॥ व सा त ली ॥ ॥ य सा न य्वा रु ला या मा ॥
 ग मृ ल त ॥ ४८ त ली य थ वा नि ॥ ४९ य का स म सि त ॥ त ला र क य उ ४ की न द धि उ ली धि का जि की ॥ द्वि प ल य क क का न य सा न य क र्म न्य व ॥ स म जि
 शा नि य द्वा क ९ पालि के जी व नी य क ॥ ५० य व य ला त द वा वि नृ रु ला त का ति वा य व द स्या दि ता वा र्क ह सि स न्धि सि ना ग र्क ॥ य सा ४ सा ह स्या ति य रु
 व ल व न्म नि य रु य ॥ अ र्क सौ व र्च त र्क य ॥ ॥ की ल र्ज र्ज वि ता मा ती वा त र्क वि ता न्म ती ॥ य सा न य ति वा सा ता क त य का य सा वि ली ॥ म य
 म य सा व ली त ली ॥ ॥ य सा व ली ग र्क र्क य व ला या म ली ॥ ५१ य द न्धि स म त ल द धि द या न्म का जि की ॥ द्वि पु र्ण व य या द ला क ल्का त द्वि प ली कां रु
 था वि य की य ली मृ ल मृ र्क स न्य व व र्वा ॥ ना त पृ ष्ठा प द वा र्क ना ता वा न ना य य ली ॥ य सा न य ग न्या ति म र्सी रु ला त का ति वा ॥ य व न्म द्वा नि ता त ली ॥

वातलेश्मामयानजयत् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ वातनागान्वाहति ॥ ककुक्षिमितयुतं लघुधूसीखरुकादिर्ह ॥ हनयति नाग्रीवसूतं वायुनिधकृति ॥
 ककुक्षिसावलीतले ॥ ॥ समूलयजमत्याद्यस्य कालेवसावली ॥ गतग्रहसहचरास्तव आशततथावलासुगुफावर्गधकेतकीनालितनी ॥
 पंचवृत्तलतायेव सुलारुकीरुके ॥ मधुमांसवर्गं पयश्चैवारुकारुकी ॥ दधारुकेसमावायुपावयन्मृदनाग्निना ॥ अवातालुपदातआमा
 जावर्धयलातेका ॥ तंगर्भमदनकृष्टं कीर्णं मृकलवर्ध ॥ वास्त्रासंभवपिपल्यामीमीर्माजिष्ठमहिजा ॥ तथा मदा मदा मदा जावकर्षरुकी वृत्तशततय
 व्यावायुतर्वातागवदवदानव ॥ काकोलीकीवकाकोलीववोरुजातककथा ॥ येषां यत्नासुमातेतान्माधनीयावसावली ॥ तानिपक्वन्हीतवर्षसिद्धि
 पूतत्रिधापयत् ॥ यद्यप्यसदातया तन्मात्रिगदित ॥ ककुक्षामेधयद्गतां वामनातीतयेववायेमृद्यतिवका ॥ यद्यहमास्ति सत्ययथा वाताणा
 लितइकातीवातापहतवतसी ॥ मीमंयकीलपुकार्तावाजीकवलमहमी ॥ वसीयातेतथास्य गतस्यैववपदापयत् ॥ ययकीसमयस्याद्यवातजानविवि
 धान्गदान् ॥ सुफसतिकायसाविलीतली ॥ ॥ ककुक्षीसुठलाकार्थं दण्डमूलीतथापनी ॥ सम्यक्कुजसमावायुमोक्षालाविद्यावयत् ॥ यादणधोरुकी

४३

तलीकीर्णवेवगतावनी ॥ जीवतीयसमंयुक्तं वत्तानास्त्रासुगंध ॥ जटिलासन्नतावल का लवातुक ॥ कर्षयममादाय सर्वमतसुथकपथक
 ॥ मीजिष्ठा लोधलाकावपथकं कुलमीर्मा ॥ आरुकेवकेलेदवा विधिनातद्विद्यावयत् ॥ ककुक्षीमिदं तलीहानीतनयकोनिर्ह ॥ यान्त्यैवमोतथास्यो
 नस्यैववपनस्यते ॥ सवाज्जोर्णकेवाततयेवासकनाइव ॥ संधिमज्जागर्भेवसुक्रास्मान्निधेयहिकाना ॥ समयनाताविधायैव नृत्तवैद्यविनामज
 ॥ अयस्मातीतथास्मादुशकयकावतकृकी ॥ दण्डपतानकेधानामामवातसुदानुलीहनुसंहादिताकेयं येकायाताववाहकी ॥ लार्थपात्रुमय्यैवम
 कवर्धिसुदानुली ॥ वतलेलवलैधार्कनवालीगजवाकना ॥ तालयत्यापुसुवेषादिनिर्वातसीहवी ॥ अयागप्रद्विधस्यास्य नागर्हनीवाधीयत् ॥ अस्मिन्
 नृत्ततहकिपातादस्यनर्तथा ॥ राजनाकुशवाताका नस्याहर्गर्तथा ॥ यकाणयगतविस्तिनिर्वातसर्वकार्यकी ॥ ककुक्षीमिदं तली ॥ ॥ गारवामूल
 पले ॥ यसावलीउलाति ॥ सुक्रवर्धतुलं चिन्ताया ॥ अउलेउलं नृवृकता ॥ वास्त्रासिनीयातुला ॥ दवाकाचसकतकापटनेतनि ॥ काश्चकं रुसिक ॥ ना
 यतेलघुटुआमृकलसोदवारकेमछुन ॥ पुकाकगनर्मासदधीइवसत ॥ कीनाइदवारुकी ॥ स्पकोककटिजीवकायदिकवाकाकोलीका

उत्तानेवप्येनाणि ॥ अणयथायमंरुक ॥ २

कच्छनी। ॥ १५ ॥ ता घनसा न कृत्स्न सत्ता का सी न सा सी त ॥ १६ ॥ काली या त्य त व प्र का क य नि ण क काल कं ग्रन्थि के ॥ १७ ॥ वधि या ह य वा न य ग क द का
 जा ती रु ला सी न हि ॥ १८ ॥ प्री वा सा म न वा न च द न व चा से ले य सि न्धु इ वे ॥ १९ ॥ तै ल हि प क ठ म् न णि त लि का व धी व क द्ध न के ॥ २० ॥ क स्र ना द न म् न के त क
 न र वा धी मो णि धा म् न ॥ २१ ॥ को की ता र्ज ज न ल की रु ल त य सो मा स ता का म यै र् न्ना त वि रु ला प्र के न म हा ण्मा माल वे ग चि ते ॥ २२ ॥ स था र्थ लि रु ले म
 हा य से य ध न्म द न पा ध र्मि ता या ता र्ज न व कि न स्या वि धि नो त मा न र्द ना न य ॥ २३ ॥ स वा धि न ग त क था व य द ग र्म धा म्नि म ज्जा वि ह ॥ २४ ॥ ल षा न्का न ध ये
 रु का धि न म य न्ना ता वि धा ना म या त् ॥ २५ ॥ अ रु त र्द ह य ति कि र्ण व क र न य न्ना न व यो व र्त व द्ध स्या पि न र्द क री ति स म ह र्द धा स ग र्ध उ द ॥ २६ ॥ प्री ता त त ज न म्पि द
 ज न ल पि स त सू त म् न ता रु न्ना ॥ २७ ॥ शि का ॥ सो य म्प ग ता य रु ल त ॥ २८ ॥ अ रु व नि मि ना ॥ २९ ॥ रु न्ना द्वा स द री रु व नि म न्ना ग म वो ह या कं ज वा ॥ ३० ॥ म हा स सा नि ली
 त ली ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ था ग र्ध क च का न वि ह ति प्र लि म र्द व र्ण ॥ ३२ ॥ पि ज ना हा ला दे ति का क द्वा पि नि ल य उ ल ना न दि ता वि क णा सा ॥ ३३ ॥ द षा ता या त रु र्मा सि मि सि मि क
 व र्त व र्म णि अ रु ता क सा ध षा ॥ ३४ ॥ रु नी या व न म्प ग त न्ना वा ज या ॥ ३५ ॥ प दि रु ॥ ३६ ॥ क न त ल ज ल म ॥ ३७ ॥ अ रु य पि ता म ह रि ॥ ३८ ॥ प न न पि त द द र्वा वि क नी य ॥ ३९ ॥

व द्वा रु व ति स प दि न क र्ण ली प्री त व र्ण न रु व ति म ग ना हि ॥ १ ॥ क हि मा सो वि का न ॥ २ ॥ क स्र नी क र्ण ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नस्यसंप्रकाशं ॥ अथवायवस्य प्रतः प्रनवपि संपादयन्त्या ॥ सा स्त्रीरुततस्मिन्नवतार्य हि मायलपर्यं हिंसा चूर्णपला दधिक इक चूर्णप्रउय कपविमाल
 ॥ किमिनिप्रचूर्णपली कर्ष कर्षं वृद्धा ॥ यलमकयुक्तं श्री दत्ता स चूर्णयत्नेन ॥ उपययस्यत पातं ययतायस गभिसलिलता ॥ कृत्वा हनविहारा वि
 हस्यमयया प्रसर्वकालमिदीत दत्ता प्रिवात सा लितम कजमथर्षं दजं विना कृत्वा जयति प्रतिपविमर्षं सुहृत् वाता नज्या विखलका ग कृष्टु ल्मयथ
 दनया प्रमहा प्रामेत्ता निप्रवि वत्तपमहपित को प्रतालय सा उपसतं तिस्रमा त ३ काल व साधति सर्वग दात ॥ अहिरुय क वा मा प्र याति के सा न की नूपम ॥
 को **मायका** पु तुल ॥ ॥ प्रसुमक पु ह आ प्रार्थ प्रसु मु पु तु ला ॥ प्रथमं विरु ला या प्र तस्य मालं विनिर्दि लते ॥ सर्वान कज संयु कं का थय न्न लो मु सि पा
 दा ली प्रिय प्रिय प्रत न प्र वधि ययता ता वत्त व क सा य कं या व त्सा ड त्त मा गती ॥ दती या प्री वि ठि ज्ञा ति पु डी वी दि रु ला त्त व ॥ तत ग्वा र्थ य ली प्रतः ॥ दती या दा प्र ति
 प्र ति ॥ कर्ष तु रु रु ता या प्र स र्व म क उ का न यत ॥ तस्मि न्प्र मि र्ष वि क यो क र्ष उ ति श कृ प ह व ॥ तत ग्वा पि नि व लं क्ता ता तस्य मा ज पि या ज य ता वा त न की त था क र्ष ॥ पु
 दजा न नि मा द की इ प्र ख लं ह रं वे व वा म वा रं र ग न्द रं ॥ ता आ य वा त ग्वा य थ न्प्र स र्व तं ता न्वा पा रु ति अग्नि स्था ति मि रं प्र र्व म म ता र यो हि पु तु ल ॥ **अमता य**

४२

पु तु न ॥ ॥ पु तु ल या क ॥ प्रथमं विरु ला प्रसु ज लं वा ड मा र कं ॥ पु तु ला ॥ क उ व ॥ मा क ॥ **समप्रसु वि लो य त ॥** ॥ अमता या प्र वि प्र स र्व
 सु म कं उ पु तु ला ॥ प्रथमं विरु ला प्रसु वं वा रु प्रसु मे व व ॥ स र्व म क उ स र्व प्र प्र थ य त्त ग ल्म सि ॥ प्र न प्र व त्ता द ला प्र या वा र्मा ड त्त मा
 गती ॥ दती वि ड क म ला ता क ला वि प्र रु ल दि की ॥ पु डी मा वि ठि ग ती प्र थ का र्थ य ला वि ता ॥ रु रु क क र्ष म कं उ स र्व म क उ प्र प्र य ता सि र्म म प्र किय रु
 ड अ म ता पु तु ला ॥ प्र तं यं था व कि व लं र वा द द न्प्र पि डी वि लो य त ॥ वा त न की त था क र्ष ॥ तिस सा द र्म ॥ इ प्र ख लं प्र म हा प्र प्रो म वा रं र ग न्द रं ॥
 ता आ य वा त ग्वा य थ न्प्र रु न्प्र ता स वा म या त र्थ ॥ अग्नि स्था ति मि रं प्र प्र म ता या पु तु ल ॥ प्र न प्र व त्ता द ला प्र या वा र्मा ड त्त मा
 क म र्वा ता प्र त र्वा म ता के प्र वा ॥ ज र्ण धा दि क ल कं ॥ प्र थ क द न य ला न्प्र प्र ल कृ च्च प्र ति का न य त्ता ॥ त द र्ज ल के ना व कं च र्च स म द य र्ध ॥ स्था य
 त्स रु रु हा ॥ पु मं र्वा र क र्म य र्थ ॥ प्र थ प्रसु न वा ला य वि र्म मो ति य ल य थ कं न रं ॥ र्वा र दि प्र व र्ता ता य था वा र्वा व लं न र ॥ वा त न की क य क र्ष का थ
 प्री ला प्र स र्व ॥ वा त पि रु क रु क्ता य र्ण ग त न्प्र प्र र्धि मा ता ॥ रु रु क ना ति प्र र्ध व नी य लि त र्वा र्ज रं ॥ **योग सा मा म त ॥** ॥ दि वा त्त प्रा गे र्म ता य आ

५४. प्रातः ४ प्रातः निधिविर्त ॥ सामवात कटी गूल पायता नूय नागन ॥ यव का वसमायुकी ॥ १२५ सी व द्वा द्वा तिथी ॥ कर्षनागव द्वा स्य का जि की त पि व स्य द ॥
 श्रमवात प्रणम त क रुवा त ह न प न ॥ यव का ल क व द्वा स्य पि व इ श्रु न वा विना ॥ मन्दा नि गूल गुल्मा ग १ क रुवा च क ता ग न ॥ श्रम ता ता ग व ए स क व म लु
 तिका व द्वा क १ क र क र ॥ मन्दा व ल लु पी त मा मा ति ल ना ग न र था त ॥ ॥ मणि म न्द स्य हा ले दो य मा न्या सु द द द ड हा ग म थ या ज मा दा या त ग वा हा ग
 य व की द ल द्वा व ह नी त क १ ॥ ल क द्वा वी क ता १ ॥ १ ॥ मन्दा व ल लु त क र स पि बा श्रु द क न वा ॥ पी त ज य था म वा त ॥ गु ल द द मि ज न ग दा त ॥ श्री हा त र दि
 ल ला पी ना ता ह वा र मा मि वा पि व थ ज ० वा त्रा ग सु था व ह रु या द जा त वा ता नू ला म त मि द द्वा व द्वा त र म त ॥ ॥ व द्वा म न र द्वा ॥ ॥ ॥ अ ल व द्वा ॥
 क र की ॥ १ ॥ वी व द्वा द्वा र क ॥ पि य ली ह व ता म र्क व द्वा स पू त र व ॥ ॥ वि रु लो ना ग र व व ल क द्वा तिका व य त ॥ मन्दा व ल लु त क र य था मा स न स न वा ॥ म
 म वा त नि ह त्या ॥ १ ॥ य थ र्म स पि स मि त ॥ ॥ अ ल व द्वा र्म द्वा ॥ ॥ स त प द्वा वि ठि क ति स न्ध र्म म नि र्म स म ॥ द्वा म द्वा म ता पी त म नि र्म स पी य र्म न ॥ ॥ वि रु व
 वा वि ठि ॥ १ ॥ क द्वा ज जी स यो क र ॥ हा ग म ह न मि द द्वा पी त म्वा ता म जि रु व ॥ वि रु की पि य ली मू र्म य मा ती का व वी म्ता ॥ वि रु म न्द ज मा द य जी न

५१

५४

की म न दा नू व ॥ व द्वा ला से न्ध र्म द्वा ना स्या ए त क र व द्वा म् क ॥ वि रु ला म र्क वी र्म ॥ १ ॥ गु ली ल क र य जी ना ली ग प र्म प र्म व ल क द्वा तिका व य त्वा य व
 थ त ति व द्वा ति ना व न्मा र्म १ ॥ १ ॥ स म र्म स पि बा श्रु द क न वा ॥ पी त ज य था म वा त ॥ गु ल द द मि ज न ग दा त ॥ श्री हा त र दि
 य म म ता य म ॥ श्रम वा त य वा ता पी त कि मि इ रु व ना त पि ॥ श्री ह उ ल्मा द ना ता ह इ न्मा मा ति वि ना ल य ॥ अ र्मि र क र त दी र्म त जी व दि व ल क ता ॥ वा त
 ना ग त ज य थ र्म स पि स मि त ॥ ॥ अ ल व द्वा र्म द्वा ॥ ॥ स त प द्वा वि ठि क ति स न्ध र्म म नि र्म स म ॥ द्वा म द्वा म ता पी त म नि र्म स पी य र्म न ॥ ॥ वि रु व
 अ ल व द्वा ॥ ॥ क र की ॥ १ ॥ वी व द्वा द्वा र क ॥ पि य ली ह व ता म र्क व द्वा स पू त र व ॥ ॥ वि रु लो ना ग र व व ल क द्वा तिका व य त ॥ मन्दा व ल लु त क र य था मा स न स न वा ॥ म
 त सो ल र्म व द्वा ली ल ॥ वि रु ज न र स ॥ ॥ क र ना वा च क ता ग न ॥ अ ल व द्वा र्म द्वा ॥ ॥ स त प द्वा वि ठि क ति स न्ध र्म म नि र्म स म ॥ द्वा म द्वा म ता पी त म नि र्म स पी य र्म न ॥ ॥ वि रु व
 ला क मा त ॥ य थ र्म स पि स मि त ॥ ॥ अ ल व द्वा र्म द्वा ॥ ॥ स त प द्वा वि ठि क ति स न्ध र्म म नि र्म स म ॥ द्वा म द्वा म ता पी त म नि र्म स पी य र्म न ॥ ॥ वि रु व
 त क र ॥ १ ॥ क र ना वा च क ता ग न ॥ अ ल व द्वा र्म द्वा ॥ ॥ स त प द्वा वि ठि क ति स न्ध र्म म नि र्म स म ॥ द्वा म द्वा म ता पी त म नि र्म स पी य र्म न ॥ ॥ वि रु व

५४

[illegible]

जर्षापत्यकंपता१छात्र२२काजिकय१२६वहि४पाक४॥३

[illegible]

नस्विदः १ पावनं हलवहयः ॥ कावचं प्रतिष्ठितं ॥ सुसंस्कृतं ललातया ॥ आद्युका नीहि पवनः सुखाहं च यजयत ॥ तस्य गतलाहियनस्य स्वप्नवसु
 स्वावहाशावातात्मकं हं विनयनं ॥ स्तुतयुक्तं सुकलं न्यूपशंसे त्वं वीर्यवतः ॥ सलावः सहि उ सो व च त ज दै मा य ॥ ललति नन्न कां रं रं
 ब्रह्महिंसा विधत् ॥ हिं उ प्रति विषा वाष व वा सो व च ला ह या ॥ बलापुनर्न वे न उ व ह नी द्र य ए ग रु ने ॥ सहि उ ल व लं पी रं सु यो वा न न रं रं यत ॥ उ
 म्बु न्ध ह या हिं उ प्रो क्ते न ल व ल उ यी वि व य वा मृ ता वा न ल ल उ ल्मा प त लु की ॥ वि च म न उ र्ज म ली का थ पि त्वा उ ल पि वे त ॥ हिं उ सो व च ला प त ॥ स यो रं
 ला ति वा न री ॥ हिं उ प्र क ल म ल ला र्था हिं उ सो व च ल त वा वि ल्पे व उ य वा क्ता थ ॥ पी त ॥ ल ति वा न री ॥ त द्र इ न व य व का थ ॥ हिं उ सो व च ला न्ति त ॥ य मा ती
 हिं उ सि न्धु क्ती न सो व च ला ह या सु ना म उ त यो त वा वा त ल ल ति ह द ता ॥ सो व च ला नि का जा जी म नि वे दि उ लो ह ने ॥ मा उ लं ग न स ॥ पि द्वा उ टिका
 ति ल ह द त ॥ हिं व म्बु क क म ल कं य मा ती का वा ह या से न्ध व उ ल्प र्गा व र्ण पि व द्वा न लि म उ मि थ ॥ ल ल व द्ध र ति ल उ लि वा य ॥ ति ल ग्ध उ टिका ति ला
 जामे य ऊ ० ना य नि उ टिका ग म य त्या उ ल ल अ वा ति ह स ह ॥ ना हि ल पा ज य क्क ल म द न का जि र का चि त ॥ जी व ती म ल क ला वा स न ल य न्ने ह ॥ उ

७३

उलालियवाः १ कीनं सारिष्यातीति न च तं ॥ जीगलानि व मां साति रुषजं पिरुष्टं लितां ॥ पिरुष्टं लवमनं ययामि न से सु ॥ का १ स य ल ति मे ॥ पी ता व
 गहा १ प्लि ता १ सु वा ता ॥ हा अ ति का त्या ति ज ल ह ता ति ॥ अ न्या ति स क्ता ति व नी त ला ति सु व न्द ता जा ध क वा स नी ता ॥ मा नि वा उ ह ता ॥ मा नि रं ज ना
 ति व स र्व ग १ य नि दू र्मा ति ता य स्य ल ल म्भा य नि ति श क्ति य त ॥ वि न व ती पि रु ह न व स र्म नं सो ग्ध ल म्भा ल ल ला व का ती ॥ स न र्प लं ना ज म धु य प न्नी य ता
 सु नी ता म धु म य क्ता ॥ ॥ क र्था के न पि रु ह व स ल ल वा न वि द ह रु पि त र ति मा जा ॥ य व य या म ध नो व मि थ ॥ मि व न्द नी ता म न रं १ सु खा थी ॥ वा यान म्
 वि द्या यी वा ज्ञा य ती ॥ ग रु ता मृ ता ॥ पि व न्द ल क्ते न स य १ पि रु ल ल ति ह द ती ॥ ग ता व ती न स को ड य क्ते वा त १ पि व न्द न १ ना ह न्ता य ग न्ध र्थ ॥ स र्व पि ता
 म या व ही ॥ ग ता व ती म य द्वा क्ता वा याल क स ग म क ने १ ल त नी त पि व र्था य ॥ स उ उ को ड म क्ते न ॥ पि रु स द ह ल ल र्थं स यी पी त नू जा प ही पि रु ला ति म्
 य द्वा क्ता क द्वा न व दि १ सु ती ॥ पा य य न्म धु र्म मि थ ॥ दा ह न्ता य ल क य ॥ व रु ता १ ग रु ने न उ क ल का ले क्ता लि का १ पी ता १ पि रु ह व र्ण लं स यो ह न्द १ सु
 दा न र्ण ॥ अ लि का पि रु ल ल र्थं ॥ वा यी व र्ण म्भा क क ॥ ॥ ल म्भा त्म क र्ते य न कु द ता य सि ना वि न क म धु मी य पा ती म धु ति ग म क म य वा नि चि ता न्म

वत नृका न क दू कां प्रसूत ॥ लवणय सय कं यव को ल स नाम ॥ सुरा धु ना मूता पीतं क हूत ले य ना य यत ॥ विल म ल म ये व छं वि व ती व व ह व ऊ
 ॥ हि उ से न्धे व स य कं स य १ २ ल ति वा न ल ॥ म अ ली ग न स वा पि सि यु को थ म थ प न ॥ स का ना म धू ना पी त १ पा र्श्व ह द्र मि न ल न न ॥ ल म ग ल ह न य य
 र्ध व को ल न सा धि ता ॥ वि दा नी दा ठि म न स १ स वा ष ल व ल नि त १ ॥ को ड य को ज य त्या छ ॥ ल ना म थ य ह व ॥ ज ले छ रु ल म लो ति व ह ती द य ॥ स क नी
 य धि न्य १ स ह म वा व सि ह प च्छा क्क वालि का ॥ उ ल्ये नो १ रु ती ता र्ध य व का न य ती वि व त ॥ य थ क पो ष ह व १ ल र्ज ॥ रु न्या त्से व ह व त थ ॥ **च नु द्वा द श की ॥**
 ॥ म म उ छ म छु र्ज ॥ वि रु ला न र्ध स य ती ॥ वि ति ह म धु स पि र्था १ ली रु कि वि दो ष जे ॥ सै र्वे र्ध स ल व र्ज सा हि उ यो प स य त ॥ उ यो द क न त ली र्ज १ ली कि
 वि दा ष ज ॥ आ म ग ल के यो का र्था क हू ल ल वि ना ल ती स य मा म ह र्ज स र्वे य द न व ल व र्ज ॥ ॥ **च नु वि ल व ह ती द य मा उ ल रु पा वा ल वि डि के र**
 म ल क न १ क षा ष १ स का ना हि उ ल व ल न र्ध त ल मि छ १ ॥ **प्र ० १ स म र्ध ह द य स न र्ध प य १ ॥ च नु स क की ॥** ॥ सा हि उ छ म र्ज यो ष य मा ती वि
 उ का ह य १ स का न ल व ल न र्ध वि व त्या त १ स र्वे मू ता ॥ वि न्द वा ति ल ल र्ज पा व र्ज वा क्क नी प त ॥ वि उ कं प्र कि के न १ उ ली ध न्य ज ले वि र्ज ॥ ल ला

३४

मा रु वि र्ज १ ध म सा हि उ वि उ से न्ध व ॥ नी य क से न्ध व य थ ॥ ना ग न य व उ १ स मी ॥ च र्ज ल ल य या छ मी द र्था १ न य दी प नी ॥ स मा कि र्ज व ह त्या दि पि व ति
 ला ति ला त्म क ॥ वा मि र्ज वा वि र्ध र्ज य ॥ कू ल मा न त पि ह ज ॥ प त ल वि रु ला नि छ का र्ध म धु र्ज पि व त ॥ पि ह ल म क न च्छ दि दा रु ल ला य ल न क य ॥ पे
 रु ज क रु ज वा पि क्रि या या का थ ता य थ क ॥ न की क स य र्ज जी त ता र्ज ल क र्ध पि ह ज ॥ व म र्ज न व र्ज व वी क षा व ल व र्ज ॥ क ह र्ज क र्ध पि ह क य थ या
 गी ह षा जे त ॥ च र्ज स म र्ध क हि उ म ह १ प धा ता १ उ ल मू ता क रु स मी व र्ज र्ज वा म ॥ क त्या र्ध य ह ज ॥ ना हि वि न्द वि का स य य न थ य व न स न ठ दि वि
 वा न्ध ॥ का थ न र्ध पा त य रु ल का थ य धा त १ ति ला न्य मा त म वा ज च्छ र्ज य की व रु र्ज व ॥ हि उ ल १ स ल्य मा ती कि १ स म ल व न स ह र्ज ता ॥ **च नु का दि र्ज**
१ ॥ ॥ वि न्द न र्ध क द र्ज म ल म वा मू सा उ दि का न हि उ ल व ल ज य य न र्ज ॥ च र्ज वि व द्ध द य या र्ध के र्ज य ह म प को ल या स रु ल न र्ध क न १ उ ल्य म ल ती ॥
 हि उ सो व र्ज ती य थ ॥ वि उ से न्ध व रु म् र्ज यो क र्ज व दि व र्ज ॥ ल म ल य र्ज रु सा ॥ पा र्श्व ह क र्ज य र्ज स ल ल त त्या प ता न क ॥ सा व ल म य स क च क र्ज य
 ॥ व स स य ॥ न सा त म य स मि र्ज पि व त्या त १ य का कि त १ ॥ वा त ल म ह र्ज ली ति रु कि वा क्क नी प त ॥ हि उ दि क र्ज क र्ज य व का ना थ से न्ध व ॥ मा उ ल म न सा य

मेल प्रहसाम मग मिलिते नमस्तुल कील वी पानि लिख्य उदय वंश यत् २

हिमवर्कतः॥ यतायका उदय द्या इदावर्क विना गतं॥ मदनी प्रियली कर्षववाणे नाश्वसर्वपा॥ उठका वसमायका रुतवर्हिषसस्यन॥ आगा नक्षमसि
धुक्ते लयका लुलुलकी॥ कर्षन्ति पुष्टि पयसा सिन्न बाया कि पद्वध॥ सोवर्चलायामिदिनी मूज वृहि हत पिवत॥ जलावा यथ मथत कीर्न वाविपे
वत्तवा॥ इ४ स्यणी खनन म्वापि कमायक कुरुस्य वा जवो वीजता यत पिवे दाल वली कर्त॥ पंथमूली सत कीर्न दोका वसमथा पिवा संवेषे वापय
जीत म्वाय ककुगम नी विविशस्त्र हचद न दावर्क के मूली सम पकमेत॥ अग्रमा कं पुजि का यथ॥ सिन्धु सिन्नस्य यन्नत॥ कवज कवप जल लाल सुता
वयत कुर्व॥ उ जानजक माधत स्मिहि कं धूम मावनत॥ कुर्यापात यथा दोष नस्यस्त्रहादि जीयेत॥ वसि सुदि कवाचार्य चतुर्गुण जली पयशा आवा विना त
काथो पीतमर्क प्रकामत॥ नमय इ४ यिवा ताया४ उ को दावर्क तं नवी॥ अउर्ये गावमहाय मदिनाश्व वसाय धा॥ लालि ययाति नूहा च हि तं मेथून
भवव॥ कुरि पातं हि तं स्त्रि च मूज मल्य च हाजत॥ रु आहि द्यात पि वं न्मूय यवाग्म्या पिनी तली॥ वसा ना ग्रान सुविमा क४ प्रम म्वाणत क ना न४॥ ति
दाद्यात पिवत कीर्न खया वरक था नत॥ आना हा थय यी जीत उ दावर्क रुनी क्रिया॥ दि नूह ना हि उ ववा सुकहा से वेचि का वति विठ सुन ॥ सुखा म्वा

३४

उदय रु हसमावर्हि ४ पा ०४ ३। दवी विता रु सुय माल मिता वरि विर्य ३

नाता हवि सविका रु द्या ग ५ जो वसमी नल श्री॥ ववाह यु विद कया वरु का सपिप ली का तति विषात सु कशात॥ उ अमृता है ता हवि मूर व गा
तुधी लाज य ना उ हि ता द ताणी॥ रु वरु नीत की ग्या मा४ सु ही की मल सु वयत॥ वरि काम उ पीता को४ (यु आवा ता ह हदि का४ ना ० धूम विठ वा ४ उ मू
अवि वाचि ना॥ उ उ रु हसमावर्हि निधे या ता रु हल नत॥ वरि उि क र से व व से र्प प रु धूम क व म द न रु ले४ म धति उ उ वा या यी विता रु क य माला व
हि विर्य॥ द ह लाल तं ४ ग तं ४ याल हि ता उ उ व ता य को॥ आना हा दा व र्क य म नी ४ ० न यु ल्म नि वा न ल॥ मूल की उ क मां ड च व वा रु मूल र्प च की॥ आन
वत रु ली चा पि य का त न य च त व त॥ त स्त्री य मा न स म ये द्वा व र्क माल य त॥ उ क मूल का र्क त॥ ॥ उ दा व र्क ना हा धि का न४॥ ॥ ली द न दी प नी मि ध
रु म्वा ता न ल म नी॥ वरु ल ये रु व द न त धि तं स वे उ मि नी॥ उ लि न मी न ल ल नि न्पा ये स व (ला वि धि) द्या च न ली या ४ मा द त उ वि जि त न्म दी न
दा म म ल्य म दि क म ति रु न्या ता अ त सा (ला) ड वं क ला जि ला मा न त म ल्ब ल॥ रु ला वि र् र मि ग्म स सु द उ ल्म म दा ह ति॥ आ रु वा वा त क उ ल्म सु स्त्रि च स
दि ता न नी न चि त ४ रु ह य क य ति रु ४ सा न वा स त ४ उ दा व र्क हि म पा र्क म्वा का ल वि न क त ४ सुखा म्वा ज क ल न सा ४ सु स्त्रि ग्वा ब क र्क च वा ४ क र्क उ क

मूत्रालिह नीतकी ॥ आमाविठि मसि मूत्र यवका नमहा धर्मा ॥ यवका (था) दकते व द्वात रुतु पाय यत ॥ त ना स्या रुयत गुल्म ॥ स पत ॥ स पवि
 ग्रहा ववाह नीतकी हिं गु से न व सा म्भवेत सी ॥ यवका नयमा न्य च विव इधु न वा नि ॥ जत हिं गु स्मति च ये स म्भवेत स पवि य है ॥ ति हु कि स फ न प
 ल वक्रि वक्रि क ना ति व ॥ पिपे ती पिपे ला मूल विज का जा जी से न वे ॥ य का पी ला म्ना हु कि गुल्म मा ए सु इ ध री ॥ तो य थी कूट जा के सि य व रु की
 म्भवे क्रि वि ला रु या ॥ रु ला त का ॥ या थी किं क पा नि रु द के ज ग पा मा ग ती पा नि का ना वा सा म्भ क पा ट ला ॥ स ल व ल म द वा ज ल पा वि ता
 हिं मा दि य ति वा प म त इ दि त गु स्मा द वा हा ले ॥ ॥ हिं गु य ग म्मा वि ठ गु लि जा जी हु नी ते की प्र ष न मूल कू डी हा ॥ म हु न वृ ष्मि म द त दि र्ग
 स्मा द वा जी जी वि सु वि का सा ॥ हिं वा दि ॥ ॥ डि रु ला का य न की नी सु फ ना ती लि ती व वा जा य ती रु य प्रा ति का ॥ रु व ल से न व पि प्य ती ॥ वि व
 दि र्ग म्भु म्भु वा नि ला स न मा दि हि ॥ स र्व गु स्मा द न द्री हु कृ षा ॥ ॥ ग म्भु स वि द त ॥ ग म्भु का वि न वि ल्य त ॥ दा न रु हा नी क लो रु व ॥ क ल क पी ता
 रु न रु ल्म ति ल का ॥ थ न व क जी ॥ ति ल का ॥ थ वि ठ वा य हिं गु हा गी य ता रु व ॥ पा नी न क रु व रु ला न रु य व था वि ता ॥ पी ता धा जी न मा य रु क

५०

एक का थ सा धि ॥ का न य प्र ल से य का म दि ना वा उ उ ल म द त वि लो म म य न या म्मा ॥ लृ न क व रु द नी ॥ प ला स का न ता य न सि धि स पि पि व व
 सा ॥ उ ध व रु द या हि न वि वि ना ता हा या हि त ॥ य ध उ रु ति ये य स्म उ या ति म्भु स मि ॥ त उ न रु स मा न्या रु न वी क म्मा च रु उ ल ॥ रु य वा
 यो म य थी की च वा वि क से न वे ॥ सा जा जी पि प्य ती मूल दी प के वि म य त य ॥ सु की ल मूल क पा णी की र द प स दा ठि मी ॥ त ल्य न वा त गु ल्म वृ
 ल्म ला ता रु वि व न रु ॥ थो न्ये लो य रु ली न म्भु स का लो न वि क ना न ॥ यो र्व रु द रु ल्म ल य च त म त वा पा रु ति ॥ रु य म्भु य रु ॥ ॥ ज ल डो ल
 वि य क वा वि ल ति पे व रु या ॥ द ला य ला ति ता व कि वि ड क स्य त यो व वा त ना रु हा ग लो य व द की स म्भु ॥ ता य रु या रु व रु न रु ला
 च पि व रु गु ली य ती ॥ प ल म क के लो गु लि सि धि ले रु थ नी त ला ॥ को ड रु क रु व द या च रु ज ति प ले त था त नी ले रु य ली रा ज रु व का रु नी त
 की ॥ ति च वि नि य त ना य रु म य रु सा द नी ॥ पी रु य थ रु उ म्मा लो रु त्या रु य रु ली ग दा ॥ लो म्भु ल्म रु वि म रु न क रु न्य ना व का ॥ द की
 लो लो य रु के रु वि रु ग पि वि जा त की ता ग के ल य रु य रु वा उ रु ति क म रु य ॥ द नी रु नी त की ॥ ॥ यो म्भु लो डि रु ला वा न्य वि ठि ग व वा वि रु

७ पल ४

४ पल २० ४ पल २० ३ पल १ (४ पल २०) ३ म य प ल ४ ४ का थ प ल १ २ लो य प ल १ २ रु नी त की ॥ लो य १०० प ना त रु उ प २० १ प ४ ४ पल ४
 ३ पल १ ३ रु ला २

केशकलीकृतैर्धर्तसिद्धं सुकीर्तनं वातयत्नतः ॥ **पञ्चमः प्रयोगः** ॥ ॥ जाकामधुकखरूनी विद्यावीचगतावली ॥ यत्र पकालिपिहृता साधयत्नतः
मता ॥ जलारकं पादलोषे न समामलकस्य च ॥ घनमिह न संकीर्तयथा कलकपादिकी ॥ साधयत्नं घर्तसिद्धं नर्कना कोषयादिकी ॥ यथा जयति हृदु
त्वं सर्वपिह विमानतः ॥ **जाका प्रयोगः** ॥ ॥ सुवाषकादलवर्णं दलमूलसुतं घर्तं ॥ कुरु उल्लंति हं त्यागं सहि उविठदाठिमं ॥ **जाका प्रयोगः** ॥ ॥
पिप्यली पिप्यली मूलं च यविषकना ॥ यलिकैः ४ सयवका न घर्तं उल्लंति विद्यावयता ॥ की न यल्लं नत तसो प्ये हं ति उल्लं कलात्मकी ॥ ग्रहणी पाद्यु
गर्भं श्रीहकानं कनाये हं ॥ **की न यल्लं की घर्तं** ॥ ॥ धात्रीरुतातां सुनसे विठि से यावयत घर्तं ॥ नर्कना से त्ववा यतं तद्धि तं सर्वप्रतिना ॥ धात्रीष
घलकी घर्तं ॥ ॥ वृषीकमूत्रकस्य वषात्तु वृहती वर्या ॥ विषकं च जलद्रोणं यवत्यादावलोषिती ॥ मगधो विषकाको ॥ लिलिकैः कुरु ति धापयत ॥
मधुनः ४ यल्लं मावाय पथा ॥ स्रग्ध्रं स्रग्ध्रं ॥ उवात्ति न दला हलु जी ॥ हिकी पिवे न नश ॥ अनिश्चयं जयत्तु ल्म मावि या क सुद सुनी ॥ **वृषीका विष्टे ४**
॥ ॥ **वल्लं लं मूलं की मत्स्या नुष्टकं का निवेदलं** ॥ तखा दला लुकी उल्लं मधुना विरुता निव ॥ ॥ **उल्लं विमानतः** ॥ ॥ वाताग्रहसंम

कर्मयः वामयः तन्मिन्ममाह वं ॥ द्विपंचमूलकाः चतसृस्तुलवणनवापिपयल्यलावचाहिंठयवकावाथसेत्तवी। सोवच्चलमथागुष्ठी अरुमाया
 चमूर्त्तिरीकलेवाल्याल्लकोलक्तदविमयासवादिहिश। पाययच्छुद्धहृत्स्नहृतात्यतमनेव ॥ नागववापिवइष्टं कषायवाग्निकर्तरी ॥ काण
 यमातिलहृवैल्लक्ष्मणगताननी। प्रीयन्मीमधूककोदमितागुठजलेवमेत ॥ पिहायुद्धहृदयुसवयन्मधूवेष्टत ॥ छतकषायाश्चानिस्तानपि
 रुक्मनेवितागनी ॥ लीतायनहायनिलेवतानि तथाविनेकोरुदिपिहृइष्ट। जोकासिताकोपयनषकं ॥ स्यात्कृद्धवपिहायहमन्त्रयान ॥ पिक्वायवेष्टा
 पिमेताजलनयश्चाकर्मतिककनाहिणीधर ॥ अरुतस्यत्ववासिधं कीनयाश्चदामय ॥ सितपार्पंचमूल्यावावलयामधूकतवा ॥ छतनइष्टचनउअ
 कृसावापिवकिंतिहृककृत्तवाय ॥ छजोगजीर्णकवनकोपेहृहृत्वाहवयुश्चिवजीवतक ॥ ववातिश्चकषायांसां वार्तुहृदिकहृन्कितीवातहृजग
 हृक्कृष्टपिपयल्यादिश्वत्तयेत ॥ पिनाषजलेद्यनमादित ॥ स्यात् अन्तश्चसर्वश्रुतिविधेय ॥ हीतातिमवत्तमथश्चवेव कार्यधयात्तामपिकर्मत
 ल ॥ चूर्णपूकनीत्रिलिका लोकि कतसमायुत ॥ हृक्कृत्तयोसेकालघ्नं कयाहिकातिवान ॥ तेलाश्चउष्टविपकीचूर्णनासमयाषजसापिवति

कुवितागती॥ मूयलसुनयावापिकदनीखनसतवा॥ करुकरुवितागतीयल्लुपिष्ठाफातंपिवता॥ तर्कलयकंसितिमावकस्य वीरुपिवल्लुव
प्रागुता॥ विवहथातुलधायनतपवाल्लुपिष्ठाकरुमूयल्लु॥ सवविधावयववउवाया॥ सुतोन्नपूर्वायसमीक्षकाय॥ डिस्थापिकयाव
मनीहंतस्यातपितुविनेक॥ यवनउवंशि॥ वरुणीधवनीयालयसीमधकलिंगका॥ यावनीयावरुत्यादि॥ कुरुक्षेत्रयापह॥ उठनमिग्रत
कानेकदध्रुकोमल॥ पिवता॥ मूयल्लुपिष्ठाकरुमूयल्लु॥ तर्कलयकंसितिमावकस्य वीरुपिवल्लुव
हनीक्रिया॥ स्वदन्त्रेक्रियासुवस्वय॥ सु॥ यनीषज॥ काथी॥ तर्कनेवीरुस्ययवकानयुतपिवता॥ मूयल्लुपिष्ठाकरुमूयल्लु॥ पीत॥ नीध्रतिवा॥ नला॥ यत
लर्कनास्मनिकर्क॥ लर्कनास्मनितानती॥ लर्क॥ उठनमिग्रत॥ विवहथातुलधायनतपवाल्लुपिष्ठाकरुमूयल्लु॥ वरुणीधवनीयालयसीमधकलिंगका॥ यावनीयावरुत्यादि॥ कुरुक्षेत्रयापह॥ उठनमिग्रत
नीसापिमिग्रपिवता॥ मूयल्लुपिष्ठाकरुमूयल्लु॥ कुरुक्षेत्रयापह॥ उठनमिग्रत॥ विवहथातुलधायनतपवाल्लुपिष्ठाकरुमूयल्लु॥ पीत॥ नीध्रतिवा॥ नला॥ यत
नीध्र॥ स्याकमया॥ नापिमूयल्लु॥ ॥ नलास्मरुदकालि॥ लार्क॥ उठनमिग्रत॥ विवहथातुलधायनतपवाल्लुपिष्ठाकरुमूयल्लु॥ पीत॥ नीध्रतिवा॥ नला॥ यत

ਧਾਤਾ ਲਾ ੬ ਦ ੨

[illegible]

प्रातादिमन्त्रान्॥ प्रिवत्सिलाज्जुक्ताथे गाले वीनत नादिकान्सं इवा लहायाथ कषायवासकस्य च॥ उक्तं केवलं तावती हि॥ सिद्धं यथा वाहल
 यैव मूले॥ गुठं यगाईस यतं यथा वा नागेष्ट ककुदिहिगसुमतत॥ सुत॥ नीत यथा नागी जं दतीत पुनामृत॥ प्रिवत्सु केवया प्रेष मश्रुवा तं समाजितं॥
 श्रीला मोतेउसी गन एताति तं यस्य सिंचत॥ मेथुना यन मथ्याय वं हलीयाहिता विविश॥ सुउ फा हल मधीका कषु का कन सिता नज॥ समीस मद्रका मनि
 कीन श्रीउ घता निचा सर्वसम्य कवेमथीक लीदा यय॥ येवत॥ हकि पुका नथी केधर दीमान्त्र वीध्या सुगं यद॥ विज की सा निवा वेव वला कालान्
 सानिवा जाका वि लाला पिप्य ल सुथा विज क हली रुवत॥ तथेव मेधु कंद यात दया दोमल का निव॥ घता र्क य वं दं॥ कर्के वरु सम निव॥ कीन
 आल जल जो ले तस्मिन् प्रवता नयत॥ नीतं यन एतं विव लेर्क नाय सु संयत॥ उंग की या निव तसु वं मति माय ति प्रिय यत॥ तता मिति येव का ले यय
 भाषय था वली वात नता पिह नता पुषे नेता च या ह वं॥ वक नता यन्ति नेता प्रिवदि कुत्र नागती॥ जीव ता य व व यथ सुधि नेत न्म हा पु ली॥ प्रजा हि त य
 धन्य च सर्व नाग य ही ल वी॥ सुधि नेत न्म य ऊर ता श्री ग ह ल ह ता वि नात्॥ अरु एवा पा जय चा पि या ति दा मां च से ह ता न्॥ मूज दा व सु व व क यो द य

३४

न्विकित्तिर्त॥ विवका यं यत॥ ॥ मज्जा यता प्रिकान॥ ॥ वरुणस्य त्व व॥ प्रेष पुली गान् कन सी यता॥ यवका न पु उं दला का थयित्वा प्रिवदि ता न्
 । अस्मनी सात जा हकि विवका ता न वी धी नी॥ वीनत तसु ह व न द य द ह व को द ती पु न्दा त ल क ल का ना म न पा न गि म न्क मा न र व सु क वे सि च रु लु क
 कुर ॥ के वी व न क या त क का च यं क व ति॥ वीनत ना दि वि ल य ॥ एता वा त वि का न न त॥ अस्म नी सर्व नी मू उ क कु या त न जा प ह॥ वीनत ना दि ग ल ॥
 पुष्पा नि म ल पा षा ल सि धू व व ल एत क री॥ अरु या व ग व ध रु ले॥ का थ क यो दि व क ले॥ नाम ० का व ल व ल च र्क द ला प्रिव न न॥ अस्म नी मू प द क र्क
 य व ती या व ती य री॥ ह न्वा का ष ग ती वा त क य ॥ गु ठ म द र्ग ॥ या षा ल रु ना व सु का व सु ना स न क क थो ल ता व नी च र्क व व ह ती के ल का नि का॥ क
 था त व का र्ग ल ॥ का व ता की न पु न्क का ॥ व का द ती रु ल क य व न ल ॥ का के र्ग र्ग ले॥ य वा क ल का का ला ति क त क स्य रु ला ति च॥ एष का थ य ती सि
 उ व का दि सु क लि ति रु वा त सी रु ना म स्म नी कि य मे क उ॥ काना न य वा गू ॥ य या य क षा या ले य या सि च॥ रु ज ता ति च रु वी त वं न र मि न्वा त ना ग
 ती॥ उ म क से न्द व ति ला ज उ उ गु ले का नी सु द्र या हि गु ति पु न्क क ए ति॥ उ व का दि न्दा क ता क रु ह कि ग ला म द्वा वि गे म पि ल॥ अस्म नी ल के ना म्ब य

三

[illegible]

वर्णलक्ष्मणपत्र १०० वाती ययल ७२ को अणमयल १२५ गद्यदेतपल ३२ कल्प्रत्येक मयागता २५ हि ४ पाक ४ शक्ति लना लेहस ४ घला सहस्र ४ कुणमले ४ रुमले कागमले ३ न
कुणकागगा नादा नामकली हल संकृष्टातिहण पंचमस्त

वी० ११ तिलक १ तिलक १ तिलक १ तिलक १ तिलक १

अमतावासां नयं वीजं च प्रपन्नम् ॥ गंतव्यं तिलं कानं पलां सुकानं मवच ॥ अधिकार्या च सुलानि कारिकाति समापवत ॥ अस्य माध्यापि वरुतु पला
लायप्रकया जीर्णवास्मिन्निवत्पुर्वे उठजीर्णं तु मस्तुता ॥ अस्मनीलकं नाधे व मय ककुप्यतालयत ॥ **वृत्तं** ॥ ॥ सैन्धवाय च यहे ल मधिहि
पत्रिकाहिता तहे लीं क्रिउर्ल की नयचदी नत नादिता ॥ काथेन पूर्व कलं न साधित तु हि प्रवे ॥ एतहे ली व री येष मस्मनीलां चिता गत ॥ मृदा वात मय
ककु २ विस्मिन् माध्यापि तथा हत प्रमाहि यत्र च सर्वे च पलां स्यात ॥ वीनत नां ये चर्त ॥ **अस्य मधिकार १॥** ॥ स्यामा क काड वा दान ग्राध मय ल कारकी ॥ क
लका च हिता हां च प्रमल महि तां सदा ॥ महि नां ति कला कानि जा मला हविता लजा ॥ यवान् मय विरुति १ स्यात् ग्राहि विरुति १ पात्रि जा त ज यां नि मय
क्रि तय जिर्ण विथ का पा मया १ सा उ जी पीता च य मय सान दुं स्या च ॥ जले रु मया गि कता गने १ लव ला पि रु की सा लु मे हा त क मा य नि असी का था
१ समा क्रि का ॥ दूर्वा के स नू पती क कृ सी क य व से वती ॥ कला त क यि र्ण पी र्ण ए क म ह ह री प री ॥ विरु ता न व र्ध वा का क पा य म ध र्म य री ॥ पी ता नि
हति रु ला र य प्र मे ही न य र्ण न ल ॥ ला धा र या के रु ल म रु का नां वि डि ग या म रु त ध न ता तां ॥ क द म्ब ग ला र्ता र्ता दी र्ण का नां वि डि ग दा वी ध व र्ण
॥ **काध २ हो सु मा क्रि का ॥ २ ॥**

हनिषाद्य ३

जयती लक्ष्मी स्मान ४

खका नां ॥ सुकानं मय मय ता क पा या १ क रु य म ह प्रति व व ती या १ वा धा र्ता नी च क व र्ण ता तां म वि रु स या म ल का रु या तां ॥ **काध ३ ता पि रु**
कु र्वा ता तां नी ला त्प ला तां ति ति ग्रा र्ता तां ॥ व लानि एत वि हि ता क पा या १ पि रु य मे ह म ध र्म य र्का १ अ य व रु क उ र्ण ल न्या प्र धा दि रु ल
य र्ण ॥ स न क सा न मा क्रि का १ का था १ य व स मा क्रि का १ ॥ ती ल हा नि रु स का का का व ग ली च का क्र या ता म हा त हं य क मा प ता म सु को डा व क म ह
न त ॥ का थ का स म य र्ण र्ण ति र्का रु म ता रु ल ॥ ति न वि क्रि क पा य त पा म क रु ज ना म र्थ ॥ ति के क रु हा य र्म च य स पि म ह पि व न र १ क
द च ख दि न पू ग का थ का डा क्र थ पि व र्ण ॥ अ नि म रु क सा य उ व सा म ह पि व न र १ पा म गि नी व र १ स य र्ण म र्वा र्के रु का र्ति र्का क यि का ना हि व का थ
ह ति म ह य या ज य ॥ ॥ **का पि रु स फ के द ना ल जा ति वे ही त क ना हि त क का त जा ति का पि रु य या नि व र्ण ता ति का थ ग ति का क रु पि रु मे ह ॥** ति
प्र वा त मि वि क र्ण ति रु र्ण पा य य र्म ॥ **का धा १ सु व र्ण म ह प्रति ग्रा की ड स म नि र्ण ॥** क वा य म थ वा दा र वि रु ता म रु के १ क र्ता ॥ पि रु ता दा र दा वा र १
का थ की ड ल म ह हा ॥ क रु ज स न दा यो व रु ल य र्ण वा थ वा १ पु व्वा स व र १ य या म व ता स र्व म ह न ॥ नी ल म रु के क क र्ति रु क रु म रु स र्म य र्ण तां ॥

दिक्कनक्क्रीत तेलेष्वज्जवायनी ॥ आनन्दधादिना कथ्यते काथमद्वहनातिचा ॥ लालसावादिना सक ॥ हायादिष्वकलादिना ॥ सोवीनकीसुवाककते
 लीकी वीउठं दती ॥ अन्तरुवसपिष्टाना नृपमासातिवर्जयेत् ॥ यमहितायदा मूर्धना विलीना विविचिती ॥ विषदीति ककद कं तदा वाग्यं यवेकत ॥ य
 महमधमहपिठिका प्रिकोव ॥ ॥ वनाणां १ लालसा १ मूर्धा १ कलन्का १ दालको १ दवा १ लखेना १ वरुय १ येव १ सुवा १ मध १ सिता १ मदा ॥ विना १ का १ ध १ क १ ध १ म
 व्यायामा १ न १ क १ मा १ क १ ली ॥ उ १ य १ वा १ सा १ १ सुखा १ स १ या १ सु १ क्रो १ दा १ र्थ १ न १ मा १ ज १ य १ ॥ नि १ डा १ य १ सु १ स १ हि १ त १ ध १ न १ य १ कि १ म १ म १ स्ति १ ॥ वा १ या १ मे १ ति १ ह्या १ की १ र्णा १ नी १ य १ व १ ण १ ध १ म
 हा १ ज १ न १ ॥ स १ क १ र्थ १ न १ क १ त १ ध १ षि १ स्तो १ ल्य १ म १ को १ वि १ म १ च १ त ॥ अ १ म १ वि १ ता १ व १ वा १ या १ च १ को १ ड १ ज १ ग १ व १ ण १ य १ य १ ॥ ह १ र्हा १ य १ न १ मा १ त १ स्तो १ ल्य १ य १ व १ ण १ मा १ क १ हा १ ज १ न १ ॥ या १ न
 र्ध १ म १ र्ध १ वा १ वि १ सु १ वि १ त १ १ स्तो १ ल्य १ ना १ न १ ॥ उ १ म १ न १ त १ स १ म १ पु १ म्मा १ पि १ वे १ क १ न १ त १ न १ र्हे १ त ॥ स १ व १ य १ जी १ व १ क १ था १ ष १ हि १ ट १ सी १ व १ च १ लो १ त १ ला १ ॥ म १ म्हु १ ना १ न १ क १ व १ पी १ ना
 म १ दा १ प्रा १ वा १ क्रि १ दी १ य १ ता १ ॥ वा १ ष १ वि १ क १ सि १ धू १ लि १ वि १ रु १ ला १ क १ र १ हा १ हि १ ली ॥ व १ ह १ ली १ धी १ ह १ नि १ ध १ दा १ न १ म १ ति १ वि १ ष १ सि १ र्वा १ ॥ हि १ ट १ क १ व १ क १ म १ ला १ ति १ य १ वा १ ती १ ध १ न्या १ वि
 उ १ की १ सो १ व १ च १ ल १ म १ डा १ की १ च १ ह १ य १ वा १ वि १ न १ र्ध १ य १ त ॥ व १ श्वे १ त १ न १ ध १ र्ध १ को १ ड १ हा १ ग १ १ स १ म १ न १ त १ १ स १ मा १ ॥ न १ क १ न १ शि १ ठ १ न १ १ ला १ हा १ ग १ १ र्ध १ क १ र्थ १ ली १ य १ व १ त ॥ य १ या

३८

ग १ ह १ स १ ल १ म्या १ कि १ ना १ १ स १ क १ र्थ १ न १ क्ति १ ना १ त ॥ य १ म १ हा १ न्म १ र १ वा १ र्ध १ य १ क १ र १ न्या १ न १ ति १ का १ म १ ला १ ॥ श्री १ ह १ पा १ ण्ण १ म १ य १ १ ला १ १ था १ म १ र १ व १ क १ ल १ म १ वा १ च १ क १ ॥ द १ डा
 ग १ न १ ज १ य १ आ १ व १ का १ न १ १ वा १ सा १ ग १ ल १ य १ ह १ ॥ वि १ मि १ थ १ य १ ह १ ली १ दा १ सा १ स १ र्ध १ स्तो १ ल्य १ म १ व १ नी ॥ न १ या १ ली १ दी १ य १ न १ वा १ क्रि १ १ स्म १ ति १ व १ र्धि १ व १ र्ध १ त ॥ वा १ १ १ म १ न १ क १ य १ या १ न
 था ॥ ॥ वि १ रु १ ला १ ति १ वि १ ष १ म १ र्वा १ ति १ व १ च १ क १ वा १ स १ के १ ॥ ति १ म्मा १ न १ व १ ध १ ष १ न्को १ स १ क १ प १ र्ण १ ति १ ना १ द १ य १ ॥ उ १ च १ वी १ न्द्र १ म १ ना १ क १ ष १ क १ ष १ स १ र्ध १ य १ ना १ ग १ ने १ ॥ तेल १ म १ हि
 १ स १ मे १ १ य १ के १ सु १ न १ सा १ दि १ न १ सु १ पु १ र्ध १ ॥ या १ ता १ स १ ज १ र १ ने १ ग १ ण्ण १ त १ स १ य १ व १ कि १ सु १ या १ जि १ र्ध १ ॥ स्तु १ त १ ता १ ल १ स १ क १ ण्ण १ दी १ न १ ज १ य १ के १ रु १ क १ ता १ न १ ग १ दा १ ता ॥ वि १ रु १ ला १ य १ च १ र्ध १ ॥ ॥
 सि १ री १ ष १ ला १ स १ क १ क १ ह १ म १ ला १ ॥ वि १ रु १ ला १ य १ स १ र्ध १ य १ ह १ र १ य १ य १ १ य १ ज १ म १ ला १ हा १ ह १ व १ न १ ता १ ना १ ली १ व १ दी १ र्ध १ म १ ह १ र १ य १ य १ ह १ ॥ वा १ सा १ दे १ ली १ व १ सा १ न १ ल १ य १ १ र्ध १ व
 क १ र्ध १ न १ स १ र्ध १ ॥ वि १ रु १ ला १ य १ स १ र्ध १ य १ ग १ उ १ दी १ र्ध १ न १ ता १ न १ ॥ ह १ री १ त १ की १ ला १ य १ म १ र्ध १ य १ र्ध १ क १ र्ध १ ल १ वा १ दा १ ति १ म १ व १ क १ ल १ य १ ॥ य १ ष १ न १ ना १ ग १ क १ य १ ता १ न १ ता १ ना १ र्ध १
 घा १ क १ ष १ य १ न १ रा १ पि १ या १ न ॥ ॥ म १ म्हु १ य १ पि १ ष १ ति १ ह १ कि १ क १ र्ध १ व १ र्ध १ कि १ र्ध १ ॥ म १ य १ य १ सा १ व १ य १ क १ क १ का १ दि १ र्ध १ म १ ह १ र १ य १ या १ हि १ १ स १ र्ध १ व १ सी १ क १ ड १ ज १ नी १ द १ य १ ता ॥ य
 की १ वा १ धी १ वि १ रु १ ला १ सि १ धू १ वि १ क १ र्ध १ स १ र्ध १ ॥ क १ ली १ क १ र्ध १ स १ म १ र्ध १ ॥ वि १ धि १ ता १ वि १ य १ व १ र्ध १ ॥ तेल १ न १ ता १ सा १ दी १ न १ ॥ ह १ र १ न १ स १ य १ न १ क १ र्ध १ ना ॥ ॥ वा १ ष १ वि १ म १ र्ध

४५५॥ अलिहर्वेदनाम्ना॥ आतकवातसूनयावातनागयसूनया॥ दधिमल्लुतविष्टा॥ दाठिमाम्बुहिनर्षसि॥ यनिवहसुवकास्ते॥ नश्रुम्बुहिनजीर्ण
कै॥ हगन्तनेपाशुना॥ का॥ लसासुगलप्रह॥ द्रवा॥ गयहलीदाप्र॥ कुष्ठमन्नातलकने॥ उष्णविषमूलविषसुगना॥ कतिमविष॥ यथाहसि॥ यकाष्ठ
न॥ ययमतदिनवर्त॥ **ता॥ ना॥ य॥ ल॥ वि॥** ॥ यिष्यलीपिष्यलामूलवद्यविडकतागने॥ सुकायेनर्जयनिर्के॥ द्विष्यसुमर्षिष॥ ययवत॥ कल्केद्विषवसुतस्य
तुलार्धतनसुतउ॥ दधिमल्लुअधिकदत्ता॥ तत्सार्थिऊ॥ नापहं॥ स्वयथं॥ म्नातविष्टमू॥ तुल्यलान्तिवितालयत॥ **द॥ ल॥ म॥ ल॥ य॥ य॥ ल॥ क॥ य॥ त॥** ॥ वडतुलेऊ
लेमथु॥ द्विउ॥ लविडकोत्यला॥ कल्केमिदं॥ यतं॥ यस्तु॥ सुकायेन॥ ऊ॥ नीपिवत॥ **वि॥ ल॥ क॥ य॥ त॥** ॥ अर्ककीनपल॥ द॥ उ॥ स्त्रहीकीनपलानिबड॥ यथाकीपिलु
कै॥ स्यामा॥ स्याका॥ गिनि॥ क॥ लि॥ का॥ ती॥ लि॥ ती॥ रु॥ द॥ ता॥ द॥ ती॥ सी॥ रि॥ ती॥ वि॥ द॥ की॥ त॥ ये॥ ॥ व॥ त॥ व॥ य॥ लि॥ के॥ र्ग॥ गि॥ ॥ य॥ त॥ य॥ र्ग॥ वि॥ य॥ य॥ य॥ त॥ ॥ अ॥ थ॥ म॥ म॥ लि॥ ले॥ का॥ ॥ वि॥ इ॥ मा॥ र्ज
अ॥ ना॥ य॥ य॥ त॥ ॥ या॥ व॥ ता॥ स्या॥ पि॥ व॥ ऊ॥ लु॥ ना॥ व॥ द॥ ग॥ वि॥ नि॥ च॥ त॥ ॥ कु॥ ष॥ तु॥ ल्म॥ सु॥ दा॥ व॥ र्क॥ स्व॥ य॥ थं॥ सु॥ र्ग॥ त्द॥ न॥ ॥ स॥ म॥ य॥ त्द॥ न॥ ना॥ य॥ शो॥ व॥ क॥ मि॥ डा॥ ल॥ नि॥ य॥ थ॥ ॥ व॥ त॥ वि॥ इ॥ य॥ त॥ ता
म॥ य॥ ता॥ त्द॥ को॥ वि॥ नि॥ च॥ त॥ ॥ **वि॥ ल॥ क॥ य॥ त॥** ॥ म॥ य॥ ता॥ य॥ शो॥ व॥ न॥ वि॥ लो॥ यान॥ सु॥ के॥ व॥ य॥ ज॥ य॥ त॥ ॥ द॥ व॥ र्ग॥ म॥ सि॥ यू॥ म॥ धू॥ न॥ क॥ य॥ ॥ त॥ म॥ य॥ पि॥ क्क॥ म॥ थ॥ वा॥ स॥ ग॥ ना॥ ॥ पी॥ ला॥ तु
स्यामास्यामलेता३ अ॥ ना॥ जि॥ ता॥ म॥ ल॥ ३ अ॥ र्ग॥ ल॥ य॥ त॥ ३
ग्वत॥ काल३ अ॥ र्क॥ की॥ न॥ प॥ ल॥ स्त्र॥ ही॥ की॥ न॥ प॥ ल॥ उ॥ ग॥ य॥ य॥ त॥ य॥ ल॥ ३२ पा॥ ती॥ य॥ प॥ ल॥ १२८ कल्केमर्षिष॥ की॥ ता॥ ला॥ १० रु॥ ४५ का॥ ४॥ वि॥ इ॥ य॥ त॥ स॥ ॥ ४

[illegible]

।यक्ष।

पं. ४३।

पीतसर्वादनास्त्रीह मुहूर्तकिमिउत्तरत ॥ दध्नाडकवतावामवाहमध्यासिनाहिषकाविधतस्त्रीहताणाययकननाणयपदि ॥ स्त्रीहान्तमर्दयजाट
इष्टनकवहृथ ॥ विषकस्यउलाका ॥ थंयंतयस्त्विपावयत् ॥ श्राननानंतदिउलंदिमिषुअउलं ॥ पधरकोलकतालीसकावेलेवेणसुयते ॥ दिजा
नकानलायमेमनिचकउदाययत् ॥ स्त्रीहउत्तादनाधनपाठुनागनविजनतावलिहत्याध्वकथुन ॥ लादावहपीतसान् ॥ हन्यात्पीततदुणाध्व
धध्वविदिपीपन ॥ वलवर्णकनवापिहसमकीमधनियकुति ॥ विषककथं ॥ ॥ पिपलीकलसंयुक्तुषायमपकल्पयत् ॥ यतंकीनचउत्तुणीपवत्तु
हानिसादादियुक्तुजागहनपन ॥ विषलीयतं ॥ ॥ नोहीतकलवंपुष्पापलातापध्वविजाति ॥ कालास्त्रिप्रसुसंयुक्तुकेषायमपकल्पयत् ॥ पलि
४पंचकोलेयते ४सर्वेपिउत्तया ॥ नोहीतकलवापिहयत्तयस्त्विपावयत् ॥ स्त्रीहहिक्किंसमयदनदण्डप्रयाजितं ॥ तथाउत्तकनन्वासकिमिपा
वकामलो ॥ नोहीतकथं ॥ ॥ नोहीतकान्यलगतंकीदयद्वदनारकासाधयित्वाकलधी ॥ वउर्गागवलापितं ॥ यतयस्त्विसमावायकुणाकीनव
उत्तुणी ॥ अस्मिन्धादिमनकलकानसर्वास्तानकर्ममितान् ॥ आसहलडिकीकिंहुयमानीउम्भनविलैं ॥ अजाजीकश्रलवर्णदाडिमिदवदवापन
नवितकमनयल १०० पातीयपल ३२ कोथी १०० पल १२० घटपल ३२ कांजकपल ३४ धिमिषु पल १२४ कलकयलकममताला ७५ हि ४५ का ४॥ ७ ॐ

पि०

४२

नृवाविना तां च यवका न स पोक्षनी ॥ विठरु विठका श्वेव हृष्या श्विका वरा ॥ एते र्धनं विपकं तु स्थापय हा ज न छरु ॥ पायय छि यत्ता मा र्ज व्याधिव
ल म व क च न स क ता धि मू षे ल प य सा वा पि हा ज य त ॥ उप य क छ न त सि न् वा धी न् न्या दि मा न् व रू न् ॥ य क न् प्री हा द न श्वे व ह्नी ह न् प्र ल य क रू थ ॥ क कि
न ल ह्नि दि न् प्र ल पा र्श्व न् प्र ल म न च का ॥ वि व अ धू ल स म य त या न् न ग र्ग स का म ला ॥ क्क दि नी सा न स म न ग न्दी क न वि ना ध न ॥ म हा ना हि न क ना
म प्री ह प्र नु वि षा य न ॥ ॥ म हा ना हि न क धू र्ग ॥ ॥

[illegible]

प्रियवर्नवाकाकोलिवत्तस्युष्णीगलानि विवेकवायानिसगर्कतानिवाडाकासनेनहनसनवायि वृक्षीयिवद्वापिरुतीगकीनीमधुकजमूङ्गनवन
 सानी लखिष्यदहनवनवाचयद्वा रुगेयदाषययथनयद्वा गनारिषक श्रुषसमृक्तिगेगाखिवस्यविंयापनमवकुर्यात्तदङ्गुष्ठवेनद्वयदीप्त
 नवाविकङ्कतानयधकाकननी काकादनीगायसरुद्रमूलेशालय न्येदनमलावरागी कर्जकालामवनैधविधान । दनीविणकमूलवक लमथा
 कौपयसीगुञ्जशा रत्नागकास्त्रिकाणीस लयारिद्याकिलामयि । गनीनममोयरोवान न्येदना ७१ धृष्टवाग्निर्विदधीनवेद्यशाकात्रनवनोनयति
 सानयतु सल्लिखिलिहयथयदसधारुनेवृदानोश्चयताविष्णवः यदगुरुवाकृतिदाषद्व्यैशातनष्विकित्सिहियगवृदानि विधानविद्वन्निविकिन्नि
 गनावातावृदवायपनाहनानिस्त्रिग्वेधमिणेतथ वेगुवात्रेश्वरद्विदध्याङ्गुलमुनाद्यो ष्टिगननकवदुसाहनवा । स्वेदायनाहमद्वेमुयथा ।
 विरुद्धदेकायविनवनवाद्युद्यवोइम्बनभकगाजी यथेष्टुर्लङ्कादयनेष्टलेपयगा । सुद्धीकर्णसङ्गनसपिर्यगु परुद्धुतावङ्गनयष्टिकाद्वेष्टालेवनर्ण
 खवृक्षेन सरुमूलकरासना । कुरुध्वदायर्दकुर्यात्तुगंधादिष्वविष्णवगशा निष्ठावयिन्ध्रककलककलै मीसयगादेदधिमर्दिनेष्टालेयविः

दध्यान्त्रिसयायथग मन्त्रयपयान्यथमादिकावा । अधावशिष्ट किमिरिष्यजगुलिखलगाग्निविदधीनयथग ॥ यद ल्येमुल्लिखयामसीसेष्टासंवेष्ट
 यनेनथवायसेष्टी ॥ काताग्निगमन्त्रववात्रयेष्ट मूद्रुर्मूद्रुष्टानमवेष्टमान्शायद्वेष्टा वापेगानियाक योक्वमल्लिखवत्रयथक ॥ ससष्टाष्टा निरि
 यावृदानि करोगिनस्यागुयनरेवनि । तस्मादल्लिखानिसमष्टननु रुच्यष्टसल्लिखानियथविधमग्नीनाडयोदकात्रसार्यकातत पणयत्रिवेष्टिगाथायनस्यन्य
 विरान्द्रुर्मापिण्डुकावृदजागयशाडवाद काकाजिकनकपिष्टा गेयानूपातालवलनमिष्टा ॥ दध्नेवृदानपिणमायकवि दिनदिनरात्रिषममजानी ॥
 सुहायगुत्रिकावेदा नागयद्वृदानियालवलनाथवावेदा ॥ गीसकनगथेववा रुद्रिहोलाधवरुद्रु गृध्रममनश्चिल्ला । मधुपुगमदालुयार्थ मदा
 वृदरुयतीनातामवक्रियाकुर्यादल्लिखिगर्कतावृदं ॥ सर्वेवात्रिष्यगति दग्धरत्नातकसहा कागमृष्टेसैपिष्ट मयवीष्टवलयनी । यानिष्ठागिद्विद
 षावीरुलानिगमिते लयस्त्रिसयत्रिवृत्सम्यक ॥ विदार्यमस्यालुनिरानिर्वेद्यो निरुष्टानार्नयललमिदध्यागै ॥ मनिर्वेष्टापत्रिष्यद्वा कुर्यादुष्टागुर्यरिष
 क ॥ अगुलाननिसम्यक अपवीर्णपुष्टनयी । गनुमालायर्दनेर्ल सिद्धिसारवागकलवा । विम्बाश्वमाश्चरनिगुंष्टी साधिरियाविनवनी । सारवाटकविम्बाद्य

श्वयतिनकथा॥ नवयुयविर्न सुखमाननेवविधियकासुखमानमपदग यदहपिनुनयमि॥ नवापिस्वयमालियन गनकाषश्यसिद्धि॥ कल्ककांजिकसंपिच्छस्मिन्
 ४४सावटकवृत्तशासुवर्त्तुवनागमनी वातलभधविनागुनशाज्यरुस्वदयित्वायु यतमाद्यारुग४४ने४विम्लायनार्थम धीनीयाहेलेनाहुक्कनवा। नकावज
 वनकुर्यादाकारेवविवदलशा४४मधमरुगिसनरु वेदका निवृत्त॥ गनयागिसर्मलया सुदस्वकायगगलेथा४४धिनार्सिक्जयागु ४४मधमनिगमाकृतम
 ॥ वकावेवकियासुव्री नकभाकृतमववा॥ नकांरियमूर्गायागि गवनास्मि नवास्मिन्क ॥ नय४४मयनिय४४मध यलयादिविधानग४४दया। नियावनीयानि
 दद्यारुशायनारुना॥ सतिलासागसीवीजा दधमसासु कुपिहि का॥ सकि४४कुलवत्ता गसा४४स्या इयनारुने॥ सहासिगुरुला मलन्यन सीतिलेसर्वया। गक
 व४कि४४मयानि डया नयानियावनी॥ तिलेनसयिषावाचि गार्यावासु कुपिहि का॥ सुरवाया ४४मधयाकार्थ मयनाहृषसस्यन॥ रुकिदकजलेष्ट विन्द
 मार्गयलेयनानि ४४यनकविनवाचि ४४मधयावनमरुमी॥ दद्यानीपिकिलानाहु तद्गुलीनियपीग्यक॥ यव४४धूममायाहर् वृत्तनिवसमासिद्ध४४वि
 त्रवित्वागिकादकी विगकाहयमात्रक४४कवाटककृष्णसंयनीयानिवदार्त्तल४४कोरुदयानिवा र्योनि कीरादावा नलायनी॥ गन४४युक्तात्रर्तकाथ४४पडा
 लानिम्बपगकी॥ अवि४४इवि४४इउ नय ॥ ४४धदिहृगुरुवर्ग॥ यवमेलीद्वयदान नय४४धदिश्वयेहिका॥ अत्र४४धदिका याक्क४४कहृजसर्वकमसे। अत्र४४यगिमासानी

मांसस्नानमत्राहणी॥ कल्कसत्रायनीकार्यसिलानामधूकाविगी॥ निम्बपगमधूर्यायुयकसुसाधनस्मनी॥ पूर्वोत्थिसयिषावाचिर्यक ४४मधयराहती॥ निम्बपगमि
 ४४कल्को मधूनाकृगलाधनी॥ त्रायनसयिषायुको यवकल्काययविधि४४निम्बपगधृगकोद दार्यामधूकसंय गा। यकिगिलानीकल्कोया साधयडाययदुनी॥
 निम्बपगिलीदाकी रुवगसेधवमादिकी॥ दूखुनयगमनो लेय४४मधनकोगत्री॥ तिलकल्को४४सलवला द्रुमिडरुवगधृते॥ मधूकीनिम्बपगानि लव४४स्या
 दुत्तमायनी॥ तिलायकी॥ ॥ गिरुलारवदिनादवी नय४४धदिहृलाकग४४॥ निम्बकुलकपगानि कषायकल्कापि४४मधनीदिती॥ यसीतिला सपिदूवासा
 यतायनरायना॥ वकाम्वासानिवामर्ल सर्वगुवला४४मधनी॥ सिकदलरुलात्रसन॥ गिरुलागुगुल४४॥ गिरुलावृत्तसंयको गुगुलुवृदकी कणीसफ
 दलदूधकल्का समयतिदूखुदीपलवनी॥ मधूयकासरीयूवा सर्वगुनरायनीकथिना। वलमनि४४मधयद्वल्यो॥ सुस्त्रास्यात्मधिमम्यगन ४४रायाएवतादनी
 लाहृलेमधूसेधव॥ सयवीपगधूरुत्र कानाभाठक०४४का॥ पृथ॥ गनियलयन गरीरवदरायना४४येववल्कलवृत्तुव्री सकि४४वृत्तसमायन४४धनकी
 वृत्तभाधुव्री गेथाराहनिनेवृत्त४४साकहृवेदनावनी यवन्मात्रगारुना४४नेषागिलानूग॥ वेव रुखनययसनिवृत्तान्॥ गनेवययसापिदूवा दद्यादा

लुपनरिषकु॥ विरुविडिघिदीसूर्य समन लुपनादिक॥ अग्निदग्धवत्सर्वं पुण्यं जीगविकित्सका॥ वागारिखानसासावानधूपयइगवदनी॥ यवाकृत
 डूमदनशीवेष्टकसनाद्वयशाणीवासगुगुलुगुतूगमनियोसधूपिगशाकठिनत्ववनीयोनिर्गयाधवध्वदेनाथानिवयगववाहिगुसर्विलवन
 सर्वयेशधूपितकमिरक्षाघृतवतकगुतूजायदीगिला१यय१सिगाकौड गिलमंकवदनी॥ लुपन॥ धन॥ दारु॥ रकानिद्रोयथदुत्तान कर्तुं निद्रनिगुः
 छीरसादयानुनकिमीन कलायविदलीयर्ण काषामासिचयूतत्तग॥ सनसादिरसेसका लुपनीलसनेनवा॥ निम्बसिवाकोजात्यके सकयभू
 धमात्रकाशाकिमिधाम्भगस्येका१सका लुपनध्ववने१॥ यन्काग्रमासियस्योवा किमीनयदनेदुत्तान॥ लसनेनाधनेदशा लुपनकमिनागने॥ यको
 दपाकसूनिगन्धवनी॥ वनममलान१सत्रज१सल्लथा१य यानिगुगुलुमिणिगन काधुन गानिगिरुलातसन॥ गिरुलागुगुलु१॥ गिरुलाव
 नूसेयका गुगुलुवृद्धकीकरी॥ नियनुल्लविवन्धधावतल्लधनमयनी॥ अमृतागुगुलुसस्य दिग१सेलकूवदकी॥ अमृतागुगुलु१॥ विडिगि
 रुलायोष वृद्धगुगुलुनासनी॥ सयिषावटिका क्वीखादद्वारिताजनी॥ इष्टवत्तयवीमदकूषनाडीविष्मधनी॥ वटिकागुगुलु१॥ अमृताय
 ढाल मल्लगिरुलागिकेद्वकिमिधानी॥ समरागानावृद्धसर्वसमागुगुलु रोग१यगिवासनमेकेका गुटिकाखाददक्षयतिमान्॥ जयतिवनेवासा

६०

कगुल्लादतस्त्रयथयालुनागदीन॥ अमृताधागुगुलुवृद्धका॥ ॥ सन१गिलासमीजिख सलाकात्रजनीद्वयीयलप१सघत१कोडलूगिसूद्विकत१यत्रशा
 अयात्रज१सकागीस गिरुलाकसेमानिवा कषुमनिकानिवा॥ यलप१कूतूकोषू१सघतवनवत्वविशाकलीयकनमासासिहमाकालानसातमभाल
 य१सल्लमयतस१सवर्ग१कर१यत्र१॥ वनममलानाधिकारशा॥ सघर्तयनीवेद्य१सल्लयतिसवयत॥ यसीमधकककन किंकिइष्टूनसर्विषा॥ वेङ्गागः
 लुपनीवेद्याद्यगकोडसमन्विता॥ गानिकियायथाकृयाविरुतरुद्धनागनी॥ काककमकमकसूक्ष्म गयसर्पिषापिष्ट॥ समयतिनियतलयाद्वतमागनुर्ज
 नसंदरुशकृतास्यकनीनिगुल्लधनिल्लतुमिणिगस्यवाकषाय१गीतमधुना१सिन्धुलपोदयाहिताशाआसासयकूत्रधिरवसनंयमध्वमयता॥ यका
 गायकूदेयध्वदेनवननसंगयशा॥ का॥ धा॥ वे॥ श॥ त्व॥ जो॥ त॥ पु॥ स्त॥ द॥ द॥ समरिदीकगगा॥ सरिगुसेधव१॥ यी१को१ध१सु१मा१य१द१म१क॥ यवकालकलनानी नि
 ॥ सहनतसनवा॥ गुडीगान्नयवाग्वपिर्वेसंधवसमती॥ अथथमर्गुवनि पायसायुगवीकृत॥ तनात्रकद्वयाद्याया कयिनातित्रजाकरोसद्वयानेय
 नीक्षक स्नेहलपोयनारुनी॥ स्नेहवसिन्धुकवीर्ण वीरधायधसाधित॥ ००॥ गिसफाहके१वाका१सधावतहिताविधिशासफाहात्यनग१कायो सनी

नयनवक्षिणा ॥ जेनाहनिदामस्त्रिषा मीसीमधकभववापयोनुनीकीजीवनैरुदमसुवनदनीजाणीनिम्वयडालभ्य कर्जाकदनाहिनी। मधसिख
 मधकधमहाभर्तायेववायेवक्कलगायनघनयसुविद्यावयन। जयनाममहावीर्येसर्वेवसविष्णुधर्न। आगनुसरुजायेव चित्राकाशायियव
 लाशावेयमामयिनागीनु साधयकीधुभववा ॥ **जीनायधर्न** ॥ ॥ नकेमालस्ययगानिगनूतानिरुलानिवा समतावेवयगानि पडालानिखयोसुथा। द्र
 त्रिदमधक्किष्ट मधकनिकनोहिनी। मस्त्रिषाचननागीन मस्यलुंभनिवहवग। जगतीकयिकेरागे धनयुसुविद्यावयन ॥ द्रवनीपुनामर्तनथानागी
 विष्णुधनी ॥ सद्यक्किन्नवुभनवि कनजायमिदंशुनी ॥ **कर्जायधर्नी** ॥ ॥ जाणीनिम्वयडालयग कइकादाधीनिःसातिवो मस्त्रिषारयसिक्कुउनुमध
 केनेकाकवीडे **समेष्ट** ॥ ॥ सयिधसिद्धमननश्रु वदनाममीणिगाऽसाविष्णु गरीताऽसत्रजावनासगगिकाऽड्यनिनाहनिवाजागिकायेधर्ननी ॥
 अकईमकभनकादहनजालयानिहकिवर्त अश्वत्थस्यसवक्कलकर्त चूर्णनथापुपुनाग। अश्वत्थनिहकिर्लमयिलुंगधुपदसाधित ॥ पिशासास
 लिगलकेजलगतालेयाहथावातकाऽमधसिक्कुमधक लार्धसईनसंगथा। मस्त्रिषावेदनैम्वेविद्यासयिविद्यावयन ॥ सर्वेसामिदं धर्नमिदं यमिदं

१८७ हिस्सा ३७

३ कल ७ भाष्य के ना ना ५ मसा १ नाती ५ नं य व न य ल २२ वानी

३ यत ३४ सि

३ यत ३४ यत ३४

यत ३४ यत ३४ यत ३४

धर्न ॥ **मधकधमहाभर्ता** ॥ ॥ ययोनु कर्मजिषा मधकाणीनयद्रकोऽसद्विडासतसयि ॥ सदीनेवतीरायनी ॥ **ययोनुनीकायधर्न** ॥ ॥ सिईकक्ककवायायायाटल्यो
 कदनेलकी ॥ **देगधवतनजापव दादविष्णुधनागनी** ॥ **यादलादिनेली** ॥ ॥ वचनवटसुहाव मस्त्रिषापद्रकंनथा। ययोनुनीकीद्वीयेपटंगधनकीनथा। व
 नेसेलीवियकवीसयिदीनसमायन। अग्निदग्धवलेष्टरु कातामडापनीयनी ॥ **वेकनाययमर्क** ॥ ॥ कभनकात्यलगन काथयनल्लोसि। ततऽयादावला
 थन गेलयसुविद्यावयन ॥ कर्कोऽकभनकायामागेपाशिका मधकासुव। एगलेलकभनस्य वना। मधनरायने नागीसुपतमासुजा नियाकागनुकासुवा ॥ क
 धर्नली ॥ ॥ इवोस्वतसेसिद्धवा गेलकीयिस्तकनवा। दाकोत्त वृधकत्कन युधनयनरायनी ॥ यनेवविधिनानेल्लुगनेनेवसाधयन। तकपिलासुनेह
 लासयिप्रवायवायना ॥ **इवोनेली** ॥ ॥ आरुद्रमागवा वहासर्वेसामिनि ॥ आर्दवागधनहिने मधवाहिरुननथा। वागीययमुर्दइष्ट सल्लधधगनि
 वनीकुर्यात्सदाहकभुष्ट वतिगुक्ति। तिसिम्पगऽकासुगययुडीनु द्रववतदनीविधिशा **सधायसाधिका** तऽ ॥ ॥ आदीरुर्गविदिद्याह सुवयकीतवात्रि
 लायिकनालययैकाय वधकुकभनिर्त ॥ अवनामिनेमनेह न डनेवाववीययता अर्कदतिदिफम (धु गत) यनिवहयगा। अलेयनीथेमस्त्रिषाः

यिय ३ धनयुष्य ३ यत लधु वनेल लक लोध ३ भाष्य के वल ना ना ५ मसा १ निलुनेसवत ३२ यानिय यत ३४ हिस्सा कशायिय ३ नती ॥ सधायुष्ट ॥ २

मधुकांवासुयविर्ग। गतलोभघृणामिष्टमलिविद्वेषययन॥ न्यलोभधदिकषायन्तु सुगीर्णयनिसुवनो। यवमूलीविषर्कं दुःक्षीरदद्यात्सुवेदन॥ सुखापुमवगार्थम्
वकुनेर्लविज्ञानता। मांसमान्ननसंक्षीर सपिण्डयः सतीनडश॥ वृद्धं लीवानुपानस्यादयं रोगाय जानता॥ गच्छितीरसं सपिण्डं संधत्ता सधसाधिर्ग। गीर्णल्ल
कयायर्क। यागर्गगुधपिवन्नरश॥ सद्युर्गनासि सुहार्त् लाक्षा। गंधूमसंमर्दनी सधिमर्कैः स्फिरुग्नव पिवन् क्षीरं नमानवः॥ नसानमधूलाकायः सिताकल्क
समंभुर्ग। किन्नरिन्त्रयागस्मीती संधनमविनागरयत॥ क्षीरसलाक्षामधुर्कं ससपिण्डस्याजीवनीयेष्वपि वत्सुखार्थं। रात्रयिव स्थर्जवपयसाशनस्यः
गंधूमसंमर्दनी सद्युर्गनवाथ॥ लाक्षासिंहाककस्येद्वाग्ने गन्धः सुलीकनानागवलायनश्वा संरग्नयूकास्ति नृनिहन्ता दुष्प्रानिकयोत्कलिसायमानिः ६२
॥ श्रीलालागुलुलुश॥ ॥ सवतास्यगुरुग्नस्य लक्ष्मसपिण्डसुधुर्गेशायनिसान्यकषायेश्व सर्वरोगवदावली वातव्याधिविनिदिक्षान्सुदान्नगोपियाजयता॥ ल
वतकटुर्कक्षान् मसुर्मथनसागयी॥ व्यायामं वनेसेवनं रोगान् नृक्षान् भववा॥ रात्रयि अधिकारुश॥ ॥ नाडीनीगनिमन्त्रिष्य गस्तुत्तयाद्यकर्मवित्। सर्ववृक्षकुर्मकैर्यु
न साधनं नापनीदिक॥ नाडीकागकनासाध पाणिनालययतिषकापुष्टयुष्टीरुल्युर्ग। सुलेष्टपिष्टेष्टपल्ययत॥ येहिकीतिलमीडिक्ता नागदानीनिसुगंधयः
रुर्गनेत्यथापाकं युयननगथाविषका॥

। धृष्टिकीतिलयश्चाक्र निकं रात्रिस्तेधर्वश॥ सुत्यर्गानिलमध्माद्यः सवयद्विन्त्रसाधिनां आनयधनिमकात्वा वृद्धेषु कोडसंयता। मगवर्हिषु लक्ष्म्याद्या साध
नीगनिनागनी॥ धान्यारुलवग्मदनोत्पलानि पुगस्यवत्तुग्नवत्तुमूर्या॥ सुहार्कदुग्धनसहेऽसकल्का वातीकनारुन्यवित्रनार्गी॥ वालीकूर्गमाद्रिकस्य
यूकी नाडीघमकूलवलोर्मवा। इष्टवलोयद्विहिर्गुर्गैर्ल गंभयमानं गनिमागुर्गुनिजा ल्यक्केसयाकेकर्तडदनी सिधुन्कसीवव्रलयावसूके भवकीकना
हृत्पवित्रननाडी सुकक्षीतपिष्टासहविगकन॥ कणद्वलरीरुर्ग नाडीसमोणितावया द्वात्रसृगलगाकिंद्या नृगभर्कलकदावना। एषान्यागतिमन्त्रिः
ष्य द्वात्रसृगानुसोत्रिनी। सुर्विनिदद्याध्वान्नयन् वात्रस्यात्सुविनिहेनग। सुगस्यार्कसमा। नीय गमदवन्धसमावतन॥ गतः क्षात्रवर्तवीक्षु सुगमन्यल्यव
गयन। क्षात्राकमनिमानवेधो यावन्नन्त्रिद्यतगिनि॥ रागननयषविधिः कार्यवेधुनजानता॥ अर्बदादिष्ववाक्रियामूलसूत्रनिधययन। सुविशिर्यववर्ज
निवाविगन्तासमकगशमूलसूत्रं नवध्रीयागकि न्नेवायवतद्वर्ग। गुग्गुलुमिरुलायाषः समोलोराक्षयाजिनः॥ नाडीइष्टवलोष्टुल रागुन्दनविनागर्ग। स
फाहगुग्गुलुश॥ ॥ गुग्गुम्यालासलिकालादिगेविगकसामूलनयेवगत्रयैवकथनकसापुष्टयिचगयमिर्गमिलिर्गविवाचयुसुर्गद्विषाग। लिल्लवतातनी

यतेलिययत्कृत्वा न कमेकमव माषानिधाय यत्राचिवनाम० सा॥ सिद्धनकर्षममिषबु नकागुसा ना काग्यं वाविषगामध्वथ कल्की गलत्कष्वर्नदृष्टं
तथानाडीसिद्धसहाविद्यनीगाद्वयतेलियद्रुमदवनागयन॥ विद्यनीगमसूनेर्न॥ ७॥ स्वज्जिकासिन्धुदयगि त्रयिकानलनीलिका। खनमजलिबीजपूतिः
त्वग्ममृगसाधिनीदृष्टवत्पुगामनं द्रुयनाडीयन्मयहं॥ स्वज्जिकाद्यनेर्न॥ ॥ क्रीककवर्नकयिन्मविल्व वनम्यनीनां विसनाइवगी। कल्काकषायविषयं गु
तेलमावायामसूसासनलपिर्यगुं॥ सोगन्धिकाभावनसाहिपूर्य लाध्वनिदत्ताखलध्वनकीक्षेत्रगनगाल्ययुतवनिनाजीलाहं द्रुनांभीगुखवेवाक्रीक
येनेर्न॥ ॥ रुत्तागकाक्रमनिवेलेवत्सरुमन सिद्धविर्गिगनजनीद्वयविगुकेश्च। स्यामाकवस्यवनसननिहकिनेर्न नाडीकहानिलाकृतमयवीवन्मशू॥
रुत्तागकाद्यनेर्न॥ ॥ समलेयगुनिगुडी पीठयित्वा तसंनव। ननसिद्धसमनेर्न नाडीदृष्टवन्मयहं। दिग्यामयवीनां गु यानार्यजननावनेश विविधधूस
वैषतथसर्वेयुलाचिवा॥ निरुज्जिकासी॥ नलावजघश्करुयशायाद्विवनीयविहितामुवत्यं गासर्वनाडीपरिषद्विदद्यान्॥ नाडीवन्मविकातशा ॥ गुदस्येय
यथदृष्टविग्मध्वसाधयुक्तनष्टकावसवर्नकार्येयथयकनगक्तुगि॥ कव्वणककागुली गुदूयः सयूनत्रेवाधसपिष्ठापिठकावस्स लयः सुसूरागुनदनापिठक
नामेयकानां त्रयण्यनेयवेर्न॥ कर्मकार्याधिनकानं रिनातीवर्नकिया। णवन्मयाटने शोत्रवद्विदाहादिककर्म॥ विधाययुधवन्काया यथादाययथावत्

[illegible]

१७ घाटलक काला जमसा ७१ नाती ७ कइते लयल ३२ यानीय ल १४७ हिंवा क। नैला दग
मरकणः

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

[illegible]

धन॥ निद्रकचिरुत्तालावे लयले लयमायनी॥ अलङ्कारनरकायी अयमवक्रियाकुमरा॥ खदयमुक्तिगंसि त्रैनाडीसुदनवद्विमान सख्याधूतवनादेश्य सस्त्रिन्वे
नयनाहयन। उलमाया। उचिठिकी संकेद्यवतिसाद्वर्गा॥ न्य। गुध्रदियूवूतु सु। कोदयकेनवावना॥ कर्मविरुविसयोके। श्यस्केती मरयादिग। त्वग्याकस्यग
हन्त्या॥ सुवेयनृदिनीयनशा वल्लानेनकाधून मधूरो। अयनाहयन। नसक्रियाविधातया लखिगेगतायानका। यधक्यपन्नीदिसिद्धय गेलदयमनकनीनक
विडधिववाचि क्रिया। गानिग। द्वेद। कषायकल्ल सप्पीषिनेलयनूनसक्रिया। गमधनन्राप। नयेव वीझा। वीझावयात्रया। अर्धदमा नयाकां वविडधीनि
लकासकी॥ यत्याय्यायव कुक्षीनरिषक नवायनिक्रिया॥ सुकदावाधिकात्रश॥ ॥ वागलनयसर्पिष्ववमन। शृष्णी। रुत्रयेकक्षया। यिरा। रुत्रयो। क्षात्रक
स्याविनवनवासा। वमनविनवनयागंशक लोका। श्वक्षिनयिथाकया॥ यकुत्रमाल्यकक्षमदगिवसर्पसितायधन॥ वरुदाषशसज्जध। कक्षीवदः
गम। वननगायनमन। क्षाषरुनिमार्थकनेयायुदयादवलमाधु॥ क्षाषाक्किक्षरुदयेवमन कक्षयोर्द्विग। गष्या। ववा वासायडा। लानी निम्वस्यरुत्तिनी
देव। कषायमधूनापीगावाक्किक्षमदनाविनी॥ यवकाषायश॥ ॥ विनवनयिथाकया। एवदनी हलणिके। शमन। शिलालमनियानि। लु। मार्कयय

फूटननययागः। कर्तव्यजीजगर्जसकृष्टं (गमस्यपिष्टं) यत्रयुद्धशायननिविष्टावतुर्गुलस्य गकलयन्मन्यथकाकमायाशनेलाकगण
 स्यननस्यकृष्टं न्यवेरुयेद्वद्वनद्वेष्टा। उगजकृष्टं सचवसोवीरकसर्वेयेथकिमिष्टं किमिसिद्धाददुमलकक्षानां नागनालयथा। का
 लिहिकृष्टादि लेयमाणादिकानयता। आनन्धधस्ययगानि। त्वानालनलययत। ददुकिटिकृष्टानि रुक्तिसिष्ठातिवव॥ सोलयाकानिसाद्वोः
 सकवानालियवयत॥ ध्वनूनससपिष्टाः कलुखकदाषनासनाशकासमर्देकमलानि। सोवीनेगुयवयत। ददुकिटिमकृष्टानि जयदेवतः
 लयनाग॥ वीजानिवा मूलकसर्वयानां लाक्षाजयाययनागवीज। जीवकृष्टायावकिं सकृष्टं पिष्टुवमर्गं तुल्यनस्यात॥ ददुलिसिष्ठातिवि
 टिमानियामां कपालकृष्टं विषमश्वदयाग॥ किं उगजगजकृष्टं निगमसिद्धनसर्वेष्टाधन्यासेविष्टेलयारी ददुकृष्टानि सदन॥ द्वोरायासे
 वकुमर्देक। नकाकाकिं कपिष्टा। लिशिष्टे लयनपिष्टमूला ददुष्टकृष्टाविनाशयनि॥ तुल्यानसः सागलताषन। सवकदेयरायाविरागः
 ॥ यानीयरकननदमपिष्टा लयः कनाददुगजदुसिद्धशायनदीसमर्गं दत्तमवमहावधी। धयेनाहमरुस्य ददुष्टेयामुगममति॥ गिरयः

६५

वाकवी५

नीखनसनपिष्टं मूलकवीजयलपितीसिद्धा॥ क्षीप्रकदल्यावा रजनीमिष्टातागयथा। उगजधयायातवृत्तूनयवशातनलपिती। सिष्ठाभूतागयथा
 दु कदुतेलयननव॥ कासमर्देकवीजानि मूलकानां तथेववागन्धयायादामिष्टाति सिष्ठाभूतागयतमोषधी॥ धागीनसः सङ्गनेसायवागः मोवीनपिष्टं
 गदावकिरुवकि सिष्ठातिनयथानरुयसुधेमदमर्दकैकनाति॥ यगकाषनगालीसंगेलायामनः। जिलाशसफादुमपिती। कासिसिद्धाविष्टनिवा
 नर्माधायकृष्टयथाकिमिष्टनुवकि रालातकावजुजलाधुई। गेशा। रागमतिवृद्धिस्तिलनेलमिष्टः सवोमिकृष्टानि निरुक्तिलदु॥ गगर्गलखास
 विठिङ्गमना सपियालीकासदुगासमूला। सायामलासामलकासनेला सवोमिकृष्टानि निरुक्तिलीरा॥ आनन्धधसेउगजः कर्तव्यवीसागुद्वीमय
 नरुत्रिदु। आक्रेः सुनाङ्कः ४यदिरोधवग्ध निम्बाविठिङ्गकनवीनरीनकः ॥ गन्धिलसुथोतसूनः सिरीषः सानानसाउमुलकयूगंधारुगिर्जकोवसक
 सकयदुष्टा पीलूनिक्कसूमनः ४यवालाः ४वतादुनरुवतानि कौरारुल्लानक। गोत्रिकर्मशर्लवामनः ४गिला गुरुधस उलाकासीसयलायजिनमसुसुर्ज
 ॥ लयदेनयेविठिगाः ४पठनागमपिरुपिष्टा ४यननवपिष्टा ॥ सिद्धायनसर्वपनेलयका। विनामनामी॥ क्षात्रयदग्धगजगुज। चरुयिदहातिवजाय

[illegible]

घनकाथनरावयन। सफ धार्यवनिम्वनु मार्क वस्यत्रसनहु ॥ सिग्धस्त्रिननन्दीमानयाजयहु गुरुवि दिनामधूनीतिकरुविया स्वकिगासनवात्रिना। लेहा
मस्मान्मृतावायि कालेकृद्वायलंरयन॥ जीवुवराजनकार्य सिग्धलघुदिगयनयेन। विवद्विकादस्त्रयगुनीक कयालदंड किठिमाससादि। सगप्रविः
सूठविसर्यमालाकरुयसकाशिविधकिलाण॥ रगननलीयदवातनकैजाधिवनाजीवुनमवनामन॥ सर्वयेमहा लुदनाग्विसर्वा न दुष्प्रविषमूलवि
षनिहकि॥ सूलादतसिहकषादतय सूयिषसान्धर्मधूनाययानना। सभोयया गादचियदसनि सयादेयायानि विनागमागु॥ जीवद्विनयाधिजनावि
मरुःसूतनगधनुसमानकानि॥ यवनिम्व॥ ॥ सिग् कीजिरुलाथाष मेजाजीकानवीववा। सेधवानिविधकय्य वयोलायावसूकज। विठिगवाजमादव
मस्मान्यमनदातव॥ यावत्यमानिसर्वानि गावमागु कुगुनुल॥ सिग्दयसयिषासाई गुठिकाकानयद्विषका। पातराजनकालेवा रुकयनुयथावलीह
त्यस्यदगकषानिकिमीन दुष्प्रमनिव॥ गुरुधैलमविकाताग्व मुखामयगलगहन। गुरुसीमधरुग्वं ॥ गुल्मचायिनियकृति। योधीको वगनाधन्या
यद्विषुनिवासूनोना॥ एकैकिगानिकागुगुलु॥ ॥ यलेवाङ्गनिनसानपानराजनकैमोली सीलिगवादिनवात्रिसर्वलुग्दायनागन॥ निम्वयदानंदा
वीइनालेरागिकेनाहिनी गिदुहा। कयादईयलासानयलययाठकं जायमानाध॥ सलिलाटकसिद्धाना नसखरागसिग्नदियधुन वंदनकिनागनिकेमा

सर्वकृष्णविनागनी। यामाविचिकाकलु वेसयादिहिमनी॥ नकयिलानिगानि रागनकविधात्वकन॥ **वदुर्लभितायनेली**॥ ॥ सिद्धरगुमुलनसाश्नसिकु
 कुन्ने॥ कल्कीकने॥ कदकनेलमिदवियेकी। ककुशवलिटकामथवायिसुक्का मर्यश्ननसरुद्वरगियेसक॥ **सिद्धनायनेली**॥ ॥ मक्षिष्यगिरुलोलाशो निग
 सिलालगधकेशयुलिनेसेलमदिय याकीयामाहरीयरी॥ **आदिलयाकनेली**॥ ॥ स्वनसनहिद्वीयाशयवलेलवगुमुलीककुविचित्रिकायामामर्यगमदवनाग
 यन॥ **द्वीयायनेली**॥ ॥ अर्कपुत्रसंयक रजनीककसंयरी॥ कदनेलीनिहंयगन कययामाविचिकाशा **अर्कनेली**॥ ॥ गन्डीनकाविगकमार्कयाकक
 कडमलवगनले॥ समुशनेलीयवमलुलककददुदुदुवगनककिठिमोयहानिश॥ **गन्डीनेली**॥ ॥ यनामघनसिद्धरसतिववर्लुया॥ **गिनी**॥ **आदि** **गरे**
 ल्यनभिभयक **लमयक** कसर्वन॥ हनीनकीधूममेयुगरं जम्हीननसर्वकसिद्धनेमसमायककदनेलनविमदियता॥ पुनदादिययाकनेली
 यिनसर्वककदनेली॥ यथाकनेजसिधेयवाकवीहनीदसेधवीपिष्ठासुयितमागुगविषककुविनागनी॥ सूर्यसकमलपिष्ठा सिद्धरसमायक।
 कदनेलविवकवी। लपिगननमागुयानन॥ ककुनेनविनागनी॥ **गमनिग** नावसंयटन पुटयाककद्वीगकदलेनेनेलीनविमदियनेन
 गन्डीनेलीकली नायगुलनेन॥

जलमदगुलीनसा **गहलानी** द्विगुल्लघना लुदयसुसपिषयाययसिद्ध कयानिचकपिरुयवलानगर्भसितकवाहिनीविसर्पेचकपिरुवागासग्यालुनागवि
 ह्नादकानसयामानूमादकामलादानकलुशहडागगुल्लविठकामसुदलीगुमासा **कुरहना** दनानसद्युपीनकालयधवलसूर्यशायागगनेरपिजि
 गान्महागिककैद्यन॥ **महागिककैद्यन**॥ ॥ यदितस्यगुलायवसिसपागनयासुलोउल्याद्वीशसर्वेन कननात्रिष्वनसायय्यद॥ कडजा **खेव** कय
 किमिहनगुल्ल॥ हनिडकनमाल **गुल्ल** वीगिरुलाहवग॥ सययल्लुगुसंरुल्ल दगडा **लेगु** वात्रिना **अरु** गागवगर्भकु कययमवतातयग॥ **धारी** नसग्यगु
 ल्यागि सूर्ययगुल्लकयवग॥ **महागिकककल्ल** मुयथीकैश्यलसमिने॥ निहकि सर्वकयानि सानार्कजनवसिखननाग॥ **महाखादि** नमित्यकीयनकयविनाग
 नी॥ **महाखादि** नद्यन॥ ॥ निधामनाकययगालनिदिज्जिकाना रागनचदगुगयलानविषयनद्यनपी॥ **अरु** सापिगनेसनमनिज्जिननससंयनस्यवियधसि
 वरागकल्ले॥ या **अविठि** गसुनदार्गजोयकल्या द्विज्ञाननागननिगमिसियाकयैशगेजावेनीमन्त्रिवत्सकदीयकागि राहिल्लनस्कनववाक **अमल** युकेः
 ॥ **मक्षिष्य** यावानिविषयावरायमायासंसद्वेगुमुल्लयलेनयियवसयै॥ गल्लविर्कययगियवत्समीन सध्वसिमङ्गनायधकयमीदक॥ **नागी** युल्लवेदरा
 गन्दनगलुमालीजयूद्वेसर्वेगदगुल्लगुदार्गमहाना यकोत्रविस्वसनपीनसकागसाय हन्यालुनागनदविडाधिवाननकी॥ **गुमुल्लयविक** कैद्यन॥ ॥ वासागु

पूरीरुलायदालकरजनिम्वसनकप्रवर्ण। गल्काधकल्लेनघर्णवियकी गदुजकोकप्रहृन्विदिष्टी। विसीर्णकल्लेहुलिरुसुपादः कस्यदिगारिन्नगला। विमर्त्यधयोना
लिकींकाकि मवायजीवदुत्याह गावर्णनकसी॥ **वज्रकधर्ण** ॥ मडिष्टात्रिगिभवक मर्धानग्वधयल्लेवेधा। एतकस्यनसेऽसिद्धेनेल्लकप्रहृयती॥ **कदनेली** ॥
सकयल्लुकरजार्क मालनीकरवीनकी। मल्लसूहागिनीयासी विगका सुठयानपि। करजवीजगिरुला जिकदकनरनीदयी॥ सिद्धार्थकविर्गगंध युयुनाउश्वसे
हृत्तन॥ म्मेऽविष्टेकेलयाचं उगतकप्रविनागनी॥ अयझादजकीनामनोतीइप्रवत्तायह॥ **वज्रकधर्ण** ॥ मनिवालसिन्हावृक्केऽययवाविजटागवृत्त। सकडसवि
गालीत्र जिग्माद्वदानूर्वदनेधकदनेल्लपंचयुक्त द्वाष्टेविंगयल्लानिनेऽ। सगमसर्गनदर्थ गम द्दुग्निगुवितागनगी॥ सर्वेष्वपि वकप्रवृत्ते लमेनयुसंश्रय॥ मनि
वाधनेली ॥ मनिर्वहृदनादनी क्षीतमाकेसकडस। दवदानुद्विडंक्ष मीसीकप्रसवदनी॥ विगालाकरवीनवद्विगालुमनशजला। विगकोलाङ्गलीशोला
विगगंधकुमर्दकी॥ सिनीषकूटजानिम्बऽसकयल्लेसूहामना। संपाकानकमालाद्व रयदिनपियलीवरा। आनिर्वीति वंयलिका विप्रस्यद्विपल्लवका।
आदककदनेल्लस्य अमृगस्य वडुगुती॥ मत्याल्लालुपाणवा गनेमर्दगिनायवगा। यक्कागेल्लवर्लक्षगमुक्तयन काष्टिकानुवत्तन॥ यामाविवचिकादद

दादिलयाकीकला मनलपिनमाण मलालागवतिकुतु ॥ म्मककविनागनी॥ यक्षात्यक्ताद्वर्दनायययया न्मासा न्मासुगर्तवाय्यधसान्
यल्लगगलान॥ नमुगश्चावपीज मासंममभाकयनेष्वय्यय्य॥ गालिकादवगंधूम यवमझादयाहिरऽ। यूनानोऽकचित्तनिके गमकाजामलसंयता।
नीवलामनर्यानिर्ली निर्लीमायधतत्यतथापिन्माससनावडी कसीकप्रमयादति॥ **कक्षाधिकानशा** ॥ अयझकदनेल्लेन सकसाभाम्बुलिनि
यका॥ गगासुवमनकार्यऽयहालानरुक्तिवानिना॥ गिरुलायत्रकप्रोक्ति विप्रकश्चागुसंश्रय॥ गिरुलाकोडसयुक्तापिवद्वानवकापिकी। विसर्था
मनोदिनु रिषगगापियाडयत॥ पियलीवर्द्धमानम्बा लसर्नवायुयाजयन॥ सितामध्वकसंयुक्ता गउमासल्लेकेऽसदृशा सुगुर्जदीयकयमुख्य
ददध्वननुग्रहा॥ गस्यनस्यानैसकाहा इदद्वेसवेदरुजशसिद्धार्थतजनीकोल्लेऽयुयुनागनिलेऽसदृशा कदनेल्लनर्मिष्ठमनइद्वरुनेदिनी॥ द
वोनिगायने लेयऽकनुयामाविनागनी॥ किमिददुदुनज्वेवगीगविरुयदृष्टमग॥ कक्षकऽकर्मकयो दसुपिरुबुभववायदोकोवकि
यांवापि क्कोऽनागसमासेन॥ सुविऽयीलोमहातिके कार्यगभेतिनमारुती॥ निम्बस्यपणासिददाद्यन धर्गीविष्वात्थथकोपियुधगा॥

विष्टे लवतयके लयाहनि स्नायुक नागं यद्वा मावत्वा वा लयः॥ विसर्गविस्मयाधिकान्तः॥ ॥ सर्वासां वमनं यद्वं यदाला निष्टया स केशः॥ कषाय
 ग्धव वा वत्स यश्चाद्गुल कलिके ॥ स शोर्दं या यथे दुष्की रसवाहिल माविका॥ वागस्य न वंदय समनं वा वलेन स्वा॥ गं विनि यगुनियोस
 रुद्रिदा वृत्तं स यत्ने॥ रामानुज न विस्मट मसूनी गभने यालि वत्॥ इराण्या हितदा यस्य विष्टुद्या निमसुनिकाः॥ निर्विकारा लय यथा यथा क
 यो ल्य व दना॥ गयो न वागजा वा क लाज यत्ने॥ स ग के ने ॥ राजर्न ग क य स य पग दाना न स न वा॥ क टी क राल मूल क थ न विधि क न हि गु मा षे क य क यी न वी ज
 जया या म्भ द पि व स दृ न म यी न म धि शि क द्या ॥ स द्या म्भ ली सि द्या वा मन क स म डा क ष ण वा थ य नि ॥ योग वा स्या व ने न यु थ म म य ग द दृ ष्य मा न य या क
 ॥ उ द्भू य म्भ रि ना का य र षे जा र्य यु य क न ॥ उ म्भ रि या ग मि त्या द न य द ग य ता य द ॥ उ द्भू य क र्वे स नी ली य व व ष क यो स वी ज वा क्री॥ स न स म य न क ला शो धू या
 ना मा नि का दि रु त ॥ उ द्भू क ष ॥ न ना म्भ ल म व वा वि धि ग र्ही न ज ष म्भ यी न रु नि म सू त्रि का म ॥ ग द म्भ ग म ल क ष क म्भ ल कृ य षि ना कृ सा म सू ती म्भ रि ना
 रु नि ग थ का द्रु मु वा न द ॥ नि ग वि वा क्क द ग न वा नि यी न ग थे व रु ॥ या व त्से स्या म स र्या ग ना व हि ॥ ग ल क द ले था कि ने ना तु न ना म्भ गु ल्बे नि न व द्भ

गाल ४७७५ मा क क ४७७१ ग ५५ द्वा मा व द्भ वा न क ७७७७ य म त ॥

ग॥ य्वा षि र्ग वा नि स क्री र्दं यी न द्या गु ली रु र्ने ॥ गाल ख क क न गी ना म्भ ४ स क या का य ण मे ष ॥ य द्भ क म ध की ला र्ध ना ग य षा स्य क ण री द्भ रु त्रि द वि ठि रु नि ७२ क
 ला ग न त क थ ॥ क र्द ला द्या य रु क र्च सि क्क क रु न्भ मे व वा व द्भ वा न गि ती ष थ क पि न्क रु ल म व व ॥ ना य ना ला थ ग स र्वे दृ न यु स वि द्या व य न ॥ या थ रा ग म नि रु
 त्या गु क्क न द्वा ध म द्भ म न ॥ स र्व की र्द य द ७४ य लू द्भ स ग द्भ न य वा वि वि ध य व स द्भ ७४ य ॥ ग थ द ष वि स र्पि ष ॥ ना जी षे ग लु मा ला स यु रि ना र्मे वि णा ष ग ॥ ज ग
 स्य वि हि र्ग ध र्य य द्भ क र्दु म द्भ द र्ने ॥ म द्भ म द्भ क र्द र्ने ॥ ॥ द्वि य ७७ मू ली ना स्रा व द्या य गी ली र्द ना ल र्गा ॥ सा स र्ग धा न्य क म र्क ज ये द्भ ग स म नि र्ने ॥ डा क्का का स
 य र्थ य द्भ न य द्भ ला षि वा स र्के ७ ला णा म ल क द्भ स र्ग ७ सि ना य क र्दु ये लि के ॥ सि ती षा इ म्भ ना ष न्द्र ॥ ग र न्य ७७ ध व ल्के ले ७ य ले य ७ स द्भ ग ७७ धु म्भ ७७ म्भि स र्वे द
 रु रु ॥ द्भ ना ल रा य र्थ र्क रु नि न्द्र क द्भ ना हि ती ॥ ७७ धि क पि रु जा र्या वा या न नि द्वा थ द्या य थ न ॥ नि म्भ रु नि य र्थ र्क यो ७ य द्भ ल क द्भ ना हि ती वा स र्द ना ल
 र्गा ध र्गी म्भ ७७ र्द द्भ ने र्ने ॥ ७७ नि म्भ दि क ७७ यान ७७ र्क ना या ७ स स न्द्रि त ॥ नि द्या य म सू ती रु नि द्भ न र्वे स र्पि स म्भ वा ॥ उ नि ग य वि णे द्या रु य न स र्वा द्भ ग न य
 ॥ नि म्भ दि ॥ ॥ य द्भ ल क लु ल म्भ रु य ध न्य वा स र्के ७ रु नि नि म्भ क द्भ का य र्थ र्क स र्ग ज ली म सू ती ग म थ द्भ र्गा य द्भ ७७ ये व वि ण म ध य न ॥ ना ग थ य न

तनीकिंवि द्विष्टाट द्रवणमनया॥पटालमलकमगुलीयकीपिबहुनिदामलकलसयुगी॥मसुनिविस्मृदविदाहणनय रुदवगामानि वमिद्वितायद॥यटाल
 मलान्नहणुलीयकी नल्लेवधगुस्वदिनहसुयुगीपिवेजुलसुकाधिगसुगीनमसुनीकागविनागनयन॥यदिनगिदुलानिष्टयटालामननवासके
 ॥का॥धमकोरयजयतिनामानिकमसुनिका॥कसुवीसर्वविस्मृद योद्वादीनपिपानन॥यदिनादक॥ ॥सुखवीयननियोसी॥हतिदावृत्तसयुगी॥नामा
 निद्वानवीसर्वमसुनिगनयनयन॥अमनादिकषायगु जयत्यिरुकरानिका॥सोवीनहगुसंयिष्ट मातुर्लंगसयुगीन॥पुलयाच्यानयदागुदहवापिनि २५
 कनि॥याददाहयुकनते पिटकायादसंरुवा॥गुसुकीयुसंनि वरुणगुलाम्ना॥पाककालेगुसुव्रीसाविष्मयनिमानगुगस्मात्संवरुणकार्य ननुय
 ध्याविष्मयन॥गुगुवीमधुकीडाका मानटजदिमसुह॥पाककालेयुदागव्यरुखजगुठसयुगी॥ननयाकसुज्यागु ननुवाययकयाति॥लिङ्काद्रावा
 दर्नदुर्लवावनार्थगुठनवा॥अननाहउविषयन वागपिरुकरानिका॥गुलामानयनीनस्य कम्यमानस्यवायना॥धनसंसनसाहसंता ॥शीषनसंधवसं
 यना॥दाडिमामुनसंयुका युवाहस्यननवाहिना॥गथासाज्ञावलहावा कवगुथागुकागिरिथपिवेदसुसफणी॥हाविगिरिवादिनागनेशसोववाविषयजीन

गायत्रीवदुर्वनिर्ण॥जागीयगुसमझिष्टी दावीयगुहर्ल॥समा॥विसर्यानीसविष्मृग किनागववगीनथा॥दगुल्लयवृद्धन वृत्तितासमभतिव॥धगुहर्लस
 मधुकी कथितमधुसयुगी॥मुखनागकहनाग नगुपार्थयसस्यग॥अज्ञासुकीयुगीसंनि गवधमधुकासुना॥मधुकीगिदुलाम्ना दावील्लडी लमल्लली॥उ
 गीनलाधुमझिष्टी पुलयाल्लगनदिना॥नयन ननदगाग मसुर्या ननुवनि वापववल्कलवृत्तुन कुदिनीमव वृत्तुयन॥रसुना कविदि कनिकवि
 नगुमयनलना॥किमियागरुयावापि धुयथकनलादिरि॥यदनादाहणत्यर्थगुगानं वविस्मृदय॥संगुनुलवलाकाथं येद्वाद्यायदिनादक॥कसु
 रयानजालिङ्गात्मधुनाकलसुद्धया॥पैवनिर्कयुगीजीनयानार्थजनराजने॥कयोदुहाविधानं वनेलादीवजयचित्री॥विषयेशसिद्धमनुष्य यमुकानियनयनशागथा
 ग्मागेनसंस्वष्टकस्थि सोनिनमाह लेशानिगद्वयागीनगिरीयमुकक॥सलाधुरादुजियनी गकगनेशसुखेदविष्मृद विसर्वकसुदोश्च नामानिदुनय
 दद॥निम्नादिसुकका॥सुटा विम्बीवगसवल्कल॥सुगीगीययाकस्य गवयकालनसदा॥यानं वयागय॥ ॥मसुर्याधिकार॥ ॥गुजगलिकामामीज
 लोकारिण्यावनग॥गुकि सोनाष्टिकाज्ञान कल्लेगुल्लययमदु॥धुमविदधिकल्लेन जयदुनसयीरिषक्॥विदुगामिदुदुद्धाध्व गदरीजालगदरी॥

यदकरोत्तु वागतिनेष्टुवियदादृष्ट्यनकरुभदसि। शूद्रं मृदं सवर्णं कुरुत गमायकं वदत॥

यद्गुणवाङ्मनस्त्वग्मर्मजिह्वा वासमीसिका ॥ लयं सनवनी वा नास्वनाश्वर्यानामसी । न कर्तुं नर्मजिह्वा कश्चला ध्रुवियं गवशब्दकूनामसूताश्वर्यागध्रुमस्त
 कानिदा ॥ यद्गुणानां लयनसर्क रश्मिर्नदगणस्यवा ॥ केवलानययसायिष्ठा नीकूनासाल्मलीककान् ॥ अलिकेशु मनेन रवत्यर्कयममूर्ख ॥ मसूतेऽस्यिषा
 यिष्टे लिफमास्ययथाचिरे ॥ सकनाण्डारुवति प्रलुनीकदलयरं ॥ मातुर्लं गजयस्यिष्टगिला ॥ गसुकेनास ॥ मखकानिकनालेय ॥ पिठिकानिलकालजिह्वा ॥
 कालीयकात्यसामयदधिसनवदलास्त्रिसध्वरुलिनीरि ॥ लिफरवतिवदनेन गणियुर्गसकनाण्ड ॥ नकाद्यसर्वनीदयमजिह्वा नेनिकायस्ययय ॥
 सिधनेलिफमाणनमिन्द्रमिन्द्रवह्नि ॥ यतिनादधिसनसहिर्न ॥ केवलकूखर्वदनागीने ॥ मखकमलकानिककरीषूकटीनिलकालकाजयनि ॥ रुति
 डादयमजिह्वा कलीयकखर्वदने ॥ यषुनीकयश्चाकू यद्ययमककूमेश ॥ कपिन्नाकिंशुकयुक् वटयर्ग ॥ यथाचिरे ॥ लययल्कालिनेनरिसेः
 लवाख्यजनयधुत ॥ यिषुवनीलिकायाकू सिलकामखदूषन कान् ॥ निखसवीजयनक्रियं मखकूर्यामनादुर्न ॥ मधुकस्यकषायननेलस्यक
 उर्वयधन ॥ कल्पोऽयिर्युमजिह्वा वदनात्यलकने ॥ कनेकनामनेलं मखकानिककरीयर्न ॥ अरीरुनीलिकार्यग ॥ मध्वनंमलमधिने ॥ केनक

साम्ब

नैल ॥ ॥ मञ्जि यै मँ की ला क्रा मा उ लू ग स या खी । क र्ष य मा ले न गे मु ने ल स्य क उ र्व य व न ॥ अ र्ज य य स द्धि गु र्ग न ने म द्ध ग्नि ना य व न ॥ नी लि का पि लि का र्ग ग
न र्ग ग म द व ना ग य न ॥ म र्ख य स त्रा य चि न व ली य लि न व र्जि न ॥ स क रा ग य या ग न रु व क्ते न क र्सी नि र्ग ॥ मं जि श्वा दि नै ल ॥ ॥ क र्क म र्ब द नै ला क्रा मं जि श्वा
म ध्य य खी । का ली य र्क म गी र्च य ध र्क नी ल म र्च ली । म य ध र्म या दा ४ पु रू स्य म र्ज्ञा य ध क क र्ग नै ॥ द्वि र्च य म ल स र्दि नै ४ क षा यै ४ व ली के ४ पृ थ का ज ला रु क
वि य क र्ग या द ण य म धा व न ग ॥ मं जि श्वा म ध र्क लो क्रा क र्क म र्कि र्ग क र्क त्था । क र्ष य मा ले न गे मु ने ल स्य क उ र्व य व न ॥ अ र्ज य य स द्धि गु र्ग न ने म द्ध ग्नि ना य व
न ॥ स म्य क य र्क य नै र्ग न अ र्ख व र्ग य सा द नै । नी लि का पि लि का र्ग ग न र्ग ग म द व ना ग य न ॥ स क रा ग य या ग न रु व क्ते न क र्सी नि र्ग ॥ क र्क मा द्य मि द नै ल ॥ अ
ग्नि र्ग नि मि र्ग य ता ॥ क र्क मा द्य नै ल ॥ ॥ क र्क म र्ब द नै ला क्रा मं जि श्वा म ध्य य खी । क र्ष य मा ले न गे मु ने ल स्य क ल व द र्ग ॥ अ र्ज य य स द्धि गु र्ग न ने म द्ध
ग्नि ना य व न ॥ स म्य क य र्क व र्ग य नै र्ग न अ र्ख व र्ग य सा द र्क । नी लि का पि लि का र्ग ग न र्ग ग म द व ना ग य न ॥ म र्ख य स त्रा य चि न व ली य लि न व र्जि न ॥ स क रा
ग य या ग न रु व क्ते न क र्सी नि र्ग ॥ क र्क मा द्य मि द नै ल ॥ ॥ क र्क म र्ब द नै ला क्रा मं जि श्वा म ध क र्ग य र्क ग लो र्ग नै ल पु रू का र्ग ॥ इ ध पु रू ले जे पु ३० य ध क

न२

५५

नेलाञ्जवातर्घ्वनिर्मुह्यककणगुहा॥ मादिकीपियलीसयिमिणिर्नधनयमरवादनकणुलहर्नयाकं यधनमिनीयध्वविष्मविमदनवध्व
हं शुभनिसानयन॥ लाधुवर्गमधकी लाहावर्गमेधुलन॥ गलुयुधकीनिष्मयाया॥ सकोर्दधुनैर्कता॥ सोनिनहननकणुलाधुमस्मानसा
जनेधमकोदधसमनलेयाग शुभकीनिष्महिनी॥ क्रियाम्यनिहर्नकीयो कीनाकाकाविवरुहा॥ सलभध्वहननकायसिनध्वयकणयन॥ कोलभइ
म्वनिकाज्जोयनेविशुभयद्विषक॥ कोदयकेध्वलवलेधसथायपुनिसानयन॥ पियलीसययाश्चैना नागतानि नलदली॥ सखादकनसंग्रहकवर्गनस्य १००
याजयन॥ गमुहादनविदरुदनमूलानिष्मयन॥ नन॥ शान्ययुजीनक्रिया॥ सद्यो॥ सल्लानला॥ उड्ड्याधिकदकनु गगाधिसमवानयन॥ किमिदन
कवत्राविधिधकार्यविज्ञानगा॥ किलादिमांससकोर्दधनेध्वलूतपावनगा॥ याभववागजवर्गिस्वडिकायावसुकज॥ सकोर्दपियलीचूर्णकेवउध्वगुकी
रिग॥ यदालनिम्बगिदला कषायश्चउध्ववर्न॥ गत्राविनकध्वहिनाधुमावनेनध्वय॥ नाजीवहाहनकमोदननाजीयकारयन॥ यदनमधिजायन
नाजीगदकमध्वन॥ किलादिमांसनिष्महा यदिनायनिजालवग॥ जधयित्वादरुद्रायि शान्तादहनवा॥ गनिहिनसिरुवसि दशनसमूयैकिने॥ गसा
न्मूलदशनमध्वनेदुग्मस्मिन्॥ उड्डगइहनदकेलभनिर्गसिपसिद्वान॥ नकोगियागमयधीका नागधवागहनकिरु॥ वलमयुतनकमना नायहनहिम

[illegible]

मृच्छतिष्ठति॥ निःक्राथ्यायामवस्यसुवकुपुर्गं रूयः यवदयाथगमेर्मृदयावकन॥ तस्मिन्नघनत्वमयगकगिब्रूमया शुद्धीक्रियथदकवउग
 रुतागिकानां। उलामलसितवदनवन्दनार्थं। अमातमालविकसाद्यनलाहययी। लङ्काहलगयतसां॥ नधनकीर्ती। धीयस्य। गनिककटंकटिकट
 रुलानां यथाकृत्वाधुवठनाहयवासकानां मणिनिः। सूरहिकलसंयुगानां। ककालजानीरुलकावलनज्ञकानि वृत्तीकगानि विदध्वागयलीं। का
 नि॥ गानवगार्थघनसानवकुशलस्थ। कियत्कांलायगदृशीगुडिकायुक्तयोग॥ शुक्लामरयेविनिदिगाविनिवातयतु। रागमनगलाक्षनसनाद्विजनालजाग
 ना। कुर्यान्मरवतरिनीयदृतीं विविक्कैर्योवर्तदगनं गतसाना लघुर्वी॥ **यहलयादिनादितठिका॥** ॥ मर्यनागधिकातश॥ ॥ कपित्थमाडुलङ्गामुष्टगवत १०३
 नसेमुलिशसुर्यायै॥ यत्रयत्कल्लुं कल्लुं लायगमकय॥ ॥ गवतश्चमध्वसेध्वनं लमवत॥ कद्वुकल्लुं नयत्का वायाववृत्त्यन। आडकसूर्यावर्तकसोराज
 नमकस्य तमा॥ मध्वनं लसेध्वयगा॥ यथकगुका कल्लुं लहाताभासो॥ लजिनस्यनिर्याससिलनेलनसंयुग॥ यकीषु॥ यत्रलंकल्लुं कल्लुं लायगमकय
 अस्नानामयिमदात्तं मृत्तमन्यतमनवा। काक्षनयनयत्कल्लुं कल्लुं लायगमकय॥ ॥ यत्रकयर्गवलना विधायवज्रयुक्तीं लोका मज्ञानयत्कल्लुं निदध्वा
 कुवत्तमयति॥ यत्कल्लुं अवतनस्मात्तवलादं गतगायितानां गत्यार्थं अवलं। आन॥ सध्या गङ्गानिवदना॥ महत्तववमूलस्य काष्ठाय॥ श्रीगुणीनिवाजी

मलावयसंसिचनेलेनादीययैरुनशयलेलववगतयः॥ सखाधूतल्ययाजयत॥ जयैरुद्धीयिकानेलसध्या गङ्गानिवदनी॥ **दीयिकानेल॥** ॥ उर्वकुर्याद्
 उकाक्षकक्षकोलेवसानल। मणिमानदीयिकानेलं कल्लुं लुं निवानती॥ अर्कस्ययर्गयनिः। मयीने माध्वनलिकेगिस्वितावतके। आयीयगायश्रवले
 निषिक निहकिग्लतं वद्वेदना॥ गीवृत्ताउतकल्लुं स्तनयत्कल्लुं। सगद्वेकदवाहिनि॥ वस्तुमृगद्विपकोषी सेध्वनं समन्विती। वस्तुवल्लयसंयु
 कं मृगवाजाविकारिषक॥ नेलयवतनकल्लुं यत्रयत्कल्लुं लुं लिनश॥ धनयत्कल्लुं लुं कल्लुं लुं विमदेयत॥ नज॥ स्यात्माजवयावत॥ तमागसन्मवदना॥
 हिहृष्टमृत्तुलीरिशसाध्यनेलं उसांवेयी॥ कल्लुं लुं लुं नादवकतली हितमयत॥ बालमूलकगुलीनीं कानादिगुसनागलीं। गनयस्यववा कर्षदात्र
 सियतसजिन। सोवर्वलं यवक्षार्तं स्वजिकादिगुसेध्वी। रुद्धयनिविष्टमर्क मध्वयुक्तीं यदुगुती॥ माडुलंगतसंवेव कदल्यानसवववा। नेलमरिविपक
 र्यं कल्लुं लुं लुं नयती॥ वाधिर्यो कल्लुं नादवयसां अवधदात्र॥ यत्राक्षदस्यनेलस्य किमय॥ कल्लुं लुं सृगुं। कियुविनागीं गकन्ति कक्षार्णयस्य
 गसुनाग॥ क्षात्रनेलमिदं। गुर्यं मरुवदनामयायदं॥ **क्षान्तं॥** ॥ कदमधितिकल्लुं वृगुकाकादिवृगुतीं। नेलयत्कल्लुं मन्त्रं मध्वयुक्तीं लि
 खन्तिव॥ जम्बीनस्यदसुसंनेपियलीमूलसंयुगं। मध्वगा। उविनिद्विष्य मध्वशुक्तीं मूदाहर्ग॥ गुरुक्षीडालनात्यादधिममुयत्कल्लुं नगीसगकिद्विगुतीं वयः
 ५० वापिषकं पल॥ पियेलीमध्वयर्गं मयनाग्नेनिनागस्य॥ उकचुङ्गदवागी॥

अथानागकायवत् ५ अलकलगा २ तैलवत् ३ २ अथानागकायवत् ५ अलकलगा २

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

सादृश्यायूनला वृत्तनूत ॥ अरुद्राया निचधारी मूसा रुद्रकेश ॥ नरु सार्वकदह ॥ निवद्रु शार्वा सकादिक शलघ्वा सकादि ॥ अ व क ई रु नि व रु
षी स्वासकादिक ॥ ॥ यथासि अविरीत कयट धागो द्वा दहा निव ॥ यस्माद्गं गलिलका थम वरा गव ॥ अ वि न ॥ यी खो रि ष्य दि मा थ व ॥ ना र्ग व ति मि
नं जय न ॥ स न र ना ग ॥ ग ल्ला सु ना ग न ई द क य सा द न ॥ न रं त्व रि हि न क र्थी वी न मा ॥ अ न ना दि की ॥ दृ ष्यि य सा द न न वि धि मा ॥ उ क र्थी न सि ॥ ग्ये हि मे ष्व म
धू ने ष्व गे थ य या गे ॥ स्व द र्शि ध म रु य ॥ अ क न जा रि ता ये ॥ अ स्या रु ता द पि न ॥ ये व रि ष्य दि कि त्स न ॥ अ ग नु दा र्थ य समी क्क का र्थी व म्भो ष्म न ॥ स्व द न मा
दि त मु ॥ अ ॥ अ न न सी य य सा व स द्या य द्या यि पि रु क रु जा य द स्या न ॥ ॥ स र्था य ला ग न नि ल वि द्य ता वि वि ला क न गी य रु त रु न स्या ॥ स न र्थ ली सि ष्ठ हि
ता दि का र्थी ॥ सा र्थ नि ष य ॥ सि रु ला य या ग ॥ ॥ नि ष्ठ द रि रु ला दा र्थी सि ता म धू क स य र्ग ॥ अ रि द्या ता कि ॥ ग ल घ्वा ना ती री न द य न ॥ ॥ ॥ रु त्क रा क्क न ज
सु द न्द न्द न सा न ग य न ली ॥ अ र्ज द र्ग री न पा र्ग म धू र्क वा ल्य ला नि व ॥ जी व क र्थ र को ये व पि द्या स र्थि वि य व ध न ॥ स र्ध न्द रि द्या ग ष्ठ स ष्ठि न त ल्य स स्या न ॥
य थ म य ट ल द य ॥ सा ध्व ॥ स्या द रि द्या त ज ॥ द्वि ती य य ट ल या य सृ ती य रु न सि द्धा ति ॥ सै ध र्वा द न गु णी व मा ड लं ग न सा ध र्ग ॥ रु था द का र्थ क रु र्थी ॥

उ क र्था क न द ॥ न ॥ वा ना रि ष्य द व द्या न द्वा र मा न र वि व र्ज य न ॥ य र्थ रु क्क हि न स र्थि ॥ री न वा य थ र्ग ज न ॥ व रु द न्या क पि न व र्थ व म्भ ल म रु ल्य पि
स र्वा र्थ क र्क ड न सै ॥ सि द्ध ॥ अ वि वि व न्द र्ग ॥ अ स्या ध पि न ॥ अ र्थ क र्थी लो यान स र्गि त लान ॥ गे ल्ब क ने रु ल स र्थि जी र्थ्वा क व ल वि व न ॥ सि ता व ध नि
ना का र्थी ॥ पि रु स्या न रु ना वि वि ॥ स र्थि ॥ को र्द व र्ज न र्था कि सि ता ल्या न स र्ग य र्ज ॥ ग द र्थे ष्व व का सी स र्ग य पि रु स्या य र्जि न ॥ सि ता रु र्थ रु न क र्थी ना
हा नि र्म म धू र्ग ॥ म धू ना ता र्क म ल म्भ का णी स म्भ सा मा रि की ॥ ये न सा र्गि रु न्य र्क हा ॥ हि न रु स सै ध र्वा ग वा री कि न स र्थि ॥ स य ल र्थ मि ध्व
न ॥ दृ ष्यि य सा द न द र्थ नि मि न स्या य क र्थ ॥ अ रि ष्य ना धि र्म थ र्थी कि थि न कि व ला य र्द ॥ दा षा न स्या द य र्था गु न्थे व गु नि य क ति ॥ उ र्ग न सा यि न का र्थ
नि ष्ठ ल स्या य थ स र्वा ॥ य नि स र्थी चि न रि न न द मा मा न र्ग रु द स र्वा मा ष पि रु म या ध र्म द धी क र्थ य नि सु र्द द ना सा रु य मा ल न द धी क रु न ल य नि
स र्वा ॥ अ द्वा द्वि गु ण वि स्तार मू ले र्ग गु ल म व व ॥ य मा ले ना कि का य स्या य थ स्या ना कि ना ध क ता य द्या नि या व म र्ज कि ना मा ना दा रु व रु थ ॥ न ना व रु
यी न न नी य हा रि न न वा ये ॥ ना द्वा ध न य न र्ग ॥ स य द्वा र स र्वा ॥ अ मा ग स्या द्वा न य न म र्ग म थ ॥ पि रु र्ज न क र्ज वी र्थो क र्द ॥ अ ष्व व ना नि व ॥ स नि या ना

मकसर्प यवसुविधोतथा। ननसावि ४ अविद्या क्रिसाधयत॥ यायाजिकेन धूमन कदमस्य विसाधयत॥ सुसुवरुविधातयं ननन
 व्यनंरवत॥ अहानाहनिवागा क पिठनकादिना कनी॥ ननसावि ४ सन्निपागा का धननेयनननकर॥ केदू इयू कइसायू जीगलीयीगसातिनी॥ सुखसुखाव
 वाधत्रसेसर्पवर्षायादवी॥ निवलिह्योधिर्गभर्नि क्रियालाघवभवव॥ ननसावि ४ फिलिफानि सम्यगगतानिलकथयत॥ सुखेय॥ ॥ वनशुक्रयुगात्यर्थ
 यठन उमुल्लयिवत॥ कनकस्यदलेरिव गिठुं कइयभवव॥ कासनिघृष्टकल्पितं कनशुक्रालिनागन॥ वंदनंयेनिकं लोका मालनी कलिकावि
 ती कनशुक्र कइनावर्तित॥ सावित्रस्यसुसादनी॥ सिनयावाहयइयुं जलोकारिष्यलावनागा॥ कनकायुलुनी कथ कागरी प्रावसविनी॥ नागसुखदनाह १०२
 नानं कनयाकाययाजका॥ धनीरुलं निम्बक यिन्नुयर् यथाकृत्वा धुंखठिनी गिल॥ काथेसगीतलं नयनं॥ निषिकं सवेयकातं विनिहनिठुं॥ इन्नुकं
 कानिभयका धुं कइन्या क्रियत॥ समुद्र कइदका धुं लक सिन्धु॥ समाक्रिके॥ सिन्धुती जयुं वेरि॥ धुं कथा सिन्धुवात्रि॥ दशार्धवदिसैव
 शकाव वंदनंयेनिकं॥ इन्नुकं ननसावि ४ गाययस्यमादिदिलेखने॥ सिनीयवी जमनिवे॥ यिप्यली संधवेनयि॥ धुं कं पद्यर्थं कार्य मथका संधवेनवे
 कनकदल मीविकी सा संधवेन

गहीलानक मालस्य दलरुलं विहाविनी॥ ननसावि ४ कसमा ननवद्विमान॥ ननशुक्र कइने॥ धुं कथा॥ सिमिनयव॥ नाय्यमधुकसाभावा वीजंभा॥
 कस्य संधवी॥ मधुना॥ ननसावि ४ स्यात्वा न॥ धुं कथनय॥ नाय्यसुवर्षा माकीकं॥ ॥ वंदनी ननसावि ४ धुं कथनय॥ नाय्यसुवर्षा माकीकं॥ ॥ वंदनी ननसावि ४ धुं कथनय॥ नाय्यसुवर्षा माकीकं॥
 वायिघनामनी॥ वंशजात्रकननार्न नालिकेन वतदहन॥ विष्णुय कानवे चूर्णं रावयत्कनरासिडी॥ कनरु क॥ कनिसावकथमनशवदसा॥ ननसावि ४
 ककवेवर्षा नागनी॥ नालस्यनालिकेनस्य नयेवात्रकनस्यवा॥ कनवीनस्यवसानी दग्धा कानपनिसुनी॥ कनरासि कर्णं चूर्णं शीतलपनिराविनी॥
 सफकलाकलावा धुं कथनय॥ ननशुक्र कइने॥ धुं कथा॥ सिमिनयव॥ नाय्यमधुकसाभावा वीजंभा॥ कस्य संधवी॥ मधुना॥ ननसावि ४ स्यात्वा न॥ धुं कथनय॥ नाय्यसुवर्षा माकीकं॥
 निम्बवासदलिकी॥ इनालतायर्थं दकी गेयमानायलानिनी॥ यस्मामलकानी व काधयस्वममसिपाद॥ गेयनसगसिन्धु कथनय॥ नाय्यमधुकसाभावा वीजंभा॥
 ककककडडलनिम्ब घनयस्या कवंदने॥ सयिप्यली केसलिडं वदुष्यं धुं कथा॥ सिमिनयव॥ नाय्यमधुकसाभावा वीजंभा॥ कस्य संधवी॥ मधुना॥ ननसावि ४ स्यात्वा न॥ धुं कथनय॥ नाय्यसुवर्षा माकीकं॥
 कनवीस्य गनुमालाहनेयनी॥ यदालाघंघनी॥ ॥ कथाविधि मधुययिकसंधुं ननसावि ४ धुं कथनय॥ नाय्यमधुकसाभावा वीजंभा॥ कस्य संधवी॥ मधुना॥ ननसावि ४ स्यात्वा न॥ धुं कथनय॥ नाय्यसुवर्षा माकीकं॥

कावसिनाक्षिपुल पाकात्ययाजयतिनस्यविधेययुक्तं॥**कथावर्ग**॥ ॥ संधर्वाजियादय (मा)रावनसमचिती। सन्त्वगुसर्मयकं यूननीवाकं
 यदी॥ ससकस्यसितः कल्को (मा)राणीकथितं जलो। घनस्य कण्ठकपटी यूननीवाजकायदी॥ **ससकं धर्त**॥ ॥ सको सस्यकथायु सखिषः कण्ठवम्यवताय
 सीययोऽनुतीकस्य कल्को नययसासमी। कागत्याऽयूननीकु कन्याकात्ययाजकाशनिहकिर्षेव ग्लुध दाहनाग विगणयता॥ **सका धर्त**॥ ॥ नेवि
 ना (मा)निर्गुक् कन्याकात्ययाजकाशवनिर्धितगष जलोकारितहाहना॥ **कथावर्ग**॥ ॥ मूलदृष्टिविनासस्य निमित्तसमदाहर्त। मखिरित्त्वनिर्गैर्मा
 रुस्यकथाविकिसिती॥ उकदायादुयादाया दृष्टानिधनियिहितशयनसंस्कारं सुरुवति। तादृशं नययति॥ एतीयेयटलकाव वहु (ध)नीलिकाईयीसा ११०
 धमयाफनागभस्यान् निमित्तं हि क्रियावतः॥ याय्यसयाफनागभ्या दृष्टम्यटलगागतागिहलाघर्तमध्ययकाश्यादार्यगणतावनिम्ना ११ वक्ष्यसु
 याद्वर्तकथिताहियग्रनया जीवनीभक्तमनिसंनकथ सगुनीयवनवाकुकथ॥ विहीनथमसलकयानिकावदृष्टिर्गभकमजांगलम्भा॥ यदानकका
 टककावदृष्ट वाककगकातिकनीनजाति। भकानिहिमरुगलानिवेव दितानिदृष्टेनसधितानि॥ निमित्तं नागिर्ताजाति। तागकावदृष्टमनिवाकावती

जायतनीली गदाधजायतनतः॥ लिखा सदावागिहली सुदूर्तिनी। घनयगाटं निमित्तथयिहज॥ समीतननेलयुक्तं ससकमध्यमराविदधीनय
 कित॥ कल्को (मा)राधवाकुर्तु किरलायानियविनी। मधुनाहविषायायि समस्तनिमित्तानकत्॥ यमुदुलं चूर्तमयधवर्जी सायसमसाहिहविमध
 र्या॥ समयागनेगगनेविकानेदृष्टनिवलीधनामनष्यभजानागभविनभानि नरावकि कदावनागिहलायाऽकथाय (मा)रातर्नयनधमवनाता॥ ज
 लगुयेऽयानवदृष्ट (मा)राभिश्यस्यस्य निद्वयमकनाशिरुययति निमित्तानिनागनीसद्यधरु कथातिगलेष्टवावक्ष्यार्थदिदीयता॥ अविनलेवनद्वानिनि
 मितालोयथाहति॥ तविनिवरुगनीतिमिर्त नद्विनिहकिनावर्तसयिषागतवर्षस्तिनकठिनसकाहादर्यजननियर्त॥ कतकं सुरुलसर्वसेधर्वायुष
 र्हासिगा॥ इनात्रसा ३३ नक्षोडविडिज्ञानिमनः जिला॥ सर्वमनसमकत्वा कागशीनहाययथा निमित्तं यटलकाव मा ३३ उक्तं यथाहति॥ कलुकुकाव
 दहकि मल ३३ गुस्रवावर्णी॥ इतीनकीववाकष्टे यियलीमत्रिचानिवा विहीनकस्यमज्ञानि र्गयनारिमनः जिला॥ सर्वमनसमकत्वा कागशीनहा
 यययत्॥ नागयहि मिर्तकलु यटलान्यद्वानिवा॥ अधिका निवर्षीसानिववराको नययति॥ अयिजिवायिकं यूर्य मासेकनवनागयत्॥ वलिष्यडा
 दावीवदृष्ट

वसवत कथायेन निलायहे॥ लघुनमपिमागया। नागलमथावृद्धं जमथावावृद्धं ककताकिता। अधिमन्नादयश्च यथागाः स्यद्विधजाशाज्जि
 तावातनावायि यथासुतामयावतन॥ नृजायामकिनागबाह्यायागनिवधमा कल्लितासद्यताद्वीयवनेनिकसात्रिवाः मरवा लययथाकवी नृजाता। म
 यमाकयन॥ ययस्यासानिवायन मज्जिस्समधकेतयि। अजाहीताविने लयः सरवा वृथयथउचन॥ वाक्यसिद्धययसि सिद्धसर्थिथुगुत्ता। काकात्यादि
 यतीधयनधुका लसर्वकर्मसु॥ मम्यनवतवकुल सिन्धुस्त्रिनस्यमाकयन॥ नरसिनादहवायिमनिमानकीर्णयथा। इहेननयसादार्थमजनं
 लूमगुती। मयगृहस्यपस्यामिगितीवधनयात्रयि। मालत्याश्चैवकुल्यानि मूकावेदर्यमववा। अजाहीतातसंयिष्यतामसकाहसाधयन॥ विविधयवन
 द्वलिंयाजनमजनलिसक॥ ममज्जिदुर्मर्ननागतस्यमनभगिला॥ मत्रिवातिवकावलिं कानयद्वायिपुर्ववत॥ नसाजनंघनंरोडेतालीसंखल्ले
 निकेश। मसकडसर्मयकं चिलायहनदयथ॥ नलिकीत्यलकिंजल्कं। मसकडससंयुती। गुटिका दुधनमनल्यादिनतात्तधयाहिगः। नदीजर्जरिचिकदय
 था। अर्नमनभगिलाद्वनिगवासरु॥ सर्वदनसगुटिका धवाअर्नयसस्यन नागिदिनस्ययसस्यता॥ दिनतायधयाहिता॥ ॥ कल्लितागयकमधय

कतदसपिता॥ अविनाकुनिनकाधक नद्वर्नकोडमयही॥ यथकुरुयाधयकनिशुक्लुगिर्नसंयुतिर्निमागधिरमृतानिधविनी नकुदजननः
 निरुनिनकाधमसंगयः स्वल्पागिरुलाकाथकल्कायां सयगसुं नृनघनी। मिमिताधविनाद्वन्यालीनमननिममशयो॥ **तिरुलाघनी**॥ ॥ तिरुला
 यानसः यस्यसुं यसुं रं गनसस्यववृषस्यननसयसुं गतावयोप्यनसमी। अजाहीतगुद्वयाधुजामलकातसंतथायसुं यसुं समाकृत्य सर्वनरिद्युतं
 ययन॥ कल्लेकल्लासिताडाको तिरुलोनीलमूल्यली॥ मधुकोहीनकाकोली मधुयनूनिदिगिधिका। तत्साधसिद्धविज्ञाय गुरुता। पुनिधाषयन। दुद्व
 यानमेधयानं अधः पानस्यसुं यथा। यावकाननगतागता नृयानादयकवति। सनकइष्टनककानकवामुनिपिलं वातकात्यामिनकावनीलि
 कायदलावृद्धा। अरिष्यन्ताधिमन्नुवपश्चकात्यवदावृद्धा॥ नृजा। मयसर्वय वातपिरुकद्व। अद्विस्मन्दद्विधकद्वानयद्विती। अवन
 वातयिलायां सककंशामनद्वनद्वक। मधुद्विष्टकनसद्यावलवन्निवर्द्धनी। सर्वनशामयंरुन्या तिरुलादीमद्वनृती। मधुयली गुद्वी॥ मरु
 रुलादीघनी॥ ॥ यावकवर्णकोडाको सितामदानिदिगिधिका। मधुकोवलाविठिमज्जिस्सगं कतातास्वानीलात्यलं गवउखव योत्तीकंयननका

५८
 ५९

लवतयियाली सर्वेषां रागेनकासिकेऽपि वेशेनेलम्बायदिवासयिद्वेष्टावदुर्गुत्तरीकादेयकी॥ अथयनिमित्तमिदंनेलंनयवत्तुनिमि० नयटलंकाव
 नकाधवावर्द्धनथा॥ अर्गवत्तुलिगनार्गवनागयनिवासिकायहीमुखनासाको कययलितयाकालिडंरुक्तिसुम्॥ कासंयसंदिक्का॥ अथसुम्
 तथययनगामरयर्द्धमरुतदंनार्गवालुदंसितसुम्॥ नामनि॥ अर्द्धजभा॥ सवीनविनतनागयनि॥ नयवत्तुनेलं॥ ॥ विरुलाणवत्तुजाम
 धूर्ककदनादिती॥ ययोउनीकं॥ ॥ वीलायिठिज्ञानागकभर्त॥ नीलायलंसात्रिवद्वं वंदनत्रजनीद्वयं॥ कायिके॥ ययसाउलं विगुलीरुलानसी
 वरयुक्तयवदतसर्वेनरुजायदं॥ निमित्तंविदायमाधायकामलांकावमवर्द्धो॥ वीसर्वेयुदनेकलुनकां॥ यथयथमववा॥ खालितययलितंवेवक
 गभर्तयनेनतथा॥ विषमकूनमम्मोदि॥ उर्कवागुवावाहति॥ अथेववदुहवातागभनरुजायववल्मजाशानसर्वेनागयय्या॥ रास्त्रनलिमि
 नयथा॥ नवेवास्मात्यनेकिवि॥ ॥ विरि॥ कास्ययादिनिशा॥ दृष्टियसादनेदृष्टयथस्याहिरुलाद्यनं॥ ॥ हलुहिकाहीनकवायसिद्धकले
 नयव्हीमध्व॥ कास्यकासयि॥ ससंरुडवदुर्थरागे॥ रुन्यादिदायंनिमित्तंरवर्नं॥ विरुलाद्यनं॥ ॥ हंगजनीनस॥ यस्कंयव्हीमध्वयले

नवा॥ नेलस्यकठवीयकं सधा॥ दृष्टियसादयता॥ नस्यादलीयलितयमासनेनसंलय॥ हंगजाजनेलं॥ ॥ गवांसकनकांथवियकमरुमंदिनंवेनेलं
 निमित्तयलसागे॥ दृष्टंदिनंकवलमवयेहिकनथा॥ नुनेलययसासुगुनूया॥ जीवकर्षरकीमदाडाकावानुमनीनिदि॥ यिकावदनी॥ मधुकोवलं
 विठिगममिष्टिगकंतातासा॥ नीलायलंखडं॥ ययोउनीकंयननेवालवर्तीयियाथ॥ सवेषारागेनकासिकेऽपि वेशेनेलम्बायदिवासयिद्वेष्टा
 कात्रवदुर्गुत्तरीयकी॥ अथयनिमित्तमिदंनेलंनयवत्तुनिमि॥ निमित्तंयटलंकाव नकाधवावर्द्धनथा॥ अर्गवत्तुलिगनार्गवनागयनिवनी
 लिकायर्ग॥ मुखनासादोर्गधीयनीनेकाकालमहुनसुम्॥ कागस्यासं॥ अथहिक्कासुंरुसुथ॥ ययनेर्ग॥ मरुजिक्कामर्द्धरुदंनार्गवालुदंसितसुम्
 नामन॥ अर्द्धजभा॥ सवीनविनतनागयनि॥ नयवत्तुनेलं॥ ॥ दृष्टिजय॥ ॥ यियालीरुलासाका लाहवत्तुससंधवर्द्धनराजनसेर्द्धकागुटिकीजनमिया
 न॥ अर्मुसंनिमित्तंकावकलु॥ उर्कनथा॥ अजकनेनरागयद्वन्यात्रिव॥ गयनशा॥ वंदनसेध्वयथ॥ यलागतन॥ अर्गनिनं॥ कमवद्वमिदंरुर्द्ध॥ ॥
 कामादि विलयनी॥ ययाकनारुससिनादधिरुनगंरुसिधुन॥ नेत्रिकांलामनिवे॥ समान्नी॥ ॥ विष्टेसुमादिकनसननसकियरुहयमोका

वतिमिनाहूतवर्मेनागत॥यथायथातीनिकामली॥यिष्टकोडेहवालाथस्त्रायिर्नवदुर्लभकरा॥नसनमधुनायस्माक्षियनयनसु॥क्रियाशाकावाधसपि
 यथ्यानेवित्रकालयसवने॥स्वाहृतेयमयकुकि कर्मजनेरुग॥यवालमकावेदयर्गयस्त्रुटिकवदन॥सवर्ननजनकोडमअनेभुकि कायदे॥
 भुक्तय॥ ॥रित्वायाकरुजियिपलीमधुसेधवे॥विलिख्यमलुला॥यहायकथदासमनन॥यथ्मरुधणीरुलमनवीजेसिद्धेकेरा॥विदधीत
 वलि॥ननांजयददशुसतियवमुकाह॥नत्कषमपिसकार्य॥अवयुगिरुलाकार्थयथमदाव्युयायडेन॥कोडनधनपिय्याल्यामिथरिंयान॥सिना
 नन॥गिरुलामृगकाणीससेधवे॥सनसाजने॥नसक्रियाकमिगन्नातिने॥स्यायुनिसानली॥सुधिरु॥ ॥स्विन्नारित्वाविनिशयीथ॥रिन्नामडेन ॥१७॥
 नासिका॥॥लेलेलाननसिधुने॥सकोडे॥युनिसानयन॥नसाजनमधुलीरु॥रिन्नावातमुकर्मविन॥यनिसाना॥नेयका॥दृष्टदायजिरवाहुवे॥स्वेदये
 नदृष्टयांगुल्याह॥उकजलीकता॥नावनाशननुन्नानिपिय्यालीकोडभवत॥यनिसानन॥मकेकी॥रिनेनगमिष्यन॥निमखनसयाथर्य॥सयिननवयनि
 नेली॥स्वेदयित्वाविषयन्नि॥किडानभनिनाथय॥यदीरित्वायुगमुहसेधवना॥वद्वैयन॥वन्मावलखवदृग॥रुग॥अभितमा॥रुली॥यन॥यनवि

नकीवयिल्लनागडुमारुजन॥यिल्लासिग्धमत्यवसिनाकाधुन॥सजि॥सिलानसाअनेयाप॥अपिल्लेथरुनअयन॥हनिताववादानसु
 नसानसयविन॥अरुयानससपिष्टवागतीयिल्लनागनी॥राविर्नवमुमृग॥ससहदवदानवाकाकामागीरुलेकेनद्यतयेकेनवद्विमान॥अयथ
 यिल्लनागर्हपनकिकिमया॥विताग॥नसाअनेसजुनसाजागीयष्यमन॥गिला॥समूडरुनोलवली॥नेत्रिकी॥मनिवानिवा॥ननसमासमधुनाया
 यी॥उक्तिनवर्त्मानि॥अजनकोदकनुद्ये॥यथ्मरुधणीरुलमनवीजेसिद्धेकेरा॥विदधीत
 हनिउगिरुलासाधं॥मधुकेनकनदनी॥रुगनाजनसद्यद्वाघवयल्लाह॥राजनानथमामेवसकारु॥कह्यावलिर्नजा॥थया॥विष्टदाधुमदगीवतिमि
 नायरुग॥रुली॥यातनि॥अयनिर्त्य॥सनगामयायदे॥मज्जिका॥मधुकात्य॥सादधिरुल॥लेकृवा॥अनावना॥मासी॥वदनरवीर्नयनगि॥निमखली
 सयष्याजने॥सर्वनवसर्मा॥समजनमिदसर्कसदावदृष॥की॥रुक्तदमलासु॥अभितमा॥रुली॥यन॥यनवि
 विगति॥गि॥नाकाजिकयले॥यिष्टानामेनिधाययन॥यिल्लानयिल्लनकरु॥वद्वैयन॥वन्मावलखवदृग॥रुग॥अभितमा॥रुली॥यन॥यनवि

वीरसूतसंभूतनश्चानकानिवांसंशुशसाधयनकाध्यायतिगुत्रसक्रिया॥ ब्रूजनीयिल्लोषधयकाध्यायनादन॥ वृत्तमञ्जु॥ ॥ याययकायनाध
उनामाद्वनललकलो॥ वल्लेययविर्गलर्यागुर्वमूलि॥ यवद्वानमूर्यनामसदिशोवद्वनकनै॥ सदंजनाद्वनेद्वल्ललम्बनामानिवृद्धिमा
न॥ नरुत्रदिदहल्लस्मा॥ रुफरुमसलाकया॥ यवकाययननीवकादाविडामसंरव॥ गिरुलायायसिधुने॥ वृत्तसिद्धयिवनन॥ वरुष्यरुदनैद्वयदी
यनेकहनागनी॥ ॥ वल्लेयक॥ वरुनामधिकान॥ ॥ वानिकसितसुना॥ गस्रहंस्वदासनावनीयानावृयनादायक॥ यथाद्वानामयायदा॥ कृष्णमन॥ ॥
मूल्यलयाकाजिकयविर्ग॥ सिनाहिनगययागुयूर्यवामूरुदनी॥ यवमूलीसुर्गकारनस्यदद्याकिनागद॥ आसिनायायितवमीषाउगमल
मकिर्ग॥ ननावसासिनाधस्मा॥ नायकल्लनसययन॥ निध्वरस्यायविश्वस्यनेलेनय॥ यवयनयन॥ धनयद्वानुज॥ नैर्यमयामाद्वमववा॥ सिनावसिज
यथेयशसिनागसम॥ वृ॥ दनमन्यादिकल्लहि॥ मदिर्गमसुर्कयनी॥ गेलनामाज्जमूद्वानैवमागगनानिव॥ निध्वरुष्यतिपिरु॥ वृ॥ दगवगनिना
गद॥ ॥ यवविधि॥ कार्यसुधकल्लहियन॥ यिरुमकगिनाग॥ सिग्धसम्यग्विनवयन॥ मृदीकाजिह्ला॥ रु॥ नसे॥ का॥ ने॥ रवि॥ सुर्कनाकास

निर्गलितश्चयनिसवयन॥ सविष॥ गन॥ धो॥ नस्यजितसाधन॥ लहिर्ग॥ निमर्कन॥ यजितसुगीतले॥ यस्यनमरु॥ कमुदा॥ ललपद्वाना॥ गीतली॥ वंदना॥ मृति॥
स्यर्ग॥ सुर्यासयवना॥ स॥ या॥ दा॥ हा॥ हि॥ ग॥ न॥ य॥ ॥ वननागा॥ त्रय॥ द्वा॥ क॥ वला॥ वा॥ द्यु॥ त॥ खा॥ ल॥ श॥ की॥ त॥ पि॥ छे॥ य॥ द॥ दा॥ स्या॥ त॥ ग॥ र्ग॥ वी॥ य॥ नि॥ स॥ व॥ नी॥ म॥ ल॥ ल॥ वि॥ ग॥ ग॥ लू॥ क॥
वंदना॥ त्यल॥ ग॥ ने॥ श॥ मि॥ ग्ध॥ गी॥ ने॥ गि॥ त्रा॥ द॥ द्या॥ रु॥ द॥ द॥ म॥ ल॥ का॥ त्यल॥ श॥ य॥ द्वा॥ क॥ वंद॥ ना॥ न॥ का॥ की॥ त॥ सि॥ द्ध॥ र्ग॥ हि॥ र्ग॥ ॥ ना॥ व॥ नी॥ ग॥ के॥ ना॥ ता॥ सा॥ म॥ ध॥ के॥ वी॥ त॥ पि॥ रु॥ ॥ न॥ क॥ ज॥ पि॥ रु॥ व॥ स॥ द्ध॥
रा॥ ज॥ ने॥ ले॥ य॥ सु॥ व॥ नी॥ ॥ गी॥ ता॥ य॥ या॥ श्व॥ य॥ या॥ सा॥ न॥ वि॥ ण॥ वा॥ ड॥ क॥ मा॥ क॥ ती॥ ॥ क॥ द्वा॥ ल॥ ध॥ ने॥ ख॥ दा॥ न॥ का॥ द्वा॥ ॥ या॥ व॥ ना॥ म॥ के॥ श॥ नी॥ क॥ व॥ यी॥ ज॥ ध॥ मा॥ श्व॥ नी॥ क॥ व॥ क॥ द्वा॥ हि॥ ना॥ ॥ ज॥ व॥ य॥
या॥ य॥ स॥ स॥ यी॥ य॥ ता॥ ती॥ स्व॥ द॥ य॥ रु॥ ग॥ ॥ म॥ ध॥ के॥ सा॥ न॥ ता॥ जि॥ त॥ ॥ सि॥ ने॥ वा॥ स्या॥ वि॥ न॥ व॥ य॥ ता॥ ॥ क॥ द्वा॥ य॥ शु॥ धी॥ म॥ ध॥ के॥ ग॥ ना॥ का॥ न्य॥ ल॥ वा॥ ल॥ के॥ ग॥ ज॥ ल॥ पि॥ छे॥ गि॥ त्रा॥ ले॥ य॥ स॥ य॥ ॥ ल॥ नि॥
वा॥ न॥ ती॥ ॥ द॥ व॥ दा॥ न॥ न॥ क॥ द॥ न॥ ले॥ द॥ वि॥ श्व॥ र्ग॥ य॥ जी॥ ल॥ य॥ का॥ श्वि॥ क॥ स॥ यि॥ छे॥ र्ग॥ ल॥ य॥ के॥ गि॥ ता॥ लि॥ न॥ ॥ स॥ नि॥ या॥ ना॥ द॥ व॥ का॥ यी॥ दा॥ य॥ य॥ हि॥ ता॥ कि॥ या॥ ॥ स॥ यि॥ या॥ न॥ वि॥ ण॥
य॥ ल॥ य॥ ता॥ ती॥ वा॥ पि॥ ण॥ स्य॥ न॥ ॥ जि॥ क॥ द्वा॥ क॥ य॥ स्क्र॥ त॥ न॥ ज॥ नी॥ ता॥ सा॥ स॥ न॥ दा॥ न॥ दु॥ र्ग॥ ग॥ र्ग॥ ध॥ नी॥ ॥ का॥ थ॥ गि॥ ता॥ हि॥ जा॥ र्ग॥ ना॥ सा॥ यी॥ ना॥ नि॥ वा॥ न॥ य॥ नि॥ ॥ ना॥ ग॥ न॥ क॥ ल॥ वि॥ सि॥ ण॥ की॥ त॥ न॥
स्य॥ न॥ या॥ जि॥ नी॥ र्ग॥ सी॥ ॥ ना॥ ना॥ दा॥ वा॥ द्वा॥ न॥ गि॥ ता॥ रु॥ जा॥ रु॥ नि॥ नी॥ व॥ न॥ र्ग॥ ॥ स॥ ना॥ द्वा॥ न॥ ल॥ म॥ ला॥ य॥ व॥ क॥ या॥ द्वा॥ र॥ ले॥ सु॥ र्ग॥ ॥ गे॥ ले॥ न॥ स्य॥ म॥ न॥ क॥ यी॥ ति॥ मि॥ ता॥ द्वा॥ ग॥ दा॥ य॥ द॥ ॥ स॥ ना॥ द्वा॥ य॥

[illegible][illegible]

धुकनीलमयली ॥ इद्वीयननेवाग्धयि लयसीध्ववातसी ॥ गीतगायावगमहाग्ध शीतसकाग्धगीतलान् ॥ कल्केग्धशीतवृक्षानां अरवकस्ययुसुवन ॥
 कोष्ठाकादम्वदं सानी सावार्थककूपस्यवा ॥ तसे १ सूर्यदंतस्याध तस्य अरवस्यसीधिता ॥ उड्डकिश १ सिना १ या १ शी १ रि १ या १ द १ व १ न ॥ यशीमध्वनला
 नासा दशमूलान्वसाधित ॥ मध्वनेग्धघनं सर्वो नूड्डज १ गदानजयत ॥ यद्यार्थ १ ली ॥ ॥ दशमूलवला नासा मध्वकेर्मध्वनेसदा मयूरयक्षपिला
 कुम्भकत्यादास्यवर्जित ॥ जलेयकाद्यार्थयुक्तं तस्मिन्शीतघनंयवन ॥ मध्वने १ कायिके १ कल्के १ गिना १ गमादिनायदं ॥ कल्केनासादिजिह्वास्य गतनी
 गविनागनी ॥ मयूराद्यमिगिर्या १ उड्डज १ गदायदं ॥ मयूराद्यार्थ १ ॥ यथोक्तनीकं मध्वकं पियलीवदनात्यलेश ॥ सिद्धेधारीनसर्गेलं नस्यना ११७
 ख्यजनेनवा ॥ सर्वो नूड्डजदानहनि यल्लिगानि वगालिनी ॥ यथोक्तनीकार्थ १ ली ॥ ॥ गिना १ गमाधिकानी ॥ दध्मसोवर्चलाजाजीमध्वकं नीलमयली ॥ विवर्तकोड
 वृत्तं नानीवागा स्यन्दनीतिगा ॥ विवर्तनेयकं नकं ॥ अर्कं नामध्वसंयुगीवासकस्तनसंयोरु गुडूयातसंभवव ॥ नादिनकान्जलकल्की यो १ उ १ न १ स १ थ १
 विवर्त ॥ जलेनामलकानुवीजकल्कीवाससितामध्वध्वतयाग्धकमार्गवा आमलका १ न १ स १ न १ व १ व १ नादिनकान्जलकल्की ॥ मध्वद्वीकाकजानकमलवा

मूलकार्यसंभववा पापुयदतश्चत्यर्थविवर्तुलवानिना ॥ अ ॥ कवकलकाथ सगदग्धसंगाली ॥ यथावर्तविवर्त्यान १ मी १ वा १ स १ द १ त १ ना १ ग १ नी ॥ दाद्वीकि
 नाजिनवित्त्ववासा कक्षातरुल्लानमसुकगायी ॥ यीगाजयति अतिवर्तविवर्त्यानायदतसंभल ॥ यीगासिगातरुविनाहितनीलयकी ॥ तसा १ अ १ न १ न १ ल १ ली १ य १ स १ म
 लं कोडात्रितं तलुलगायपीनी ॥ अस्यदतसर्वेरावकिहकि स्वासग्धरागी सरुनागनला ॥ कमलसंमद्वल्य धषयतुल्लान्वना ॥ जगतीलागुदनातीयद
 नागणियमयन ॥ कोडयकीसलनसंकाशाद्वनरुस्यवन ॥ अस्यदतविनाग्धय संगर्कनयथा ननुका ॥ या १ य १ द १ न १ ह १ नि १ व १ ल १ य १ म १ ल १ इ १ ल्ध १ न १ म १ ध १ स १ य १ न १ यी १ नी ॥ क
 भवाद्यालकमूलं तलुलगालिलेननका र्थी ॥ समयतिमदितायानं तद्वलयमयितकसंरुसकाख्या ॥ तकायितविधनन यथावत्समयावतन ॥ या १ ध १ ज १ म्वा १ म्वा १ म्वा १
 नसि गिलाहदतसंजिने ॥ अववकीभावतसं समंमयध्वकमल ॥ वाहीकातिविषामसं वित्त्वलाध्वसगेनिकी ॥ कइरुलमनिर्वंशुठि मृद्वीकानकवदनी ॥ कइ
 गवत्सकानका धनकीमध्वका १ १ नी ॥ यथा १ ल १ ह १ ल १ य १ ल १ य १ नि १ सू १ म्वा १ व १ ली १ नि १ का १ त १ य १ न ॥ तानि १ को १ दु १ हा १ स १ था १ क १ या १ य १ य १ ल १ ल १ ल १ म्वा १ न ॥ अ १ र्ग १ स १ वा १ ति १ सा १ न १ व १ र्क
 यगाविग्धने ॥ दावागं दुकनायाव कालानां ववितामयन ॥ यानि १ दा १ र्थ १ त १ जा १ दा १ र्थ १ ॥ य १ नी १ नी १ र १ स १ यी १ न १ क १ मु १ ली १ म्वा १ वा १ न १ र्थ १ य १ व १ न १ ल १ य १ स १ म १ ति १ व १ र्थ १ य १ न ॥ व १ र्थ १ य १ र्थ

गोस्यानजीवाजनतस्य॥ अत्राययम्वानयन यावकन्यसिस्तय॥ यानिदाधनजादाधयनिग्रहवसुसंभत॥ यहावर्द्धनमाययसिस्तवेयहनिया
 नही॥ तांसादलधनधनदग्निर्पयनिकीर्तिन॥ अनर्कलक्ष्मीमूलैरियरुगवित्सक॥ दलधनी॥ ॥ नीलायलाभीनमधकययीदोशाः
 विदानीकृगयवमली॥ मजीवनीयेधधनविवर्कगतावनीकात्रसदग्निमिथ॥ तक्केतापादयनयसर्कअसग्नेमात्रनकयिर्ति॥ श्रीलायल
 नगसिस्तयन॥ कृकषयिरुयराववउत्त॥ नीलायलाधधनी॥ ॥ आखामोसपदिवदुधखवउत्तुकेनर्कयलेनीयावनीयेदवनिनियतया १२०
 वदतनसम्यक॥ तलेलाकवगनमनिर्भयानिरागदधनादनियोजमरुगलकर्ननोससदवद्विशा॥ यानिवाधधधिकात्र॥ ॥ नमधकः
 ॥ कवीजधययसासुनकात्रवाअभनक॥ कृकषयिरुयराववउत्त॥ नीलायलाधधनी॥ वृंशादानीययसावगलेवायलसामिवा॥ अनन्नामात्रिवासाय
 मधकमेववावदनीद्वयकासम्योकात्रगुभीववाधनी॥ यदयेलीवलासिरुखडैशमधयधिक॥ ॥ गृहकविर्गडाकाकसत्रमधकसिगा॥ व
 सतसकनागस्य॥ द्रुकाकसमायना॥ यथाकर्मययाकथागंधयावेययासना॥ कपिनविल्ववहनीयदालेहनिदिधिका॥ मूलानिहीनसिद्धानि

दाहयद्विषगदम॥ नवममधकानकाययसासनिवायिवत्॥ ययमुदगममुल्यागृहगीर्तयसंभत॥ सहीयावादिनागुलीमधकंदवदानवा॥ वयमा
 व्यायनगर्त॥ सुवात्रायभम्यनि॥ समधकागइधननकमालकत्रमर्कम॥ अवर्धकाययद्वर्ककीर्तिर्नयानयागतथा॥ कसत्र॥ गृहकजीवनीय
 यशालेन॥ उभवावनीरि॥ सिर्दयय॥ गकेनयाविमिर्गसंकाययद्वर्कसदीर्घ॥ नी॥ कृगका॥ नयका॥ मूल॥ गृहकस्यवा॥ गार्तइधसिगाय
 कृगहिन्वा॥ गृहलनयल॥ कसत्र॥ गृहकयद्वकात्यलसमन्वयलीमधकसंभर्कनी॥ समलगर्तमुनिपीडिनीगनायथाविमिर्गययसात्रुकायिवना
 गर्त॥ नी॥ ॥ याअसुनससिदासाययनकयदे॥ यथक॥ नारिवक्तिरुगसयातसर्वनानीयसयत॥ यद्वकसिरातय॥ सितामलकनाथवा॥ नारिव
 किरुग॥ ययमृदगर्तयुक्क॥ मागुर्तगस्यमूलानिमधकमधस्यनी॥ धनतसदवातकीसर्वनानीयसयत॥ ॥ ॥ हामर्तवसामग्निविगनान्य
 विनि॥ उवै॥ यवाग्निर्गमेदिनसिसेवे॥ ॥ ॥ दृग्मृत्तयासमृद्धयितवनधगर्तमिमेविम्वुत्तुकातदनलयवनाकवासवाकसदसवा॥ लाम्बसमृ
 धने॥ दिसनु॥ नी॥ ॥ मृका॥ यवा॥ विद्या॥ मग्नि॥ मृका॥ ॥ सूर्य॥ न॥ मय॥ मृका॥ ॥ सर्व॥ रया॥ ग॥ ॥ हिमा॥ विरमा॥ विरस्वादा॥ ॥ ॥ जल॥ यवनमा॥ ॥ ॥

फवाताहिमेहि। पीलागमयाननादीदृष्टावाएयणिमक॥ नाडीमुखवसतिः सहयकदिगम्बादसतिनववार्क्युवत्साधिसदिनरतयणिमकसाध
 यथा ॥ वलानिगत्यासाधिकं गुठयलनद्वय। जलजालविवकव्यं यथा रत्नविनिश्चितं॥ अक्षयगयलं गुलीउरुमखववडिनी। यलनिगनियिय
 त्यामरीवाइयलानिवा। पियलीमूलगालिसे वयाधन्यकसेधर्वमिगिकसूकजीनामिवेउरुययलंयधक। यवसकाइवाजाजीयमानीयलन
 था॥ लकेयरीसायलद्वद्व वटकाकारेयद्वियक॥ वातिकानयेलिकाएव एषिकासात्रियागिकानासुनिकापडवानसुवोन गूलमर्कलसुसू
 कधनविमपिकनवलसील्लवलेविवर्द्धन॥ गृहवतादिगु॥ सुनिका॥ ॥ मरुगलीधिका॥ ॥ कइरुम्बाहिनिमीक केनवधनसर्वये॥ १२१
 कइनेलानिनेर्यानिधूमयादथदमना॥ कनवधितयाहुत्यारंयेकाश्वसुसर्वयागयलमना। मूलनलाइत्याकाशसलिकयालियादया॥ कसूजाजीवि
 यली॥ मदिनालारुग॥ विवत॥ सोवर्द्धलनसंयुक्त्यानिगूलनिवातली॥ ॥ विगदकयतादिविगतिद्युतयसुद्वयरीरग॥ यलुग्यागमनं
 गंधककलकोषे॥ यलीने॥ यवत॥ धायाधन्ययधक यलद्वयमितं किर्यनिहनामयानवातकाकियलीननापुर्ववाटकननसुनिकाईहिग॥ ॥

सुनायाहकितावसि गूलमर्कलसुद्विनी॥ ॥ यवकारंविवतगु सविषीकादकेनवायियलयादिग। काथं विवेदालवत्सात्रिनी॥ अमनाग
 नसहवनेरुजालकटपं वसुलजं॥ गानमधसंयुक्तनिवातयतिगुनिकारक॥ सहवनेरुपुस्तुनवतसुमलं वेककनदार्कलनसम॥ जलमगससंधव
 हिगुयनसधाइनसुनिकागूलद्वी। यवमूलस्येकाकाथं नफलाहनसंगती। सुनिकागानागमययिवेदगहितासुनी॥ पियली वियलामूलं
 यगुलिठवाविका। जीनकेद्वद्विउद्व विउं सोवर्द्धलनथा॥ गनेरवीयले॥ यिषेताननालं वियावयग॥ अमवागहनवर्षी करुघुवद्विदीयन
 काशिकं वजकनामसील्लवलेविवर्द्धन। कामलं गूलममनं यनरीताहिवर्द्धनी॥ वजकाजिकी॥ ॥ वनकयोसकषाक मूलं सोवीनकनवा
 विदारीकदसुनया विवेदालन

लसलार्धगजयिप्यलीनां। काधवलदामधूनाविमिश्रवालनूथाकावनितानिगव॥सर्मगधनकीलाध गानिवाशि॥
 नसमातिकी॥नागनागिधियामसु वालकेलुयवे॥कमायाययनयान॥सघोतीसातनागन॥भावनस॥सर्मगव धनकीयदकनरी॥
 स्यादकागीसातनागन॥कल्क॥यियंगुकासासि मध्वमसुनसीजनी॥कोडली॥कमानस्य वृद्धिगुणिसातनग॥
 नी॥वालस्यन॥ध्वानियन नक॥सर्ववदिकी॥लाकासयसीमधूकं सकनाकोडमवव।गुलादकसीयकं क्रियरुनियेवाहिकी॥
 कात्रयनकिया॥नसा॥नविजयल यातलयनधाहिन॥कलोवधासिनाकोडसूक्ष्मलासेधवे॥कन॥मनेगुदययाकयी निभूनीलदंडरुम॥
 धविल्लेलादिगुरागीरजालिहन्॥आनाहवातिकं गूलं जयरायनवागिगु॥रुनीनकीववाकष कल्कमीरि कसंयन॥पीलाकमान॥मुथन मथन

अम्बुवत्सुवचन वलनमयविष्य॥ नवहन्ति निनावाय मर्मसन्धिगताश्रयि॥ नजायगविषाद्वगद्गीजानाभदिवाङ्मनाश॥ सन्धिमात्तयदुष्टयसुतक
 सान्नमतिवृ॥ कामलवायदयवे धययूक्युर्गर्वा॥ वीर्योवातीलकल्लहं ध्यायागमनूतीननू॥ सुचयताध्वनमात्रं सुन्यतायातितद्विषं
 ॥ धुष्मसकर्मग्रथस्य वामानासिकयोक्तश॥ लयाहयाद्विषधानं नम्रगमवर्तनथा॥ कलिकमलनस्यन कालडंशयिजीवनि॥ यिलुगगरमूल
 यूयोभत्याययाजितं॥ मत्सेर्मनसपिदं कययूयवालयगीत्युनावितं॥ सिनीषययस्यनससकाहंमत्रिवंसिर्न॥ तावितस्यदयानानस्ययानांजनहिनी
 नकमालरुलंथाय वित्त्वमलनिभद्रयं॥ सानसंययमाजश्च मूर्गवाधनमजनी॥ वध्वककोट्यमलं कागममृगतावेर्न॥ नस्यकाश्रियविर्न विषायदुग १२४
 वेगसशा गृहद्विभलेमधुर्कहतिदु मज्जिष्यकैवलवत्तानियं॥ कदलिकश्चिववित्तुगानि श्रुविदध्वमधुसंयतानि॥ उषागदाहं त्यययमानेया
 नांजनार्त्तजननस्यया॥ नेशा॥ अवायवीथीविषवगहका मरुगदानाममहायरावी॥ कैटल्यईनसेनीय एतकीनडमलवा कषायकल्लसु॥ १२५
 कीटल्लवत्तयदुश॥ जीगनधूममज्जिष्य नजनीलवत्तल्लमे॥ लयाजययायविषं कर्तुकायाश्रयाननी॥ यशकागमर्दवदनयुक्षिष्यदुकातीमनेजा

ददाति छाद्ययतिविषं वलिकानां स॥ नजनीसेधवकोटसंयूक्युर्गमूर्म॥ यानमलविषारुस्य दिग्धविष्यवयन॥ वरु१याहिद्वियाहिर्दी नस्यदक
 कनमुयत॥ सुयनययागवायि सुवतिद्वनयत्यपि॥ सामवल्कोश्वकर्षश्चल्लजिद्वाहंसयादिका॥ नजयाजेनिर्कलेया दकानयविषायदा॥ ववाहिं
 गुविर्गमानि सेधवंगजयियली॥ पाभयतिविषायाय कास्ययनविनिर्मितं॥ दग्धमगर्धपीला सर्वकीटविषंजयत॥ कीटकुंडेक्रियाश्चर्चो१मना
 १स्यर्जलीकसा॥ नजकीजर्जनायतिश्ववपडागानथादिवा॥ नकायागद्विगसाश्चल्लस्यनिवयनम॥ सल्लम्य१यलकावल्ह्यनिमृद्वर्कुसमाला
 शन॥ दकनाधतयल्लवदजतिवत्तली॥ कानात्रिर्गजनि॥ यसायजजनाधुयानिनिर्गताडय१सकय१कविर्न वल्लुसस्त्रिमिनामनम्वनगांरोड॥ म्ममनस
 ली॥ विनडाध्वसुनकोध रुहयायोसमेधनी॥ वरुयद्विषमकोपि दिवास्त्रयन्मि॥ १२६ ॥ विषाधिकार॥ ॥ यरुतायाधिविध्वंसि रवर्जगडसा
 यनी॥ यरुवयसिमध्ववागुकोद्वय१समावर्तन॥ नाविशुर्द्वगनीनस्य॥ गनीयूकोतासायनाविधि॥ नरानिवाससिक्किष्टे रगयाग॥ वार्यित॥ सिधुन
 मर्केतागुलीक॥ मधुगु१३कमान्॥ वयोदियरुया स्यासा नासायनगुलवि॥ जिदलानायसीम्यग ॥ कल्लनालेयनववा॥ तमहाना
 वाजेनिनीषस्यसपियलीकयिष्यकैरुधनकताववली॥ ययोहनि लयल्लयमानं विषं हिदंभदपितकल्लन॥

मिनवृत्तं पुके दायात् । रुक्मानतः सगताममत्कीनसेन वृद्धाद्यननहिरुधरुत्तमविवस्म ॥ गीवृत्तकृत्तनयनीतददा यः सोमराजीनियमनरवादन ॥ सम्व
 सनकब्रुमिर्ल द्वितीया ससाभनाजीवयुषाधिसने ॥ यधुत्तज्ञानकीचिक्त्वा साधयद्विधिवक्तृला । कषायर्ताविधकीर्ता घृणताकाकृतालूकशयेवव
 आरुवद्यावत्सफमिजासयत्तुगजी ॥ लोधादानकीर्तघृणकीरायसाधने ॥ एतदसायत्तमध्व वलीयलितनागने ॥ कृष्णभक्तिमिदाषधुं इष्ट ॥ उक्तावि
 साधने ॥ तैलरुज्ञानकातीव विवेत्तामयं धवल । सर्वोपनायाहि मक्का जीवद्वयभर्तृदृष्ट ॥ स्वासकाशागिसात्रद्वयविदककटीकृष्णकाधयका
 नानस्मृतायातादताभः स्वयथुगलसिनः ॥ अत्र सुताकिरागभन ॥ यवाच्यतापिरुत्तयजकदृक्तायाधयः सनिकृता ॥ श्रुत्यासात्या सयागाद ॥ १२७
 यदुनागिययः पीतमलुनिभायाभः सुसध्यसतानक्षो नवावनदिनापिवनकागपिरुगदाजित्वाजीवद्वयभर्तृननः ॥ व्यंगवालेयलितघृणीनस
 वेभ्यर्थाकागसाधघुं रजनीरुथः मूनस्यैतसायने ॥ दृष्टिजननः ॥ गीतिरुलां वनिनिर्ल वलितदृष्टिदं ॥ अष्ट ॥ विगतघननिभीत्युतात्रका
 यनित्यं विवर्तित्वलूननाथानासर्तधुनवाति ॥ सरवन्तिमनियर्धश्वरुषातार्कदुल्या वालियलीनविदहीनः सर्वनाजे विमक ॥ पुस्तकग्यस्याना

भसाधिकभर्त ॥ नकवलदीर्घमनासयसुतरसायनायाविधिवनिधवत ॥ गतिंसदवर्षनिधविता भुरंयययतवृक्तत्वेववाक्यी ॥ नसायनाधिकारः
 ॥ ॥ तैलेकावेनदृष्टमुविनसार्मनसिष्ठागा ॥ धृष्टयत्तत्तानर्त्ता सयसमयजायत ॥ अमेनसासुलवले नतिमागपसविने ॥ साम्यधुक्रुयादृष्ट
 क्रेयकदयत्तत्तानर्त्ता अतिवायभासावा नववाकिययात्रः ॥ धृष्टदृष्टमवायानि सलुककयदुर्क ॥ असाधसदृजं केवमर्मकदा इववयतासाध्याना
 मवजिष्यातां कार्यवाजीकभाविधि ॥ विप्यालीलवल्मयगा वसा ॥ लोकांनसर्पिषा ॥ साधितातत्तयद्यमु सगकच्यमदाभर्त ॥ यः श्रवादेत्सन
 नागकृत्सुलां भनमयवृवत ॥ रधुचिदान्याः सुकतं सुनसनेवहावित ॥ सचिकोड्यर्नलीका दगगकृत्तनीना ॥ एवमापलकृत्तं स्वनसनेव
 हावित ॥ गीतामधसर्पिर्हि यकं लोधाययः विवेत ॥ एतेनाभीनिवर्षाः यि यववयनिदृष्टति ॥ विदानीकदकल्लमु घननययसाननः ॥ उदृष्टन
 समपीला वृद्धापितृत्तायगा ॥ स्वयं गुकृत्तनकयावोर्जं कृत्तं सगर्कन ॥ धात्राभूतननः पीला ययसान्तरुययुजता ॥ उवयवर्तुमयवर्तुकीन ॥
 रुममयगा ॥ भगवर्थावेवर्तु ययमेवसुखाचूना ॥ कर्षमाधकृत्तं सघर्तकोउसमतिर्त ॥ ययानयानयालिङ्गात् नित्यवगः सुनाश्वग ॥

माद्वैस्वद स्वदनाद्विरतिस्मृताः॥स्वदाश्वाद्याधिरुनिर्लघ्वं जीताधिर्माद्वैस्वदा तु नस्यासम्यक्स्विन्नलक्ष्मीयादुनत मिथ्यास्विन्नयास्यथनेनदव
॥स्वागत्यलिङ्गयितुं कयुको यमदा मुक्तो यमदा हा कस्य॥निरुस्विन्नैः सन्धियोग एवाव। जीताक्रियासुग कयो द्विधैः॥श्रुतिस्विन्नमथ वास्य जी
तामृणसर्नदितं॥स्नानमृणमृतावापि निवारणं वा नयन्नयेत॥राजनैः स्नानरिष्यन्ति सर्वथा वा नमा नरात॥नाचैर्यं जनयिवा सिग्धस्वदायास्तस्वद
विद्भिः कथं विदुषला के को समसिग्धमाश्रया या हेतुस्वदेया गृहीत॥या उर्मही न कयिली एवालेः कृते श्रीलक्ष्मीर्द्वैलाः श्रीर्लक्ष्मीः॥दकादनी गतिः १०
लीमद्यप्यनेनैः स्वदा मृग्युम मृग्या गितानी॥स्वदादायायानि दहा विनाश मसाध्वं त्वं वायानि यथा म्त्रिको नाः॥स्विदाधिकारः॥दायाः कदाचित्
कयानि जिगलघुनयावनः॥जितासंलक्ष्मीनेयूकं न गवायूनरुमः॥कद्वजवमनं सक्तं नवनयिलुजगदा वस्तिवातगदकार्यं ग्रामजयाव
नादिक॥स्विदास्विन्नैरसम्यक् जानुमाणा सनस्तिता॥क १० मरुता न त सारं न वामयद्विषक॥क १० नुयवसिधुनू ता ० कलकयुतं यिवन॥य
स्त्रीकषायसंशुद्धं ननासाधलमप्यसो॥गुलसलिलनियिष्टयः यीत्वा नमति नयवी कइलनी वल्कल मयदुनतिगनसक ई पिलुजो॥आदेनूष

वकानिर्भयदालं दलिनी त्ववी॥काथयित्वा पिवलायं वा नित्क समना विर॥यं वकषाय॥॥जामरकसुत्थे द्वाकः कटज १ कनवधन॥धमा
नवेग्यसंयाश्वा वमनता ० वगयधक॥निम्बकषायाथर्नदलनी गदमदनं मध्वकं सिन्धुर्नैः॥मध्वयुतमनद्वमनं कद्वपति कर्लूमयसक्त॥मदरुत
मर्जासिद्धं कौर्नदधिताहतं तसत्रवा॥वमनायकदाय सव वमितकषययुजो॥यसने विविधे तले दाया नूकस्ययननः॥सिग्धास्विन्नाय वमनं दर्ल
सम्यक् यवर्कत॥क १० यमर्कदया विगुडं क १० यमर्कमिगलिंगमादृश॥पिलोनियागं वविसंरुताश्च रुक्ल ० वीजमपि वा वा न॥पिलुक रुस्या
नूसर्वयुक्तं स १० यमर्क ० सितः सुवापि॥लघोवदहा क १० यमर्क ० सुवयुक्तिनयवार्त पूर्यवा वसाता गता यना कसु विसुद्धदह मृग्मनतज्ञिः यमि
विक्रमार्ण॥कुलनू मृसा रकिजा हलानां पूषनसेवाय्ययरो जयतुः कद्वयसक सनरुदनिडादिदा दोर्गध विषापस योः॥गुनत्व क १० यमर्क ० वीजया
नरुवकिजका वमन १ कदाचित्॥किने सु नो यय दलपुना हा यथा विनाश सह सावजनि गथा दृगेः श्रम्यानि कर्द न न गला विको नाः पुनर्यवजि
नि॥नवामयर्क मित्रिकं न गुप्तिनं नवादनं न वसया लुना ग्मा श्री लक्ष्मी ॥सूल कनती वक म्नि विद्वान् लक्ष्मी दितारु वकपीठिगम्वा॥नूतपमहन

भवगर्ह गक लधई नधिनवता। इवकाएकमिहिरिर्मनूष्या। नयामयदयसिवातिवृद्ध। नयजी। नयथितावाम्यायवविषाहताः। जनीववात्त
लकहा सुवस्यमधकावना। अवध्वमनाद्वगमः ककुगांयागिदहिनः॥ असाधनांवागककि ननवाम्यास्त्ररुमताः॥ अतिवाक्यतात्यक्तं मवग
हाहिभइला। उपावन्नसिताशोडमि। ऐलिहयविकित्सकः॥ वमननियवृरुव दृष्टीकार्योविनवर्न॥ वमनाधिकानः॥ ॥ स्विन्नसिनायनामय
यकातव्यविनवर्न। अन्येथयाजिनं ककुदह तीनागकमर्त॥ पिरुनस्यान्मः काष्टः कुनावागक दधुयात। मध्यमसमदायत्वा मगयाआन
नयनः॥ सक्ताशोडसयकं नवइ ववृत्तिर्त॥ नवर्नसकमानां लक यमनिर्वासिक। किलोद्विधेरुयतिलियकक्तः जातेः पतिवृष्ट १३।
नका। यकाउसम्यक यवकायेक्का जयतुतुतु पिरु गदा शुगीतीपियलीतागर्तकात ममावृत्तयासुहालदयमधनासाद्व कदया। विन
वनी। हनीतकी विठिमानिसेधवानागर्तरेवता। मनिवानिवतसर्वे ममगुलविनवर्न॥ नवकातयससा जिरुलातसमानिवा। कानेकप्राविडं भनि
नवृत्तमधसयिषा। लिक्काहुठनगुटिकां कलोवाययथाजयत। कदवागकतान् गुत्मानुप्रीहा दतरु गन्दतान्॥ दह्योचानयिवायतत्रिनयाय

विनवर्न॥ अरुयापियलीमूलं मनिवविश्वरेषडं॥ यगुलक यियलीमूलं किठं ममलकानिव उगानिसमरागानि दक्तीवजिगुलाएवत॥ लिबदस्यु
मदया षट्गुलावागमर्कना॥ मधनामादकवध्वा वाकमागुयमाततः॥ एकेकंरुययानः॥ गीर्तवानपिवकुलं॥ तावद्विनिचनजेतु यावइ ब्रह्म
सवगा। यानाहातविहानम रवत्रियेकुनसका॥ ॥ सयाधुलेकातविषमकनवद्विसादानजंआनूयसजघनादतयाग्धरुलान्॥ इनामकउलरुग
ननममथगुत्मानयकादतमगुमविदारुकमृगककुन॥ य्रीहाकिनागयवनाग्धनिकरुसहान हन्याउसायनमिदंरिषजायुयक। अत्ययवैव
दुरुलीसगयथाधे मायसुर्तवलितनागनमगियक॥ अरुयाधामादकः॥ ॥ विठिंगसानामलकारयोनी वलीयलीस्यालिहताठयवा। गुह्ययषट् द्वाद
गगागयूका मासनठिभइठिकाविधया निवान। यरुवर्तसस्य॥ समानिरुदः किलसाकरिकव। अयंहिकासकयकसनागना लगनयवी
रुजलादरागर्सी॥ मानिनुडाभादकः॥ ॥ ननुउनेलिरुलाका। धनद्विगुलानवा यकीयीनीयथारिषो नविनलविनिचनो॥ दृक्किगुद्विः पतिवृष्ट
कलुविनमृगससध्वनसिद्धिनिर्केष॥ मर्कागुठगं गकरुगियागः गूलायमाग्धनिविनिर्कालीं॥ गनंमना। कदुनिकेष् लोधिलध्वमनसःस

उक्तः गणेशनिखामनला मरावी सम्यक् विनिकं यन्वयवसत् ॥ मन्त्राग्निमकी तमसं विनिकं नयायथरु द्विवसयवाग् ॥ श्रीहा एष्टा लसं विन विनं नरु ।
वासुधाक्षानद्ययाययव ॥ वृद्धः यसादं वलमिलि यात् ॥ धातुस्मि तत्वं द्वा नतारि दीर्घा । विनात्रया कं वयसः कना निविनं वनं सम्य गुया समानं ॥ यत् ॥ धर्क
नीं गुविडं गमानं ॥ गोविदी ॥ ध्रुवतु वताग् ॥ यिरुक्त तत्वं वमयडवानां ॥ यिरुक्तिका ॥ नानियता विनागः ॥ श्रीहा रुगा नृषिगवाल वृद्धान दीना थ ॥
धीरुय ॥ अकतयः ॥ अर्न रुखा ॥ यतिडी नूतका गुरिध्व ॥ धग वृत्ति यस्य वासुक न वयसि स्या ययती तदहा नुवृद्धा त्रीया वन वयसु ॥ कथोयया ॥
यविनवनीयाः ॥ सदादिरि यमसूयस्कता ॥ अथ यिरुक्तियती तदहा नृविनं वयसु मपि मन्द मन्द ॥ विनवनीया निनता विनागं मरुययुक्ते विन ॥ ३२
वनीया ॥ नवानि सिद्ध कायस्य दद्यात् स्रुविनवनी ॥ दाषाय व्यापि गतलीर्य गते व वत्स ॥ विनिकसु हे साम्यतु रूयः ॥ सहा विनिचता ॥ तन दाषाकं तस्य रु
वनि स्रुवधना ॥ स्रु सदा वकुत्वा यस्तु ससाधनीयवृत्त । दानं गुष्क विवाना मदहं तस्य विदीर्यत ॥ सहा स्रुववलिना नससि ॥ धे नृदीनिता ॥ दाषाः काय
गताङ्कोः सर्वं स्रुविनवनी ॥ आस्मय स्रुहिनी कू ॥ नवयद्वा नन विन ॥ यद्वा काशी नना गद्ग वंदनानियथा जयत् ॥ अग्नियोगविनकस्य यानालयन

[illegible]

सर्मासर्ववृद्धिर्वेसासुनीयकमवडकः॥सलसेधवदूर्त्तनगताकनवसंभूतः॥वसिस्ववायूननथनितानिसहसासर्व॥वर्त्तमाषयलसदसिन्धु
भगताद्वयाधयस्यानवासनादहंसकवधकनविजगत्॥अथर्ववागिनीक्रीवावायूनावायुपीठिताः॥सवागावाधिकमागामुत्वादातिरुषजः॥नस्य
न्यात्यननादयासदतिष्ठन्नवाकन॥अयस्ययानानवेर्त्तनसहानतःस्यासविद्वादह॥जकाकनायथागतधन्यशुद्धिजलंयिवयिलाहनुकरव
म्हसावमार्गपिबेदथ॥संज्ञगीर्त्तुसमयति॥श्रुष्याहंशुनितनिवमानस्यानकूलत्वंकथ्योदधौदकीनृत्त॥सहवसिबिधयमुनाविशुद्धस्यद
दिनः॥सहवीर्यवत्वादनंदहवान्विसर्पति॥असिग्धमनिवागतकेवलनागिपीठिता॥अहानागस्यकालसर्वेश्ववानवासयत॥नृकस्यवाह
वानस्यद्वीगीवायानवासयत॥दत्तासिग्धनृत्तत्वागन्याश्वानिद्रुहयेत्॥असिन्नमायिवागतकेवलनागिपीठिताः॥सहयुग्मेष्टमेनिमानि
नृदेष्टसमूपावनेत्॥सहवसिनिद्रुवानेकमेवायसद्विनासहान्विरुक्कदाकुम्भाविद्रुहात्यवनाह्वय॥नस्मानिद्रुहावानस्याविद्रुहश्चानूवा
सनः॥नेवपिरुकाहकृष्णस्यागतिवेवनाह्वय॥यथाविनात्यादहीनरात्रयित्वानवासयत॥नवाउर्ध्वग्रीवक्रीडावापिविभवती॥अनूवासनाधि

कानः॥॥नात्युक्तिर्नाप्यनिनीवयादं सदादयी०गयनीयसर्क॥यधनमृद्धासुतलाययनंवाककनकंशुक्रयराकुनीय॥अनूवासिनमत्यकीसि
नृदेष्टनिद्रुहयेत्॥अनुकंयीउथदसिमकीर्त्तुमायिलंविनी॥विधमागःस्तिवस्मीननुडकदकारुवेत्॥जानमलुलमावेष्टदहदक्षितयातिना॥ककुने
उसूरागशंसर्गतिष्ठन्नवेगवानाद्वितीयम्वानृगीयघावगुर्ववायथाहृग॥सम्यगिद्रुदलिगुगुयाफवेसिनिवायत॥मधूनसहकल्कस्यकथायावापि
नृनकमाग॥जीतिषट्दशध्वजीति यलायनिलरागिर्त्त॥पिरुवत्वाविवात्रादिद्विर्वायिल॥उयःसमृगाकदेकासुनृककरुनिद्रुहानयनवि
धिया॥उकोयकथायनिलस्त्रीकवगःसहशुभित्थयैकथंवन॥अश्वत्थाह्वयकायस्य॥दियुमूर्द्धमध्वत्यन॥उकीर्त्तमणीनकदंजविकात्रापिकाम
कथंवडुसकवापि॥वागनवेकोदगसफवायूनवसिर्नगुल्माकसभाविदध्वान॥विषद्वानिलविष्मृगसहाहीननेवासन॥दाहकूमयियासालिकन
श्वत्यनवासन॥सनिलःसयूनीयश्चसहशुभित्थयैकथंवन॥उयावावाविनागीर्त्तुसम्यगनूवासन॥जीर्त्तुमथसायाह्वयदृश्ययागतेयनगल
ध्वनंराजयत्कामदीकागिःसनयेनीदि॥अहानागयियःसहशुभित्थयैकथंवन॥कथ्योदधौदकीनृत्त॥अहानागयियःसहशुभित्थयैकथंवन॥यथ

नायडवंकर्था लुहवस्तिनितिस्मृतः॥सर्वाल्यावावताको रथसविज्ञानता॥अनायानमहाताहा सहसायडवंदन॥महवस्तीवनायानना
 यःसहाविधीयते॥अशुद्धसमलान्मिश्रःसहनेनियदायनशतदाहसदनामान्गुलुस्वास्वजायते॥यकाभयगुर्वव गगदद्याविदुर्हनी॥गीकू
 नेकूषधेनव सिद्धं वायनवासनी॥शुद्धस्यदूतानुगमं मरुमहस्यदग्नन॥सर्वसर्वेदियात्वावायुपलेयावसादनी॥सहगधिमूखश्चापि काभला
 सावनावकः॥गलेनिशयीशुगगाशुकमयथलंययन्नगशाकार्येनस्यसूतीकूडगीकूवापिविदुर्वन॥॥अनूवासनाधिकानश॥॥नत्युक्तिर्नयानि
 नीवयादसयादयींययनीयसर्क॥यधनमृद्वाकनल्लययर्नयाक कनर्कशुकयशानुनीय॥अनूवासितमयकू सिनदहनिदुहयग॥अशुकपी १३५
 उयदस्मिमीर्लूमविलंविनी॥विश्रमागाश्चिन्नवस्ती गगडकूडकोरुवग॥जानमहुलमावयदहदहिलपातिना॥कुकुनगसूटाभदे सगनिष्ट
 नवेगवान॥द्वितीयचातनीयचावधुर्थवायथाहगशासम्यग्निदुर्लिल्लुयाकवस्तिनिवानयग॥मधूनमरुकल्कस्य कमायावापिनकमानगीति
 षट्दमधगीति यलान्यनिलनागिनी॥विलुक्त्वानिवत्वानि द्वियं ववशुख्य॥षट्गोतिद्वदभेगीति करुवापिनदुर्हनी॥मरुहिकयेवेननि

नूहासस्वाङ्गीनोययसावचिरु॥उयःसमग्राकदकाशुनूक करुनिदुहानयतांविधुया॥उकायकधीयनिलंस्त्रमार्गं लिहद्वितीयमुकदगपीकू॥अ
 ल्यात्यवंगमिद्वानहीनाननिदुहनश॥मूकोगुलकदश्यावामहावेगमिगविगशमस्यमृगयनीवव केहावायुश्वगकति॥कुमललघूनावेक
 सनिदुहममानवश॥सुनिदुहगनाजुं अमकुकुतसादनीयथकनविधानेन याजयत्सदवस्तिना॥नदहस्ययवना रुयवतवदिश्वगतसा
 दनसुनसमसुदहश्चानूवासनी॥सम्यकनिदुहंनलाकं जलेनाधूनसविनी॥अल्यमरुजा कलज नसनाद्वनुहाजिनी॥याजयदस्यमाग्नन लरुटी
 मरुवस्तिना॥युधानामध्वमादुस्वा मगायायमुगीगना॥मद्यानिवागनिदुहानी गदध्वानूवासयग॥यश्चदग्निवर्तस्त्रावा यवनस्यववशिनी॥अनायस
 रितकोरु मरुवस्तिविधीयते॥विविकुगामनमुषिःशमिग्वगवाधिनिग्रहश॥आस्त्रायन मरुवस्ती सम्यकदहकुलरुनी॥अनायानंमूदुर्लोकः
 निदुहःश्वधनेहनग॥निदुहेभवमगिमान् कानमृगामुसेधवः॥विगुलानिलविदुक्क श्वितकिश्वनिदुहता॥मृलानिद्विताया नमनर्तवा
 यययेने॥ननुकुवर्कदयमास्त्रयनमिगिसिगि॥अमनददनेकुकी कदिचाजनयदुर्गी॥काययत्सर्वेदावला लस्मादद्यादनागिन॥आव

स्मिन्कर्मवापिमत्वाकार्यनिवृत्तं॥मलस्यकृदायाः॥वलवर्चनविद्यया॥अनिययीतिवावसि॥युक्तम्यामाजयउउ॥वागतिना॥नासिकार्या
 मय्यनावाययय॥कद्विहलासमर्कदीनयुक्त्यादाहमेवव॥गुगुगतावीर्ण॥कृत्वायावधुर्न॥सित॥कायतिनकोवती॥नसकांश
 गीतलान॥दत्तादोसेधवस्यार्धमधूनस्यसगद्वयं॥विनिर्मथनजदद्यात्प्रदस्ययसगद्वयं॥१कीरुगु॥२प्रद॥३कल्कस्ययसगद्वयं॥
 समुक्तिर्कवाययुययसगसमिह॥वितर्नवतथावाममनद्वियुसगाल्मिर्ण॥१वस्यकाल्यिगवसि॥दादगयसगोरवना॥नधवत्योषधयाविन
 निवृत्त्यवसिपवानकत्रागिवसीमर्क॥सतिरु॥२यथाजित॥वदयेसेवतीसल॥३ससीधवनाङ्कनाः॥४तीतपिष्टाः॥ससिद्धाः॥५॥नामाधिकिलसंस्ति॥१३५
 १वताहमादियायुवैणाललयकोकूट॥सद्यश्चसमगाज्यादयपिकिलवसिषा॥दगलीकषायलगाङ्का॥२यययय॥तत्समसेधवदद्या
 लधुर्नलः॥वतुः॥परी॥मदनस्यरुल॥३यथाया॥गनदाययत॥आस्मापनयया॥४याद्यावसिदिवरुल॥५नवायैगनवस्वद॥६यतिदी
 नविधिदेव॥आर्णयानमनकष॥सर्वेरागनिवर्त॥७॥किमिद्यश्च॥८लघुश्चवि॥९यत॥१०शुकसेयननाश्च॥११वात॥१२सितनान॥१३॥वलवर्च

कनारुक्क॥१३॥मलिकसंस्ति॥१४॥सतर्नसत्रिरुलाययपिसमुत्तवनकादिनिगदिता॥१५॥शेषजायनननेवयवहात्र॥१६॥मलिकल॥१७॥मर्दगुठमसि
 म्सायय॥१८॥अस्मानिम्भुर्गमधुसेधवश्च॥१९॥नाननय॥२०॥यकाययिपीषयीत्॥२१॥निरुदया॥२२॥मदनारुल॥२३॥सवर्तकासिर्कदद्यात्॥२४॥रुलमकनुमादनी
 वानउउः॥२५॥सिगायेरु॥२६॥करुसिद्धाधकादयः॥२७॥कर्षसिधुर्न॥२८॥साद्वियलीयलुद्वयमधुर्नलायी॥२९॥कनरुत्तमथिर्नया॥३०॥उउ॥३१॥रुवद्यावद॥३२॥मलस्यकषाय
 दत्तायलययमदनमर्क॥३३॥गुगुगताख्यासिकानाङ्क॥३४॥यैरुवर्तथा॥३५॥कर्ष॥३६॥मासकयैवकसदिगजमी॥३७॥प्रयुतकनक॥३८॥स्रसययसुवजल॥३९॥गजल
 यानयियुयैकीवृट्ककमार्ग॥४०॥सेधवायसमादाय॥४१॥गाङ्गायसमन्विती॥४२॥मरुस्ययलान्यदी॥४३॥असिकाया॥४४॥यलुद्वयं॥४५॥गुठस्युयलद्वयं॥४६॥स
 मालाशयवत॥४७॥यसुयतसुखा॥४८॥ववसिदद्यादिवरुल॥४९॥॥५०॥विद्युगमानाहं॥५१॥मृगकुर्वदाहं॥५२॥किम्यदावर्क॥५३॥गुत्मादीनसधाहनादि॥५४॥
 यन॥५५॥कावसि॥५६॥॥५७॥यल॥५८॥कि॥५९॥क॥६०॥उ॥६१॥व॥६२॥सी॥६३॥गु॥६४॥सि॥६५॥ध॥६६॥म॥६७॥॥६८॥य॥६९॥ल॥७०॥यु॥७१॥ता॥७२॥व॥७३॥सि॥७४॥॥७५॥ल॥७६॥ना॥७७॥ह॥७८॥मु॥७९॥वा॥८०॥न॥८१॥ता॥८२॥वे॥८३॥न॥८४॥व॥८५॥सि॥८६॥॥८७॥यि॥८८॥दी
 ने॥८९॥क॥९०॥रु॥९१॥य॥९२॥न॥९३॥उ॥९४॥क॥९५॥रु॥९६॥य॥९७॥दि॥९८॥क॥९९॥म॥१००॥॥१०१॥वि॥१०२॥य॥१०३॥स॥१०४॥क॥१०५॥मा॥१०६॥ना॥१०७॥दी॥१०८॥ने॥१०९॥व॥११०॥क॥१११॥मा॥११२॥दि॥११३॥ता॥११४॥रु॥११५॥या॥११६॥न्मा॥११७॥द॥११८॥ह॥११९॥वा॥१२०॥॥१२१॥य॥१२२॥जी॥१२३॥॥१२४॥य॥१२५॥वि॥१२६॥यु॥१२७॥मे॥१२८॥दि॥१२९॥ता॥१३०॥म॥१३१॥क॥१३२॥क॥१३३॥क॥१३४॥रु॥१३५॥

ल्य काशस्वासरुयाउना॥ आधुमकद्वियुगा वसहावलाः॥ नास्मायानाव स्या श्व वातत्रागधनननाशउदनीवयमदीव कृषीसूत
 श्वमानवशा॥ अदस्मास्माव नीयासु नान्वास्याथकथं वना॥ वीर्येनवस्मिनादरु दाषानायायमसुकात। वक्राभयसुः खस्माकेत्यधयद्वमदी
 तलात॥ सर्वोसुगतमेकादृ सिर्गवायिसमीनदी। नदीद्विकलावस्मि वीर्येवगमिवावलशवायाविषदनेवर्ग नानावस्मिमतविया॥ एवनाविद्वता
 यस्य वेलावगमिवादधिशा॥ श्लोमेकाद्यथावृक्ष॥ मिथसादलपल्लव॥ तथावस्मिदनात्स्यान्ननः कानि वलादिमान्॥ अददभ्यादभकानवसी ३६
 ना। यानिसुवन॥ यथकेनविधनन यतिहातकुमनवा। सकृश्चनवला॥ श्वस्य यवमुत्था। मत्रयुगधौतवाय्याश्विधने॥ सहसायुर्वेन्ननशा॥ कनसि
 राया॥ श्वस्यकर्तयस्यविनवनी। मांसंयतिहृत्तुं यावद्वावलवाहवेत्॥ अदृष्टाहंयानरुनदेकैकवस्मिमातुत॥ रुनीयुतुयतीहान यथयागसमा
 वनन॥ मरुयीतस्यवाकस्य विनिकस्यधुतः सुजः॥ निरुहस्यवकायोनिमद्योरवेतिदहिनः॥ सवात्यलघुरिश्वाये नृपयकेविवद्विन॥ काशेनेध
 हिनले॥ श्वस्यधुतः॥ वानलशयकिश्च॥ मोजीवगिविनेरागीस्याद्विकर्तिगर्ग॥ सानेयश्च त्वमायानिदहीतस्माद्वनाननः॥ निनिरुहाधिकानशा ॥

यायागिककाशहृन्श्वधुमा विनवन॥ मरुहिकवामनीयो॥ नन्वादिकृष्टनलाङ्गितन शोमयलियाहुलिकायमाना॥ यायागिकवर्तिविननुन
 उमयाहुलंयंहुलतभ्यसक्त॥ वरुहोत्तयदार्गगी वेहुदीतद्वननगिलाभयकागहतावलि ननुवाउभवांगुल। निराविनावेनेवलि ननुहसमिगम
 ना॥ सिग्वमश्वनमधुकिश्च मरुगुमुलसुजकेः॥ मरुहिकैवलिनेरिसु ननुदार्गिगदहुली॥ वामनीयतुवल्लुनसाधसिखनवर्मलिशा॥ वरुदे॥ अहुलन
 उधम॥ यश्चवि॥ धामगशा॥ अंगुल्याभ्यविनाहृन्मधुसुलानैयासुनूभाषद्वा॥ अधमनगस्य वेणामातीयसस्यता॥ धमश्वयाभायनृष्यसुकेडिय
 मान्यता। दृढके॥ अधिजन्मसु सुगंधिविषदामेनशा॥ युगहृदयानमिकनि धमस्या॥ अननद्विदभउत॥ कलाययरा॥ मुखमवयिवन्ननशासिनःक
 लाकिनासाके नशुर्गसमनीयिवेत्॥ निर्वेननुमरुवेनेव तासथायानकवनशा॥ विलापअधसधम॥ दूर्योदधनविगुमी॥ धमाधिकानशा ॥ नना
 नस्य॥ युनिमर्कवयीउश्व नस्ययधमनक्त॥ सिनाविनवनवत्या॥ वयीउश्वधमनश्वस॥ गणय॥ मरुनाथ॥ सुन्यसिनातसाश्वसुक्तानसाम्
 लजलजनार्थदृष्टियुसादनार्थ मरुउयादीयेन॥ नसिन वयमिकानुसृगदृशा॥ नदयम्यागाहियवेसितसितधदनककंग म्मुयवादानक

माहायतनु के ॥ माहायस्मान साकारि विग काधरायादिषु ॥ मानसं वृत्तं नो गच्छेत् स्यात्कलत्रतसां संहारयवाधद्वयार्थमवपीडयुदाययत् ॥
नक्तानां वधमवूर्त्तिमिव निमित्तं कदापि न ह्युत्तं द्विमुखया नाद्याविषादिमर्कित ॥ अर्कितं न सक्ती न ह्यतमसि त्रसान् यथक् ॥ श्री लक्ष्मणसुतादे
द्या उक्तापि न गच्छेत् ॥ सिद्धिं धर्मं ११ महिकावागं ह्याद्भीतं शोयितुं कद्वसुलवलेन नृक ११ संधर्तनं कद्व ॥ कषायतिक्रमधूने ११ कद्व प्राणाव ॥ लाव
॥ ला ॥ मूर्खसंभ्रमं यत्तु माणासाक वलास्मता ॥ अर्च्यार्थं दुयामाण गच्छेत् सायाकीलिता ॥ नाव वृद्धनयितया नासामने सा वा नयितव्य ११ ॥ यावन्नदी १२८
षयपूज्यं गलकया लनासा सा नयनयनि सुवन्धनवनि ॥ तदा विमाकय ११ यन ११ न्यायदी नय ११ ति ११ वृक्षदयय ११ कोडनसमूहा सुसंयुता ॥ कषाया
प्रादका र्याव कवला दाषतादिता ॥ याधितयय मुषिर्व ११ यवकुलाघवं ॥ ११ लुडिया नयसाद ११ कवलसुद्धिलरुहो ॥ द्वा नजाय कदा न कम्भव
नसंभनभववा ॥ अतियोगमन्त्रव्याक ११ ११ यस्मिन् प्रातृविक्रमा ११ साधनीयं वि ११ अत रुवले नास्य लरुहो ॥ तिला नीलात्य लं सपि ११ अर्कना की नमवे वासरो
उगन्धवकुष्य गच्छेत् ११ हरे दो ना ननै ॥ कवलस्य विधिर्कषे समासनयकीलित १॥ वि ११ दादुरुषे ११ वृद्धा कवी नयनिसा नि १॥ कक्का नसकिया नोदं ११

निवृत्तिर्विधिः। अथ ल्याल्यलीतनु यथास्वमरवनागिनीं पृथ्व्यामूदायथा॥ तस्य यागमयागश्च कवलायीविरावयत॥ राजयन्त्रागिरिष्यन्दिदाष
घ्नममर्ननशकवदलाधिकानशा ॥ इलागिजलवृक्षीर्तां पृथ्व्यामूदायथा। ख्यापयीतिराविष्यत्वं निष्पानिमर्तलोतथा॥ नानिसोक्ताल्यमादा
दा तथेवाशुव्यतिक्रमाग। अरुनावनगच्छक ममथोन्नतसंरवान॥ नत्वेतिष्यजानस्य नासोसिमत्रभादृता। मत्रहास्त्रापितन्नास्ति यन्नातिष्ययूनः
सर्गधुर्वत्तनिष्यमर्तवृक्षे ल्येगल्लिलामलेश। नसोयनतपोज्यं तत्यनेदनिवार्यते। अमिर्द्विपोपूयात्ताक यतिकव्वनगतायूषश। तस्माद्यन्नं
निष्पाने लक्ष्ययङ्गलारिषका। नयूसकेमीवरुवा नेककार्यारिस्त्रविकाभायादभेउपूषधनाभायाउरगतवाससभा। अर्द्धेजीर्णयसयक मलिना
द्वेत्वाससभायनाधिका। उडद्विभ विरुतागोडनपिदोभा। नृहनिषूनवकाता स्थसंगल्या। रुध्रयिनशाकृदुत्तलकास्थानि। स्थगनानासिकासर्ना। व
सुकोनासकाकग नरवनामदभास्थसभाकयालापरस्यास्ति उवाज्ञानकनाश्वयाविलिर्यभा महीकविर्मक्ष्णालाखरुदिनशा। तेलकद्वेमदिग्ध
ज्ञो नकसगनल्यिगाभा। इल्यकमसातम्बा गृहिल्यान्यन्त्रागिर्ध। नखेभनखानर्नवापि कतलवनलोतथा। उवातनवर्मरुसा वा विरुताव्याः

धियाजिता॥ कामाकामसंस्था ननुदनावासासिनाविकरुतात॥ याम्यादिजिर्षाश्च लया विषयेकयदस्तिगथावेद्यावेडसंपर्यन्ति दूतास्तवाविगं
 हितामासादकुंतातपणं वियधननगपवसाथाशुक्रवर्त्मन्ययुक्तेन युक्तानदनेनगता॥ मीयुगिहीसवसात्मा वर्द्धमानास्वतंत्रताशकन्याम
 स्थासुलक्ष्मसखसिकाभादकादयि॥ दिनन्याकनपणंवा ननानिसमनानयभाज्यभक्तानलावाजी ध्वजेभ्यश्चिखीतथा॥ वेक्रेदुदरिनिधाय
 १३१ ॥ रवदेवतधस्वना॥ सिंहमघनिनादांश्च रुसिर्नगजवृंहितं॥ मधुरं सनूर्जवृत्तां वावग्यदुदयपियाथापणयस्यरुलायगाना॥ सहीनानीन
 जालुमाना॥ आशितावानलावग्म ध्वजगा नर्तवदिकोथादिशुसना॥ सुवकातामधुनयुक्ता॥ नृग॥ म॥ ॥ वामावादकितावापि सकल॥ २॥ क
 र्मेष्टिसिद्धये॥ दक्षिणद्वामगमनं पुससंस्वसमलयो॥ वायकोसिकायात्रेव नाराया॥ भगस्यथा॥ दभनंवात्रंवापि नलग्नककलासया॥ हस्त
 वाकस्यवेद्यस्य न्यसकिनसिवातमि॥ नवसिद्धानिवेद्यावा गुरुयस्यनयुक्ता॥ दवाद्धिजानलग्नवृषरा नजीवनमरुदोनयान॥ ससिद्धमर्गिसाध
 यनिर्मलानिजलानिवा॥ ग्यकल्याणलाराय व्याधिनयगमायवामासमासगज॥ स्वगा वासोसि विमलोनिव॥ लरुगं गुरुलाराय व्याधिनयगमा

यव॥ नदीनदभमर्डांरुहितानकलूषादकानननेकल्याणलाराय व्याधिनयगमायव॥ मदायूदसादसदुलवक्तवानलायवर्तमान॥ आतोदेजाय
 लाराय व्याधिनयगमायव॥ अकस्माकीलविकृतिरकस्मात्पुनरालवत्॥ अकस्मादिद्धियात्यकि॥ संप्रियातागलरुर्हा॥ भक्तनीतगीतयार्थस्यपु
 रुतिर्विकृतिर्गवत्॥ तवसिद्धिसमाप्तन व्यासगुरुनिवाधमायत्सकमिवगृह्णाति गीतमूर्ध्ववगीतवत्॥ संज्ञातगीतपिटिका यग्यदाहनयीश
 त॥ स्वानानलिकेजीवाविरुजकनीलमाशिको॥ सगीधिवीतिवाकस्मात् गीतवन्निगतायुषी॥ नव्यातेमनिवाध्वर्त्मा यग्यदेवानवद्विनिधुव
 माकाभगंभवातधुवनिगतायुषी॥ दीष्टियानस्यनमस्य यानन्यनिस्यगिःयुहा॥ यस्वीत्यजनिवृत्तं सपतासूनभसिपथायस्याधनायुष
 तनिक्रियेक॥ अर्द्धक॥ धरुर्न॥ उरोवाजाम्बवातासो इल्लरुगस्यजीविर्न॥ नाहुरत्यंभमास्यसु नधनयगियभग्नत्रथा नरवाहुलीगुर्यानिबद्ध
 ना॥ सुखनियस्यवा॥ वलवाचुर्देलावापि समाहमयगकति॥ उक्तायमानावदु॥ भलगिलायवमादि॥ न॥ निवर्तुंमहाव्याधि॥ सहसायस्य
 दहिना नवाहानयस्यदृग्भर्गसुविनस्यति॥ नासारंगभङ्गायस्य सुकनार्जसजीवति॥ ॥ अतिशयधिकानथा ॥ धर्मोर्थकावमभाकतां ज्ञानाय

न्वलमरुमी। नागसुखायदहानशा। यसाजीविनस्यवा। नस्मादानमवलानित्यमाहनावातरुषडी। श्रीसुगातदनक्षय। स्वास्त्यनानुवर्तन। सम
 दाससमागिग्यसमधाउमलक्रियाशा। यसनाभदियमना। सुसुंरिधीयगा। दाषा। तसं सम्यगभराग्यवेषमयाधिरयन। वदुसमानेऽसर्वेषां
 यसमंरुनविवर्ययेगा। कलायऽभलयातकायवागुध्वष्टिका। नकाथास्यामाककाउवादातकलनयवमरुकाऽ॥ मसुताउकि। मध्वमहनि
 हानेकनगका। तिरिनीकुकला। लावाशा। मेडी। एषावरुका। मसुनिबन्नकवास्तुकविनीवनकमलुका। शातलुलीयकेजीर्वया। दाउमामलकेम
 ध्र। सेध्वं गवामाश्रं व पथमवर्णयमरुमी। व्यायामाध्वदिवास्वायनिवागा। सुजलनगथा। आययराजनजीर्ण। वगमनीवविधनला। वध्वचय
 महिसावसाहसानाऽवर्जनं॥ अनादभगुनीपिषपिषददगुलमयशा। ययसा। यगुलीमांसं मांसाददगुलीघर्त॥ घनाददगुलीनेलं मदनान
 उराजनाना। वलीदलेनमुकलनभके। मांसं मसुतामांसकनीनसाके। विन्धाकजाम्बलवले। सुदमुवासेऽसमसे। ययथाविनाधि। यापिऽलालं
 वकतिरिनीउ। मध्वमसुतानवनेलकाधेगा। सिद्धाविनडा। यतथाकयातासुलेयदृष्टावि। ससर्वेषाकाथाउधूनदियसाले। लनवनाह। मध्वमांसं

सन्यातिविकृतिमध्वसुलकन। नर्वे। नउल्यमपिउल्यधतंघर्तवर्चकादभाहमस्येगयतथाघर्तग्य॥ घर्तवानाऽकृत्तक। असुमयऽकृत्तकाऽ॥
 वलकालदिनामयेऽसुताकभनयायसे। मस्याउयादका। नविकारनेतिहुजेसुथा। सोवनेसिलगकल्यऽकाकमावीगुठनवा। अतिस्त्रिध्वनिनूरादी
 नवर्जयदानमवानरगा। याधिमिहियशोर्वैल्यं मन्नीयानियकणि। विनद्धनसवीया। विगुजाना। नामनामनरगा। यर्किविद्वाषयकेऽस्याहुकेकाया
 नेतिहेत॥ नसादिषयथार्थत्वाततद्विकारायकल्यत॥ विनद्धाभनजाभोगमनयगिहकिविनवनं॥ वमनंभमनयाधियव्वन्वाहितराजं। सात्यगा
 ह्यतयावापिदीका। असुनूहास्यवमिध्वया। यामवनिनीविनद्धिवितर्थावत॥ सुसंमांसं। सियावद्वावालाकृत्तनूदीदधि। यतागमेधर्तनिडा।
 सद्यस्याहाहनातिषडा। मोगात्राधवलेगुसा। मोरवानिलमूदता॥ अलस्यायेकिनिषवमलरुदावधिकुमा॥ लिगमलानामामानानिनीः
 मात्स्यवियर्ययगाउयो। लस। लवलेनधधुमाधमयावितो॥ इधुमामाभयगर्तनसमांसयवकता। आमनगुठसंयकदायाइयाध्वद
 विन॥ आमऽस्ययदिस्यनयवनागसुइहवाशा। कायऽसामाविवध्वमसादसुदानकृजने॥ वदना। मध्वनिस्मादेऽकमसामानिपीउ

यत्। वित्तमयं वदन्ति गृह्णाति कृषिणा रुग्णः। भक्षयेद्वैदिमायाति सूर्यमाधादयनिमि। निराभविषदरुक्ता निर्विवन्धल्यवदनः॥ वियनीगु
लोऽशक्ति सिंघेयाति विष्णुमशः॥ दुर्गन्धदतिर्गन्धर्वं वीतमसूक्तिनगुनं। अस्त्रिका कल्लददं कनमाम विनिदितात॥ आनासुपीतमल
वृत्तसकदकस्तिनी। यद्यविगन्धविह्वयं न विमग्नित्वयुदं॥ अविस्तसुसुलुः स्थानः कल्लदः॥ वेतिरुति॥ आभावलासुगन्धरुत्सरावः
विद्यानकः॥ रुक्तावानुयितुः॥ युनिः॥ सातागन्धनवेव। यद्यः॥ सेवयुविह्वयः॥ स्वेदवानवकुसुदिकुन॥ यदनिक ककदसु सारातेककः॥ ५५
मृदकाः॥ कसायश्च कसायश्च कुमाडयानुयुग्यं॥ आमष्ययमानस्य यद्येष्वनिलादिय॥ यावनं वाकसमरुतं मनेस्वयथक्रमं।
॥ रुक्ताजीतानुयुग्यं॥ यथाथविषदगन्धः॥ वियनीगुलोऽयं स्मानुतः॥ सेयुग्यम्यति॥ सहस्रमेषुगीरुत्स दधिमसूतनकः॥ वियनीगु
लोऽयिरुडयोनागुयुग्यम्यति॥ गुन्नीतमृदसिंघेयमधुनस्तिनयिकिलः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥
का सर्वेनामादुवायतः॥ अतस्तु दहितार्थं नार्थयथानिषवने॥ रुक्ताजीतानुयुग्यं॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥

नमुसस्तुतः॥ नकालः॥ सवुसूकः॥ अर्द्धरात्रिः॥ यिगुजानः॥ यत्रमार्थं गुवुक्तिः॥ रुक्ताजीतानुयुग्यं॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥
लस्यमं संरुद्रावलिनामनी। यद्यः॥ रुक्ताजीतानुयुग्यं॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥
युक्ताति॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥
सालिनी। युकागन्धनिषवतमेथुनं गिलितागम। गिलितसर्वमेव निवातायुगुदः॥ वसन्तनिविह्वयः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥
कायाप्रिवाधतं रागसुगुक्तरुवदुन॥ तस्मादुसूक्तकम्मोदि वमनादीनिकानयेत्॥ गुर्वेसुसिंघमधुनदिवास्त्रयं ववदुयत्॥ या
याभादुर्देनधुम कवुगुहमंजनी। सुखासुनासो वविधिः॥ सीलयं कसूमीगम॥ वंदनायुगुदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥ अस्त्रिका कल्लदः॥
गुहनिडा। निजिर्वंदासूगीतः॥ अजनेऽयाति सस्यने वंदनादुकागीतः॥ काननानिवगानानि कसूमानिजलानिवगानानि कसूमानिजलानिवगानानि
निसवतमेथुनादितगाननः॥ आदानदुर्वंदादुकागीतः॥ अजनेऽयाति सस्यने वंदनादुकागीतः॥ काननानिवगानानि कसूमानिजलानिवगानानि कसूमानिजलानिवगानानि

त्याकादम्राजलस्यववा। ववास्वनिवलुहीन कयानि यवना दयशा। तस्मात्साधनतसर्वाति विधिर्वर्षासुसंश्रुता॥ अग्निसंनक्तितासंवा
 यव। गंधमग्नलयशा। यनाताजाहले मासे याक्रायुषे श्वसे सुते॥ रुवायायनिता नार्थस्यौतववदायसि। उदमनंदिस्त्रयमवसा
 यनदीजली॥ वायामसातय। ज्वेव वावायं वाववर्जयत॥ वषासुसंवितीपिलं ताया करदिकयति॥ तदत्रयानमधनं लघुग्रीनं सति
 को॥ पिलुपुगमसंथोसे नववर्नकोमा रुहीने रुवसकथो मरु। गनाहृकाधितययशा। सनयतानियथा। निषदाधवतुन समयशा यथ
 कयानेयनेनोर्न सामिषययसानिवा। दनकद नमसु ३ ससं सकुष्वर्जयत॥ वसाने तमवसाय भादकानूयसामिषं॥ कारनदधिदिवास्त्रयं ४२
 योग्यातग्यावर्जयत॥ नसासुद्वांसमदोहि मरु ३ कोलेधवत॥ वातपिलं के हादाया विभ्रगायामुतामगा॥ क रुयिलोनि लायव
 मध्यान्कसूयवस्तिताशादहाहीनागवयस ३ सन्धिषयिकदानिसो कषात्रकाल्यक ३ ग्य वलविलानवस्तिता॥ वद्वामग ३ श्व वातयक
 निकाननशात्रकालपनिर्तलोने श्वेदीका वनायुधश्वेदीफिवातयही पिलुसकृतिकानन॥ स्तिनविलु ३ सवडा ३ ससज ३ सिग्धयुधेग ३ स्त्रयुज

तसितालाकी ॥ श्वप्रयकृतिकानन॥ सिमिथलरुलेरुया द्विदिदायावेधानरा॥ वद्वकनगनय ३ करुमात्रनागवान् जागनाली कषादीर्नकयिलुः
 गदाहृन॥ सीस्यलक्ष (१) दगासाधन (१) मग ३ समा ३ साधन (१) यस्माकीतव (१) वमान ३ समभा ३ वेदायावेतस्मात्साधन (१) वनशाहीनकि
 कषायादीर्न ददगाहुलमायर्न॥ दनकाश्चनिषवत मुखेनामयुग्नकथो॥ नवद्वनस्य (१) मयादोनसर्वदनुनागिनी॥ यनियद्वे ३ यषीषू नवम्यावेव
 रातता। दनानाकायसंथागददयासुकर्मकली॥ यणस्यादकलादीनी तनुदकस्यद्यर्षी॥ जिहानिलेखनाडाग मरुताननवनिदोनिर्गदनिर्म
 लेखरुलेवत्ये ३ नयागत॥ यनिमर्षरुगादय ३ उर्द्वेजगुगदायद॥ मरुसद्वि ३ यगमदि कयनसमनाहले॥ अर्यगत्सादनमान गन्धमाल्याः
 दिरुषली॥ पादइले ३ विवनत सर्वदेवयधमसर्व॥ सातुद्यानसिन ३ यादनेलनित्या थधूमयशा॥ यरुतार्क निषवत ३ ० नन रुगासनी॥ स्वामिर्न
 सर्वरावनयन लाकसुमायया। उंशवास्त्रक ३ कन रुकीसलवलीयिवत॥ नयानादगेनार्थय दयावेद्येदनीतकी ३ शिषादुल्यगुदायिलु ३ मनीवर्ष
 शिदासेधवे ३ उल्या ३ कनयागनमरु ना ३ उंथादिमाले ३ रुद। पिय्यास्यानिग्ननिदुनियवने ३ रीद्वसर्न क रूनाजनरुं द्वाहनीतकी ३ जयनडा नर्थ

उक्तं गणवः ॥ इतीह कीर्तयन् राजन नस्य तु नत गदा । न वे गान्धन यन्निडा वातविन्मय नयनसो हम् । वाष्प कृपाज्ञान स्वासहस्रावमीह ध्वशवाः
 त्रिविधायज्ञायने तन्मार्गस्मान्जागदा । का योर्वेगम ह्यथस्मान्मितावाक्कायकर्म ॥ नयादयदिलिया निनयतितालयत ॥ अनयायात्युनियदस
 र्वधर्मेषु न्युता ॥ सवद्विषया कालम क्कालयनदंस्वमी ॥ नातिजागनत्तनिर्दा सर्वरुतदिनसिती ॥ दवग्नवाक्कालावयो गुनवेडा सदा चैयत ॥ वरुष
 थनमस्मत्ता दातायसायियम्वदोशा कुद्वानामननेताव दीनानामनस्यकश ॥ आस्वसकनरीतानामन्ववक्वदहिनी ॥ नागद्वेयनिदानानां रु
 क्ताधर्मेषु नायता ॥ नित्यदितादानविदानसवी समीक्षका निविषयस्य सकृशदाता समः सत्ययनेरुमावा नासायसवी वरवत्यनागशा निरःस ॥ ५३
 यथैव नलोसूर्यजिहोवर्तागना सवेनमत्येताडनी ॥ अन्नग्रभायीत्वमवमेधुने विन्युनस्यजियमानयान्निषट ॥ यहायेनाधिनावायान्नवनपनितापि
 यता ॥ अहिनासगर्तकार्यो कार्योवेतस्यनित्यतः ॥ ॥ नित्यसकृदलाधिकारः ॥ वेद्यायाध्ययस्यस्यरेषर्जयनिवातकः ॥ गतादविकिसायाः कर्म
 साधनरुतवशातत्वाधिगतं गमात् ॥ धर्मस्यैव कर्तुं ॥ लघुरुसः ॥ ३३ ॥ वि० ग्लः ॥ सहायत्वनरुषर्ज ॥ यत्यन्यन्नमतिर्ज्ञेमान् ॥ यवसायी विसानदध

सत्यधर्मपरायण्य सतिषकयादउद्यत ॥ आयस्मान सत्यवानसाधोदयवानामवानफिउद्यतयाधिनयादा वेद्यवाक्कदासिकी ॥ यससुदिवसैरु
 तयससुदुतिवाङ्गी ॥ अत्यमोमहावीर्यगन्धर्वनसाचिरी ॥ दाषघ्ननमानिकनमविका निविषयय ॥ समीक्षकालदहंवे रुषर्जयादउद्यता ॥ सिद्ध
 र्गुणपूर्वतवानयकायाधितनरु ॥ वेद्यवाक्कृतः ॥ साकः ॥ यदः ॥ यनिवनः ॥ स्मृतः ॥ स्वदेननिवनादायाअन्यसिन्धोयमागता ॥ बलवन्तगथानस्यर्जलगा
 वास्कुलादुताः ॥ उविनवरुमानस्य नास्तिदगः ॥ कृतमृयी ॥ आहानस्वयुर्वेद्योतद्वेगस्यगुलसति ॥ विकाराल्यमरुत्कर्म क्रियालघीमरुगद ॥ द्वयमेतद
 को गत्यको गत्यवक्रियावताक्रियायासुगुलालां क्रियामन्याययाजयत ॥ पूर्वस्यासानवगमयात्रक्रिया गंकनामतः ॥ गुलाला रायिकरुया विभुमान
 निताक्रिया ॥ सेवसवान्यथागस्मा न्यवेवसकनारुय ॥ यद्वि० कविदहानां ॥ कविस्फलिभवव ॥ ॥ कन्निमृतयः ॥ याया नसस्यपनिवरुने ॥ यनिवल्यानसस्य
 र्गमन्नावगक्रियारवत ॥ ॥ ३४ ॥ साहसिकारी न कनध्यात्यगववा सवेद्यान्यतिद्विष्टातद्विष्ट ॥ कपीतिनः ॥ याद्विकीयसर्वग्रविहीनः ॥ कत
 लोः ॥ स्वयी ॥ वेनीवेद्यविदग्धे ॥ धडाहीनः ॥ स्वसकिनः ॥ रिषजामरिद्येयाग्य नायकम्यारिषग्विदा ॥ गतानूपावनवेद्या वदूः ॥ दाषानवायुयात ॥ ॥
 मयदकास्तिस्ति कृ० व० युक्ता रको । नागः ॥ ओं ह्रीं श्रीं ॥ नित्यं ॥

७ तथाऽस्या सम्यक्कम्या ननाऽसर्वत्रयकमे॥ विकित्तिननानाया यानकी क्षाति इमिनि॥ सयत्कनागिसकानं गइलं हियग सून॥ नेवकधीतलो
 तविकित्सायधविकय॥ ॐ ॥ धना क्षावसुमतां लिप्ताथनुवृत्तये॥ ॥ गुंजालिऽसकहिर्वाष॥ ॥ क्षाक्षमाववुष्टय॥ ॥ क्षालोदोवटक॥ कालसो
 दोकवडइम्वन॥ अक्षयाक्षितलक्ष्यसुवर्ल॥ कवठयद॥ यिवृद्धिगलेयदक सुकि॥ याक्षितलुदय॥ तद्वयनयलमूदि सकवविल्वमयत॥ द्वयलेयसुगवि
 यारुद्वयकठवजलिभूमानिकायलं नद्वत्यसुगस्मा चतुगु॥ ॥ आदककंसयार्णव वतुहि॥ दोलकीसुग॥ तन्ययोयात घटात्मान नलक्ष्मिस्तस्यका
 भाउलायल भर्तागिर्वि॥ क्षाक्षानडयता॥ सूकडयामिदं माक्ष द्विगुलं गुडवाद्यथा॥ क्षाक्षयकठवाद्यनुयस्मादिसुनिमानेत॥ द्विगुलेत्रुलामान ॐ निमा
 नविदाविइ॥ ॥ क्षालीडाक्षारकयसु॥ कठवचयलीविर्व॥ ॥ क्षाक्षमाववुष्टय॥ ॥ सयत्कयथागसर्वेषां सिद्धिनाख्यातिकर्मक्षी॥ सि
 धिनाख्यातिसर्वेषु युगयूकं शिषकक्षार्ण॥ ॥ ॐ निविविधमूनीनां वाक्क्षमा लोक्क्षयना स्वमनियनिमित्तवैर्यागिसहि॥ यथा॥ ॥ यथि ॥ न ॐ ह्मयासंयक्ष
 वृत्तेनामा सपदिसहिलिखि स्वासिद्धयाग॥ समाया॥ ॥ ॐ निवृत्तनामसंयक्ष॥ ॥ सम्वन ॥ ॥ योषकु दक्षमी लुधूला मयैद्यै लिखित॥ ॥ ३॥



31174

1.609

ASHA ABU